गुरुमाँ

सचित्र जीवन कथा

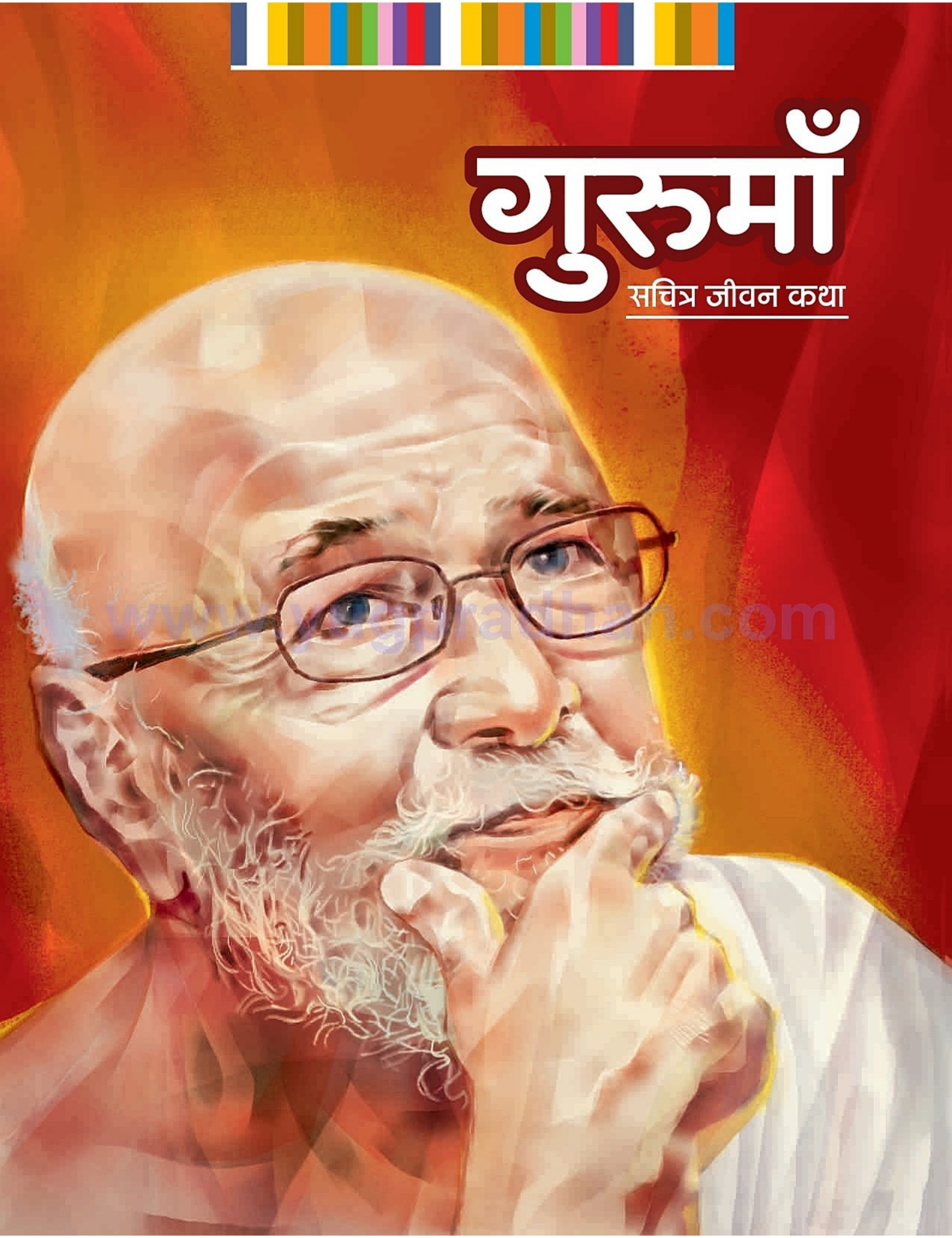

www.yogpradhan.com

एक बार पढ़ें फिर आगे बढ़ें...

युगप्रधान आचार्यसम गुरुदेव पूज्यपाद पंन्यास प्रवर
श्री चन्द्रशेखर विजय जी म. सा. का जीवन यानि आदर्शों का खजाना

पूज्यपादश्री के जीवन के आदर्शों की झलकियाँ

गृहस्थ पर्याय : छोटी वय में और भारी बुखार में भी भगवान की पूजा का आग्रह, घास के भी जीवों को बचाने का अनमोल परिणाम, भगवान की आज्ञा को सूचित करते तिलक को रखने के लिए बड़े भाई के साथ बहस, रात्रि भोजन त्याग के लिए शेर जैसे ताऊजी का सामना करने का अडग सत्त्व, आलू की छोटीसी चिप्स गलती से खाने के कारण पूरी रात पाप भय से रुदन, छोटी वय में और इतनी सम्पत्ति के बीच में भी संसार के प्रति वैराग्य और गरीबों के प्रति दयालुता।

साधु पर्याय : साधनाकाल में बेजोड़ गुरु-बहुमान भाव, अद्वितीय गुरु-भक्ति, श्रेष्ठ संयमचर्या, अजोड़ स्वाध्याय।

प्रभावक काल : युवा-वर्ग का परिवर्तन हो या बालकों का संस्करण हो, युवतियों की शिविरे हो या साधु-साध्वी जी भगवंत की वाचनाएँ हों, साधर्मिक सहायता हो या अबोल पशुओं की रक्षा हो, अन्न क्षेत्र की प्रेरणा हो या सरकार के सामने विरोध का वावंटोल फैलाना हो । पुस्तकें लिखकर विचार आंदोलन जगाना हो या हजारों की सभा में व्याख्यान देकर अनेकों का जीवन परिवर्तन कराना हो। पूज्यपाद गुरुदेवश्री सब में अग्रस्थान पर थे। सबके अव्वल आदर्श थे।

पूज्यपादश्री के आदर्शों से सबके जीवन में उजाला आए यह भावना से समग्र जीवन कवन के रूप में गुरुमाँ स्मृतिग्रन्थ (गुजराती और हिन्दी आवृत्ति) प्रकाशित हुआ।

अब बच्चों तक भी पूज्यपादश्री के आदर्श प्रसंग पहुँचें, इस लक्ष्य से चुने हुए प्रसंग की सचित्र पुस्तक बनाने का भाव हुआ । पूज्यपाद गुरुदेवश्री की ही दिव्यकृपा से यह भाव की फलश्रुति आपके हाथों में है।

आशा है कि आप यह पढ़कर अपने जीवन में भी उजाला लायें, अनेकों के हाथों तक पहुँचाएँ। इस पुस्तक को साज-सज्जा के साथ सुन्दर, ज्ञानोपयोगी और भावपूर्ण बनाने में श्री संजय जी सुराणा और उनके साथियों के सबल पुरुषार्थ को कभी नहीं भूल पाऊँगा।

लि. : आ. वि. जिनसुन्दर सूरि.,
आ. वि. हंसकीर्ति सूरि.

जय गुरुमा ! जय जय गुरुमा !

www.yugpradhan.com

पूज्यपाद गुरुदेवश्री ने अपने जीवन में 300 पुस्तकें लिखी हैं, यह सब पुस्तकें पढ़नी हैं
तो **yugpradhan.com** खोलिए
Join page at Facebook www.facebook.com/theyugpradhan

मंगल आशीष : गच्छाधिपति प. पू. आचार्यदेव श्री जयघोष सूरीश्वरजी म. साहेब

लेखक-संपादक : आचार्य विजय जिनसुन्दर सूरिजी, आचार्य विजय हंसकीर्ति सूरिजी

सह-संपादक : संजय सुराना

प्रकाशक : कमल प्रकाशन ट्रस्ट चित्रकार : सत्य प्रकाश तिवारी

प्रकाशन : वि.सं. 2074, ई.स. 2018, श्रावण सुद-10 (पूज्यपादश्री की सातवीं पुण्यतिथि)

मूल्य : ₹ 200/- प्रथम आवृत्ति 5,000 द्वितीय आवृत्ति 4,000

प्राप्ति-स्थान : कमल प्रकाशन ट्रस्ट
A/203, चंदनबाला कॉम्पकेक्ष, भट्ठा, पालडी, अहमदाबाद-7. Mob. : 9909554642

सूरत	मुम्बई	नवसारी	बैंगलोर
समकीत-9374718345	नटु भाई-9322264388	शैलेष-9328429615	रजनी भाई-8041140142
कार्तिक-9033204218	विपुल दोशी-9322431255	प्रतिक-9725308040	विक्रम भाई-9986985995

मुद्रण : अजय ओफसेट
सी-12, बंसीधर एस्टेट, बारडोलपुरा, अहमदाबाद-380016. मो. : 98254 77745
E-mail : ajayoffset1999@gmail.com

गुरुमाँ

युगप्रधान आचार्यसम पंन्यास प्रवर श्री चन्द्रशेखर विजयजी म. सा. का सचित्र जीवन चरित्र

वि.सं. 1990, मुम्बई (अंधेरी-ईर्ला)

मध्याह्न वेला में 1 बजकर 14 मिनट के मंगल मुहूर्त्त पर देव-गुरु-धर्म के परम भक्त कान्तिलाल प्रतापशी के संस्कारी एवं धर्म सम्पन्न परिवार में माता सुभद्राबेन की कोख से एक दिव्य आत्मा अपनी अधूरी आत्म-साधना पूर्ण करने के लिए धरती पर अवतरित हुई।

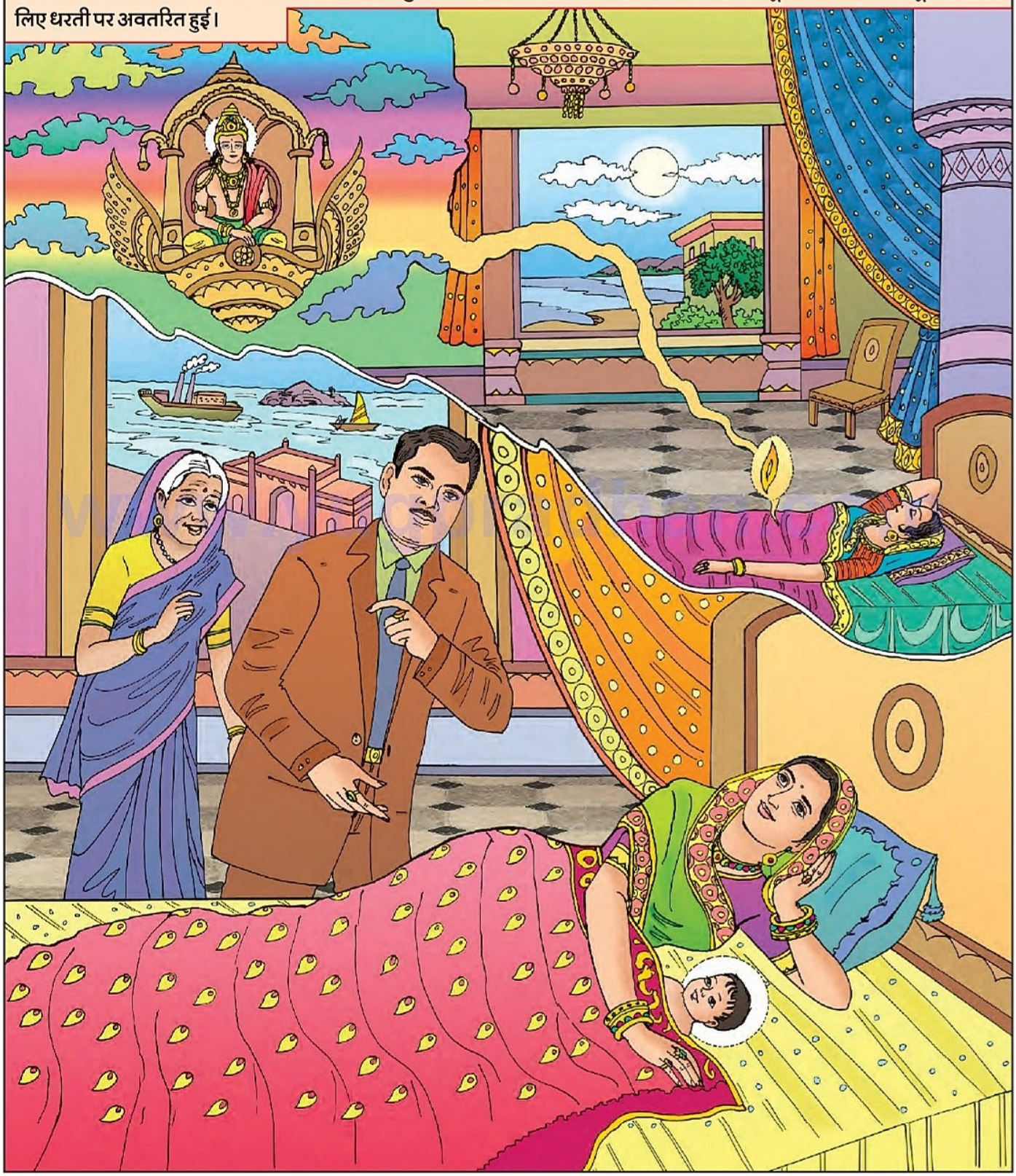

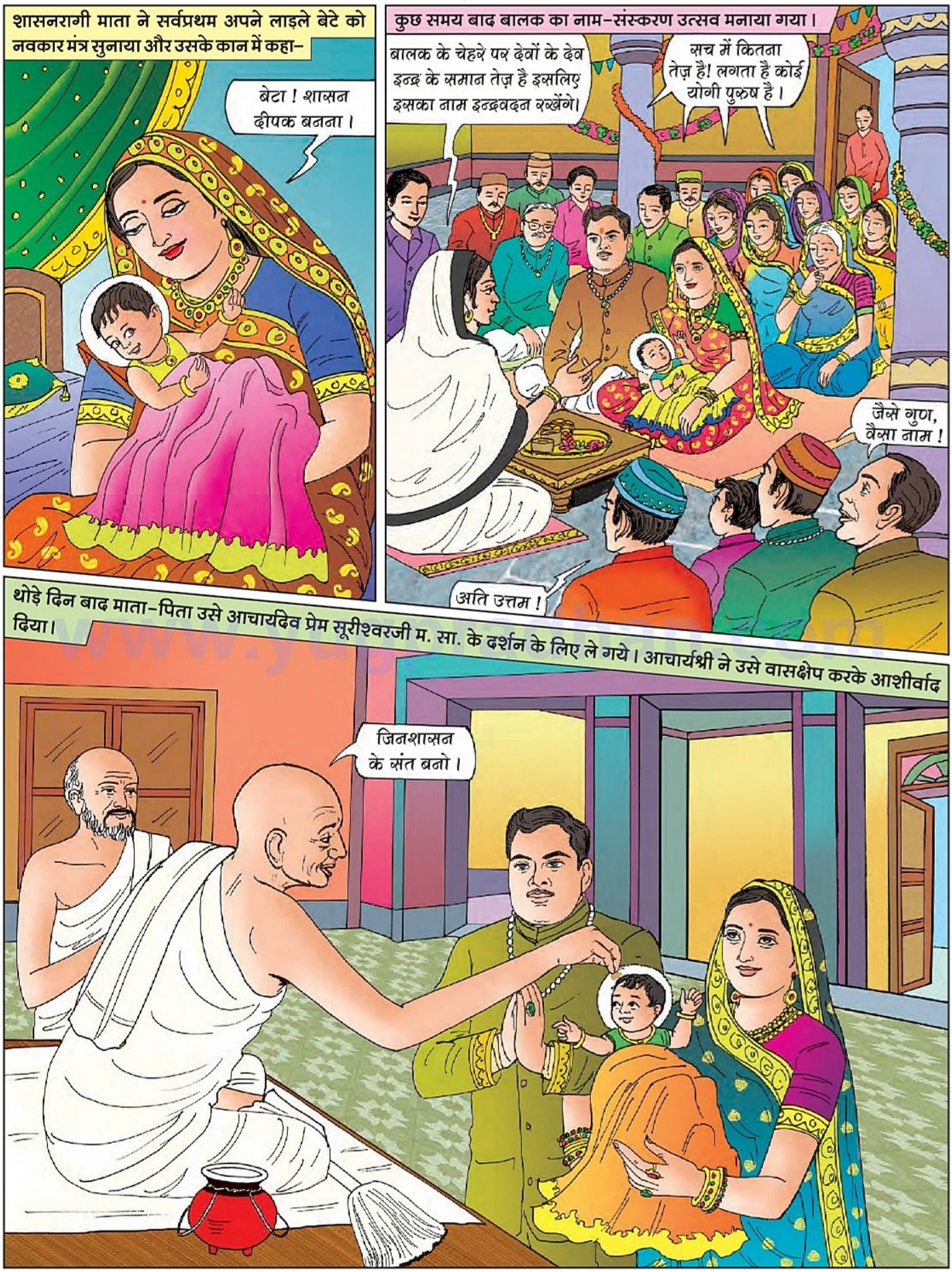
शासनरागी माता ने सर्वप्रथम अपने लाड़ले बेटे को नवकार मंत्र सुनाया और उसके कान में कहा–
बेटा ! शासन दीपक बनना ।
कुछ समय बाद बालक का नाम–संस्करण उत्सव मनाया गया ।
बालक के चेहरे पर देवों के देव इन्द्र के समान तेज़ है इसलिए इसका नाम इन्द्रवदन रखेंगे।
सच में कितना तेज़ है! लगता है कोई योगी पुरुष है ।
जैसे गुण, वैसा नाम !
अति उत्तम !
थोड़े दिन बाद माता–पिता उसे आचार्यदेव प्रेम सूरीश्वरजी म. सा. के दर्शन के लिए ले गये । आचार्यश्री ने उसे वासक्षेप करके आशीर्वाद दिया।
जिनशासन के संत बनो ।

इन्द्रवदन लगभग तीन वर्ष का हुआ। उस समय आचार्य श्री प्रेमसूरीश्वरजी अंधेरी उपाश्रय में पधारे। एक बार दोपहर के समय वे पिताजी कान्तिभाई की हवेली के गृहमन्दिर में दर्शनार्थ आये। जैसे ही वह वापस जाने लगे इन्द्रवदन ने उनका हाथ पकड़ लिया और बहन मंजुला बगल में चलने लगी। यह देखकर आचार्यश्री मुस्कुराकर बोले–

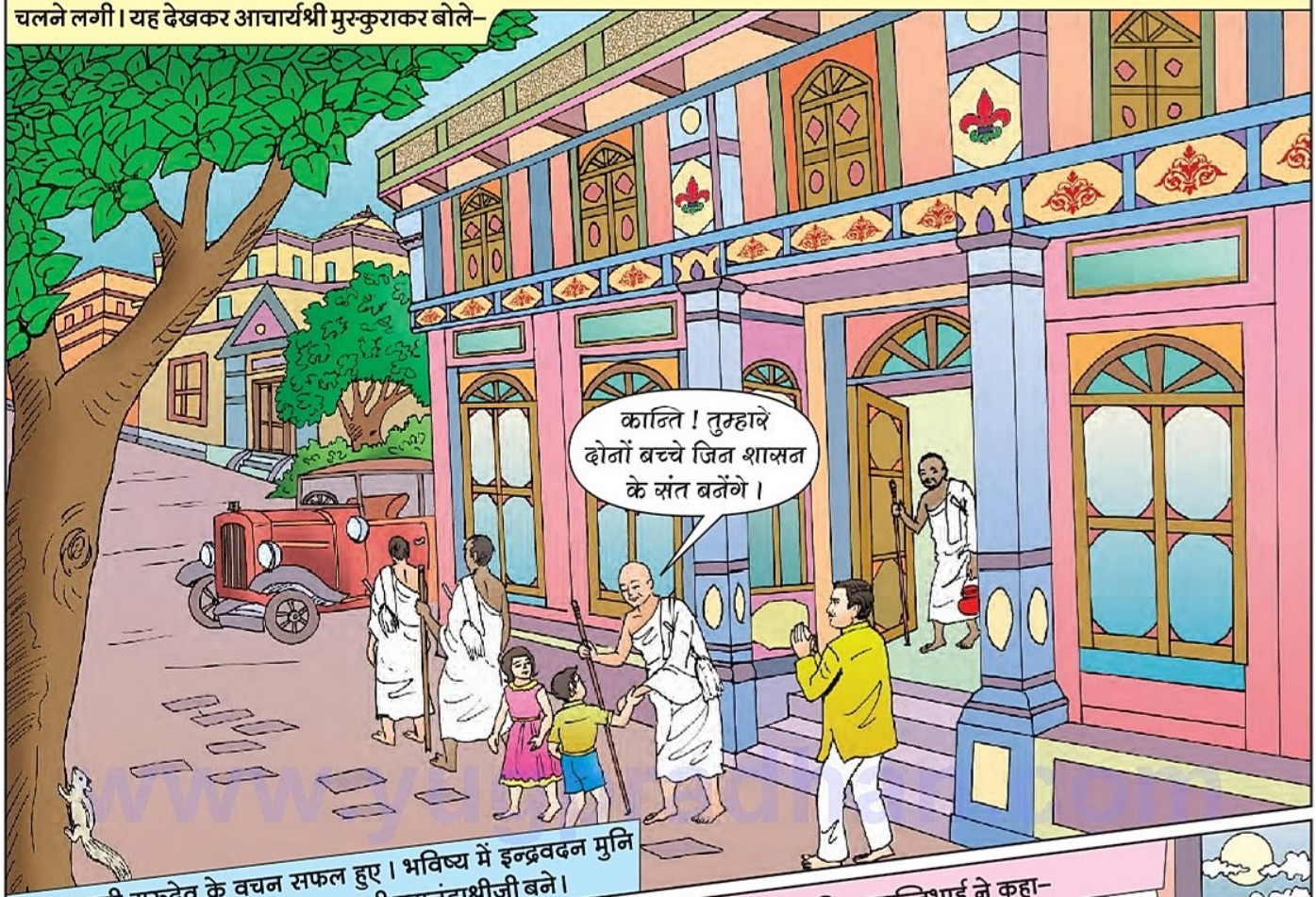

सिद्ध वचनी गुरुदेव के वचन सफल हुए। भविष्य में इन्द्रवदन मुनि चन्द्रशेखर विजय और बहन मंजुला साध्वी महानंदाश्रीजी बने।

जीवदया प्रेमी समय के साथ आगे बढ़ते हुए इन्द्रवदन सात वर्ष का हो गया। एक बार सारा परिवार तीर्थ यात्रा पर गया हुआ था। रात्रि के समय अचानक इन्द्रवदन माँ के पास आया और बोला–

यह सुनकर पिता कान्तिभाई ने कहा–

थोड़ी ही देर में कान की पीड़ा और बढ़ गई। कान्तिभाई ने इन्द्रवदन को जबरन तेल डालने को कहा तो वह भागने लगा–
नहीं, नहीं ! मैं जीव हिंसा नहीं करना चाहता।
काफी भागदौड़ के बाद पकड़कर इन्द्रवदन के कान में तेल डाल दिया गया–
ओह ! मेरे कारण इस जीव की हिंसा हो गई। कितना पाप किया मैंने।
ऐसी थी इन्द्रवदन की जीवरक्षा की पवित्र भावना।
प्रभुभक्ति
जब इन्द्रवदन बारह वर्ष का हुआ तो एक रात्रि उसको बुखार आया। डॉक्टर ने सुबह दवाई दी और दूध के साथ दवाई लेने की हिमायत की। डॉक्टर के जाने के बाद माता दूध के साथ दवाई लेकर आई।
बेटा इन्दु ! ले दूध के साथ दवाई ले ले।
नहीं माँ ! मैं भगवान की पूजा किये बिना नवकारशी का पच्चक्खाण नहीं पारूँगा।
माता ने तड़फकर कहा–
पर बेटा ! तुझे 103 डिग्री बुखार है। करवट लेने की भी शक्ति नहीं है तो तू पूजा कैसे करेगा ?
माँ ! मैं भगवान की पूजा किये बिना दवाई नहीं लूँगा, नहीं लूँगा, नहीं... ही लूँगा।
इतने बुखार में भी प्रभुभक्त इन्द्रवदन ने अपना निर्णय सुना दिया।

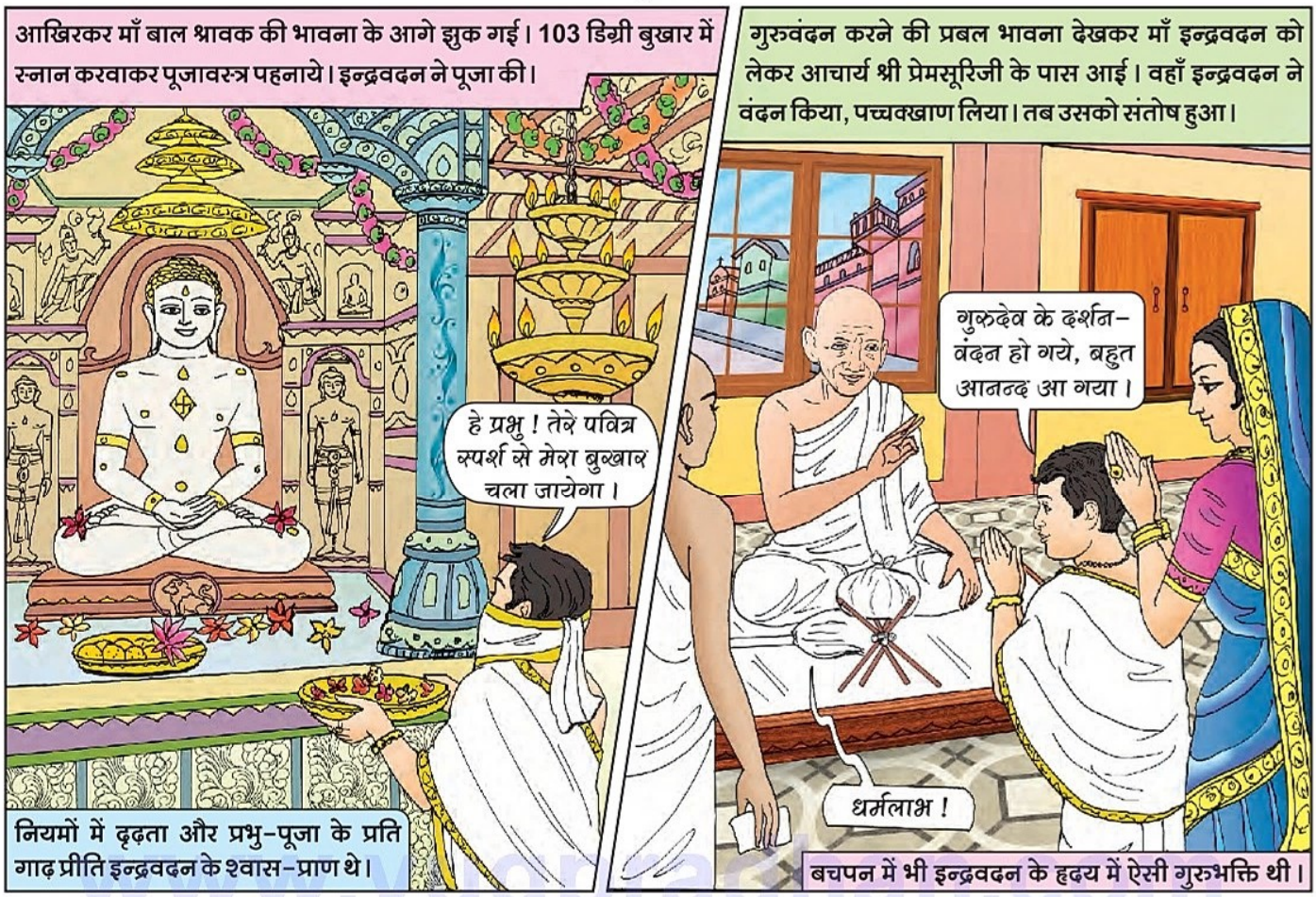

आचार चुस्त इन्द्रवदन एक बार जीवाभाई को मुम्बई के एक बड़े वैद्यराज ने बच्चों के देहगठन को सुदृढ करने वाली औषधि दी, जिसे रात में दूध में मिलाकर पीया जाता था। औषधि लेकर जीवाभाई सीधे घर पहुँचे और सब बच्चों को एकत्रित किया-

जिस समय यह घटना घटी उस समय इन्द्रवदन घर पर नहीं था। लौटने पर बच्चों ने उसे बताया तो वह दृढ़तापूर्वक बोला–
आप सब क्यों घबरा रहे हो ? चाहे जो भी हो जाये, हम रात्रि में दूध नहीं पीयेंगे। हमें धर्म के मार्ग से कोई नहीं डिगा सकता।
ठीक है ! हम भी रात्रि में दूध नहीं पीयेंगे। जो होगा, देखा जायेगा।
शेर की दहाड़ समान इन्द्रवदन की जोशीली जबान सुनकर सभी बच्चों को जोश आ गया।
रात को वापस लौटे जीवाभाई को मालूम हुआ कि किसी ने दूध नहीं पीया, तब उन्होंने सब बच्चों को बुलाकर डाँटते हुए कहा–
तुम लोगों ने दूध क्यों नहीं पीया ?
बापाजी ! हमें तो इन्द्रवदन ने समझाया कि रात्रि में दूध नहीं पीना।
बच्चों ने डरते-डरते कहा।
यह सुनकर गुस्से से उबलते हुए जीवाभाई ने इन्द्रवदन को बुलाया। इन्द्रवदन ने बड़ी ही विनम्रता के साथ जवाब दिया–
क्षमा कीजिए बापाजी ! नरक में ले जाने वाला यह रात्रि भोजन हम नहीं करेंगे।
शैशव था, पर शेर का। धर्म के मामले में भले ही सामने बापाजी हो, इन्द्रवदन निडर था।
यह सुनकर संतान मोह में फँसे जीवा भाई अपने आपे में नहीं रहे और इन्द्रवदन को एक चाँटा जड़ दिया और बोले–
चल, ज्यादा होशियारी मत दिखा और दूध पी ले।

तब इन्द्रवदन ने तुरन्त अपना दूसरा गाल भी आगे कर दिया और बोला–
बापाजी ! मेरा दूसरा गाल भी तैयार है। यदि मैं रात को दूध नहीं पीऊँगा तो तीन–चार तमाचों में ही सजा खत्म हो जायेगी परन्तु मैंने रात्रि में दूध पी लिया तो मुझे हजारों वर्ष तक नरक की यातना भुगतनी पड़ेगी।
इन्द्रवदन की धर्म निष्ठा और तर्क युक्त जवाब सुनकर जीवाभाई का संतान मोह ठंडा पड़ गया और उन्होंने इन्द्रवदन को गले लगा लिया। उनकी आँखों से पश्चाताप के अश्रु बहने लगे–
मुझे माफ कर दे बेटा ! आज के बाद मैं कभी भी किसी को रात्रि में कुछ भी खाने–पीने के लिए नहीं कहूँगा।
इस प्रकार धर्म के विरुद्ध चल रहे रावबहादुर जीवाभाई एक छोटे से बालक इन्द्रवदन की धर्म दृढ़ता के आगे परास्त हो गये।
पापभीरू इन्द्रवदन एक बार इन्द्रवदन स्कूल टीचर के घर अल्पाहार करने गया तब उसके खाने में भूल से आलू की कतरी आ गई। इन्द्रवदन को आलू का स्वाद मालूम नहीं था, इसलिए उसने वह अल्पाहार कर लिया।
घर आकर उसने माता को अपनी शंका बताई। माता ने पता करवाया तो चिवड़े में आलू की कतरी ही थी।
इन्द्रवदन को पता चला तो वह बहुत उद्विग्न हो गया–
ओह ! मैंने कंदमूल खाकर अनन्त जीवों की हिंसा कर दी। मैंने बहुत बड़ा पाप कर दिया। अब मेरा क्या होगा ?
गलती से कंदमूल भक्षण के कारण पापभीरू इन्द्रवदन के दिल में इतनी गहरी चोट लगी कि वो पूरी रात पश्चात्ताप से रोता रहा और पाप धोता रहा।

जीव हिंसा के प्रति जागरुक स्कूल में पी.टी. का पीरियड था। सभी बच्चे मैदान में खेल रहे थे। इन्द्रवदन को अनुपस्थित पाकर टीचर ने दो विद्यार्थियों को बुलाकर कहा–

लड़कों ने क्लास में पहुँचकर इन्द्रवदन को ढूँढ़ लिया और दोनों हाथों से उठाकर घास के मैदान में ले आये। घास का मैदान आते ही इन्द्रवदन ज़ोर-ज़ोर से चिल्लाने लगा–

जैसे ही लड़कों ने उसे घास पर खड़ा किया। पापभीरू इन्द्रवदन वहाँ से भाग खड़ा हुआ।

इन्द्रवदन ने खिड़की से देखा–

ऐसा सोचकर इन्द्रवदन सीट के नीचे छुप गया।

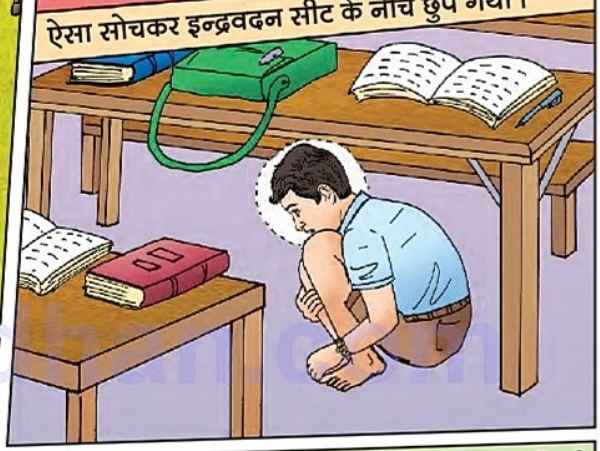

व्यवहार चुस्त इन्द्रवदन कक्षा में जब कोई शिक्षक किसी लड़की को उसके बगल में बैठा देते थे तो इन्द्रवदन स्पष्ट मना कर देता था। यदि जबरदस्ती बिठाते थे तो वह लड़की और अपने बीच में स्कूल बैंग और वॉटर बोतल रख देता था।

इतनी अल्पवय में भी इन्द्रवदन को लड़कियों से अरुचि थी।

विद्या गुरु बहुमान इन्द्रवदन को संस्कृत का अध्ययन कराने पं. ईश्वरचन्द्र घर पर आते। आर्थिक तंगी के कारण दिनभर अत्यधिक परिश्रम करके शाम को थके हुए पंडितजी पढ़ाने आते थे।

दूसरे दिन इन्द्रवदन ने पण्डितजी के लिए कमरे में आरामदेह बिछौना बिछवा दिया और मेवे वाला गर्म दूध और अल्पाहार की व्यवस्था कर दी। जब पंडितजी आये तो इन्द्रवदन ने विनयपूर्वक कहा–

भक्तिभाव पूर्वक किया गया आग्रह पंडितजी ने स्वीकार कर लिया। अल्पाहार करके थकेहारे पंडितजी गहरी नींद सो गये।

पंडितजी जब उठे तब उनके मन में उल्लास भरा हुआ था। आगे तो पूछना ही क्या ? ज्ञान का विस्फोट हुआ। एक के बाद एक पाठ पंडितजी पढ़ाते गये और इन्द्रवदन बहुमानपूर्वक ग्रहण करता गया। एक ही घंटे में तीन-चार दिन के पाठ पूरे होने लगे।

अब यह नियमित क्रम बन गया। नाश्ता, आराम और पाठ। कुछ ही दिन में इन्द्रवदन ने महिनों के पाठ सीख लिये। ऐसी थी विशिष्ट गुरुभक्ति बाल इन्द्रवदन की।

गरीबों पर करुणा भाव एक बार तेल के खाली डिब्बे और न्यूजपेपर की पस्ती (रद्दी) के लिए घर की नौकरानी ठेले वाले के साथ मोलभाव कर रही थी।

इन्द्रवदन ने खिड़की से देखा और ज़ोर से आवाज़ लगाई–

करुणाशील इन्द्रवदन हर बार ठेले वाले को फोगट में दिलवाता था।

जन्मदिन के अवसर पर इन्द्रवदन को जितने पैसे मिलते थे। वह उन पैसों को इकट्ठे करके गायों के लिए गुड़, नारियल और तोतों के लिए अमरूद व कबूतरों को अनाज खिलाता था। बचे हुए रुपये गरीबों को दे देता था।

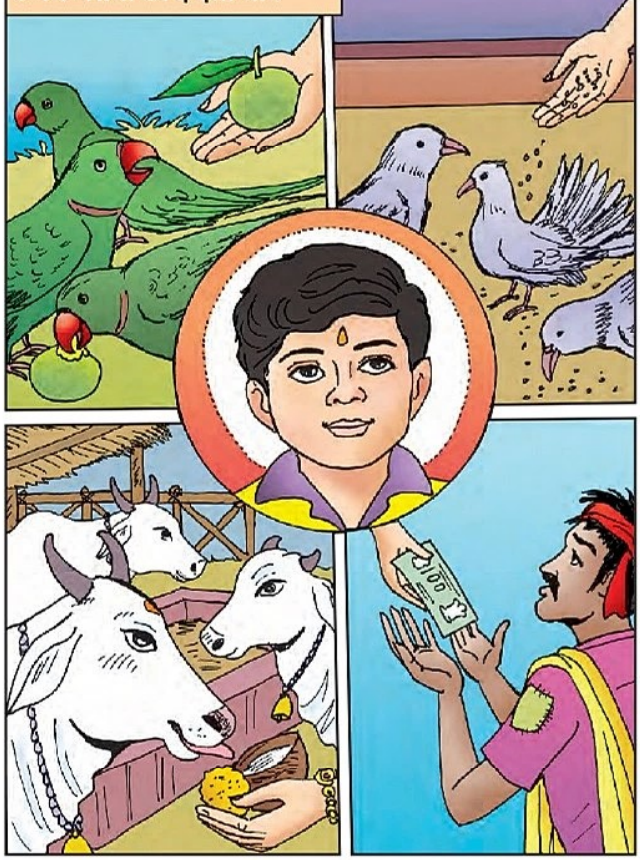

तिलक अमर रहे इन्द्रवदन जब स्कूल जाता था तो माथे पर बड़ा तिलक, हाथ में उबले हुए पानी की वाटर बैग और नंगे पैर जाता था। यह देखकर बड़ा भाई उसे टोकता रहता था।

बड़ा भाई कभी जबरन मिटाने का प्रयत्न करता फिर भी इन्द्रवदन अपने माथे के तिलक को कभी मिटने नहीं देता था।

वैराग्य भावना
पायधुनी में इन्द्रवदन के घर के नीचे धार्मिक पाठशाला चलती थी। वहाँ पंडित गोरधनदास बालकों को धार्मिक शिक्षा देते थे। इन्द्रवदन उनके पास प्रतिदिन जाते थे। वे इन्द्रवदन को संसार की असारता के विषय में बताते रहते थे।
इन्द्रवदन ! यह संसार दु:खों का मूल है। संयम मार्ग ही इन दु:खों से बचने का उपाय है।
पंडितजी की वैराग्यपरक बातें सुनकर इन्द्रवदन के मन में दीक्षा की भावना और बलवती हो गई। एक दिन उसने बापाजी से कहा–
बापाजी ! मैं दीक्षा लेना चाहता हूँ।
हूँ...! इतना कमजोर शरीर और तुम दीक्षा की बात करते हो ? पहले अपना शरीर ठीक करो। तुम्हारा वजन बढ़ जायेगा तब दीक्षा की बात करना।
अब इन्द्रवदन वजन बढ़ाने के लिये केसरिया दूध, फ्रूट ज्यूस लेने लगा और जॉगिंग आदि अभ्यास करने लगा।
वाह ! मैं तो 15 दिन में ही अपना वजन बढ़ा लूँगा।
एक महीने बाद वह वजन मापने गया –
ओह ! कितनी मेहनत की किन्तु फिर भी वजन नहीं बढ़ा।
अन्तर् की वैराग्य-अग्नि उसके शरीर को पुष्ट नहीं होने दे रही थी।

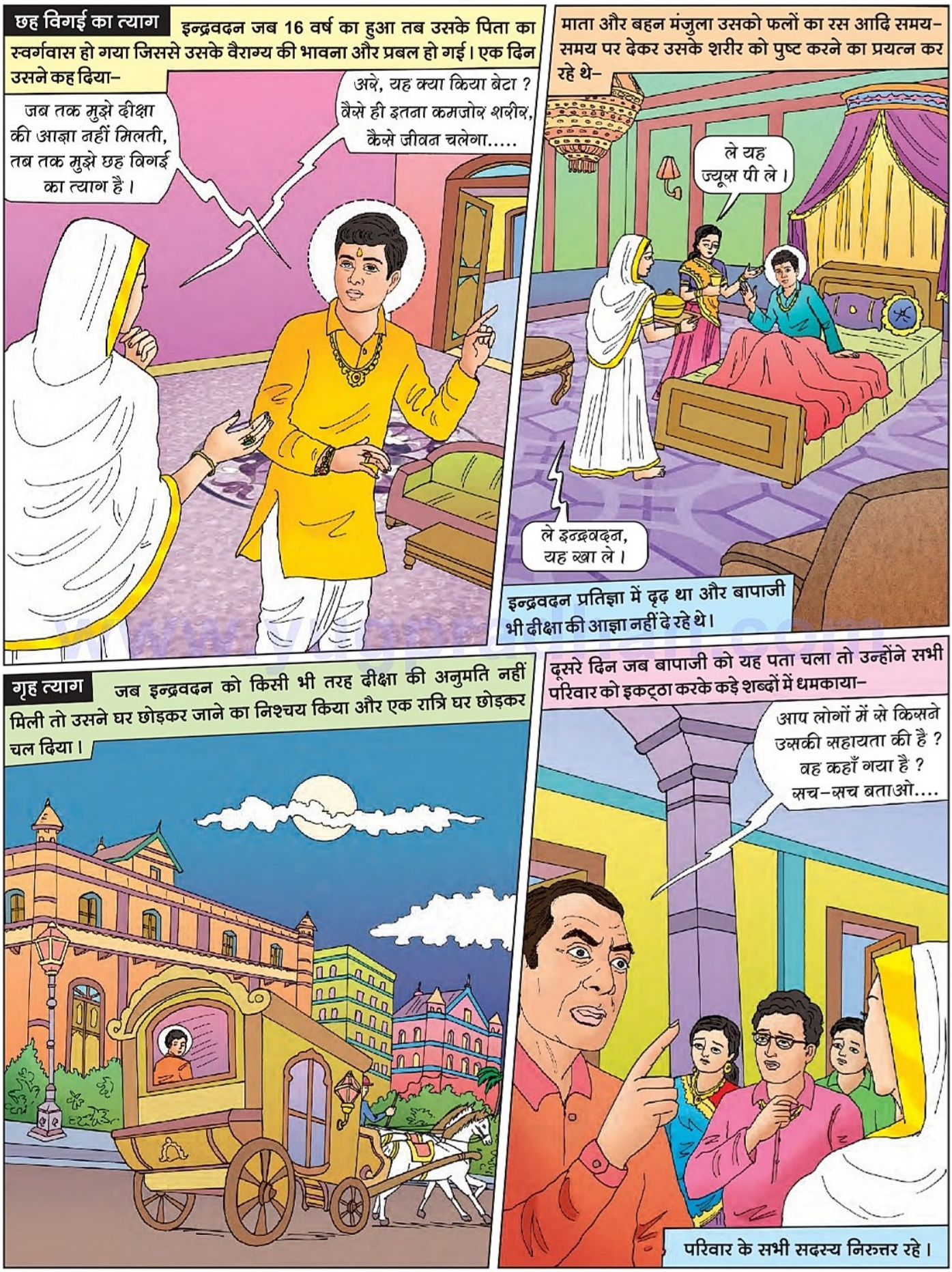
छह विगई का त्याग
इन्द्रवदन जब 16 वर्ष का हुआ तब उसके पिता का स्वर्गवास हो गया जिससे उसके वैराग्य की भावना और प्रबल हो गई। एक दिन उसने कह दिया–
जब तक मुझे दीक्षा की आज्ञा नहीं मिलती, तब तक मुझे छह विगई का त्याग है।
अरे, यह क्या किया बेटा ? वैसे ही इतना कमजोर शरीर, कैसे जीवन चलेगा.....
माता और बहन मंजुला उसको फलों का रस आदि समय-समय पर देकर उसके शरीर को पुष्ट करने का प्रयत्न कर रहे थे–
ले यह ज्यूस पी ले।
ले इन्द्रवदन, यह खा ले।
इन्द्रवदन प्रतिज्ञा में दृढ़ था और बापाजी भी दीक्षा की आज्ञा नहीं दे रहे थे।
गृह त्याग
जब इन्द्रवदन को किसी भी तरह दीक्षा की अनुमति नहीं मिली तो उसने घर छोड़कर जाने का निश्चय किया और एक रात्रि घर छोड़कर चल दिया।
दूसरे दिन जब बापाजी को यह पता चला तो उन्होंने सभी परिवार को इकट्ठा करके कड़े शब्दों में धमकाया–
आप लोगों में से किसने उसकी सहायता की है ? वह कहाँ गया है ? सच-सच बताओ....
परिवार के सभी सदस्य निरुत्तर रहे।

कुछ देर बाद इन्द्रवदन द्वारा लिखी हुई चिट्ठी बिस्तर के नीचे से मिली–
बापाजी ! आप जब तक मुझे दीक्षा की अनुमति प्रदान नहीं करेंगे, तब तक मैं घर वापस नहीं लौटूँगा। –इन्द्रवदन
चिट्ठी पढ़ते ही बापाजी अत्यन्त कुपित हो गये–
क्या समझता है इन्द्रवदन अपने आपको...?
काफी तलाश करने पर भी इन्द्रवदन का कोई पता नहीं चला।
इन्द्रवदन की प्रबल भावना देखकर पं. गोरधनदास जी ने उसे अपने मित्र बाबूभाई के पास सूरत भेज दिया था।
सूरत SURAT
दो दिन के बाद बाबूभाई ने सूरत से जीवाभाई को फोन करके कहा–
जीवाभाई ! आपका बेटा इन्द्रवदन मेरे पास सकुशल है।
क्या ? वह सूरत पहुँच गया ? उसे फौरन वापस भेज दो।
तब इन्द्रवदन ने फोन बाबूभाई के हाथ से ले लिया और बापाजी से कहा–
बापाजी ! यदि आप मेरी दीक्षा का मुहूर्त्त निकलवा देंगे तो मैं तुरन्त घर वापस लौट आऊँगा।

इन्द्रवदन की प्रबल भावना देखकर जीवाभाई ने दीक्षा की स्वीकृति दे दी और मुहूर्त्त निकाल कर इन्द्रवदन को सूचित किया। तब इन्द्रवदन घर आया।
बेटा इन्दु ! मेरे अन्तर् के आशीष हैं।
इन्दु ! तेरा संयम पथ निष्कंटक बने।
दीक्षार्थी अमर रहे ! मेरा भैया दीक्षा ले, वाह भई वाह !
जीवाभाई ने दीक्षा के मुहूर्त्त की विधिवत घोषणा की–
आनन्द हो, इन्द्रवदन की दीक्षा का मुहूर्त्त वैशाख वद 6 तय किया है।
शक्तिपात
दूसरे दिन इन्द्रवदन पूज्य आचार्य श्री प्रेमसूरिजी के पास वन्दन के लिए आया। गुरुदेव ने आशीर्वाद देकर कहा–
इन्दु ! मेरी इच्छा है कि तुम 350 गाथा का पक्खिसूत्र कल दिन भर में मुखपाठ कर लो।
इन्द्रवदन अपना सामर्थ्य जानता था। वह किसी भी हालत में एक दिन में 350 गाथाएँ याद नहीं कर सकता था इसलिए मौन रहा। गुरुदेव ने मौन को स्वीकृति समझा।
दूसरे दिन दोपहर के समय इन्द्रवदन गुरुदेव के पास वंदन करने पहुँचा तो गुरुदेव ने पूछा–
इन्द्रवदन ! कितनी गाथाएँ याद हो गईं ?
गुरुदेव ! अभी तो मैंने प्रारम्भ भी नहीं किया। क्योंकि यह मेरे लिए असंभव कार्य है। मैं दिनभर में एक गाथा भी मुश्किल से याद कर पाता हूँ।

मात्र छह घण्टों में ही इन्द्रवदन ने 400 गाथाएँ याद कर लीं। उसके ज्ञानावरणीय का क्षयोपशम तेज़ गति से बढ़ने लगा। इसी के फलस्वरूप आगे जाकर उन्होंने 300 पुस्तकों का लेखन किया, 20,000 से अधिक गाथाएँ मुखपाठ की।

वर्षीदान की बरसात दीक्षा की शुभ घड़ी नजदीक आने पर इन्द्रवदन की शोभायात्रा निकली। सोलह श्रृंगार में सजकर इन्द्रवदन शोभायमान बग्गी पर विराजित हुए। लोगों की भीड़ साथ चल रही थी। गाजे-बाजे के साथ हजारों लोग गा रहे थे-

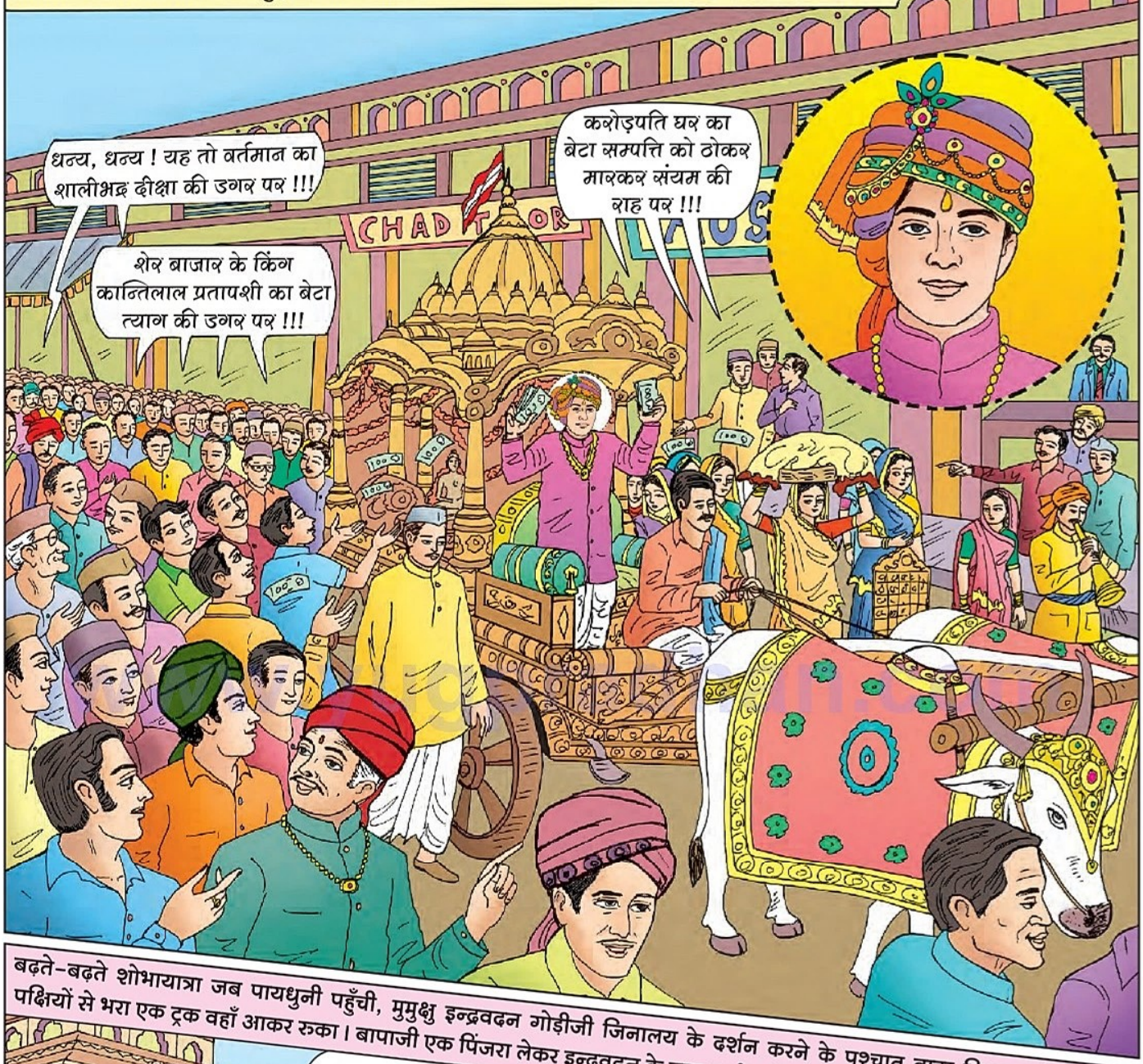

बढ़ते-बढ़ते शोभायात्रा जब पायधुनी पहुँची, मुमुक्षु इन्द्रवदन गोड़ीजी जिनालय के दर्शन करने के पश्चात् बाहर निकला तो अचानक पक्षियों से भरा एक ट्रक वहाँ आकर रुका। बापाजी एक पिंजरा लेकर इन्द्रवदन के पास आये और बोले-

यह सुनकर इन्द्रवदन की आँखों से अश्रुधारा बह निकली।

इसके बाद इन्द्रवदन एक के बाद एक पिंजरे खोलकर पक्षियों को मुक्त करने लगा। उसके हृदय में करुणा की अलौकिक तरंगें उठ रही थीं। मन ही मन उसका चिंतन चल रहा था–

इसके बाद शोभायात्रा वहाँ से आगे बढ़ी और भायखला के मोतीशाह के जिनालय में जाकर पूर्ण हुई।

मंगलकारी दीक्षा विधि

आज मोतीशाह जिनालय का परिसर खचाखच भरा हुआ था। एक तरफ दीक्षार्थी के परिवार वाले बैठे हुए थे। मधुर वैराग्यमय संगीत से वातावरण गुंजायमान हो रहा था। आचार्य श्री प्रेमसूरिजी म. सा. ने मंगलकारी दीक्षा विधि को प्रारम्भ किया।

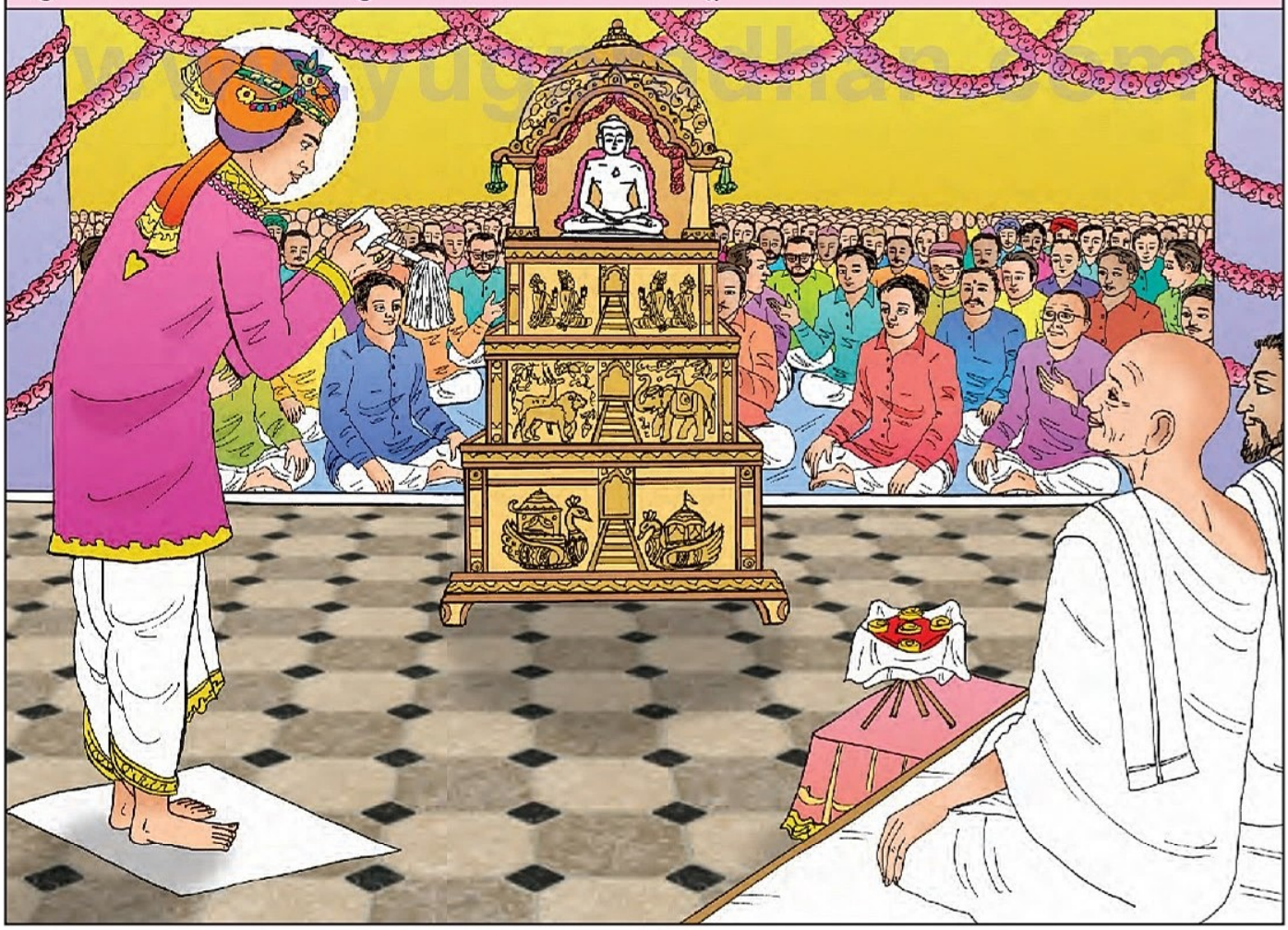

रजोहरण अर्पण इन्द्रवदन का रोम-रोम प्रफुल्लित हो रहा था। संगीत की सुर लहरियाँ बह रही थीं। इन्द्रवदन के चेहरे पर अलौकिक आनन्द छाया हुआ था। उसकी वर्षों की भावना आज पूरी हो रही थी। गुरुदेव ने विशिष्ट मंत्राक्षरों से मंत्रित रजोहरण इन्द्रवदन को प्रदान किया।

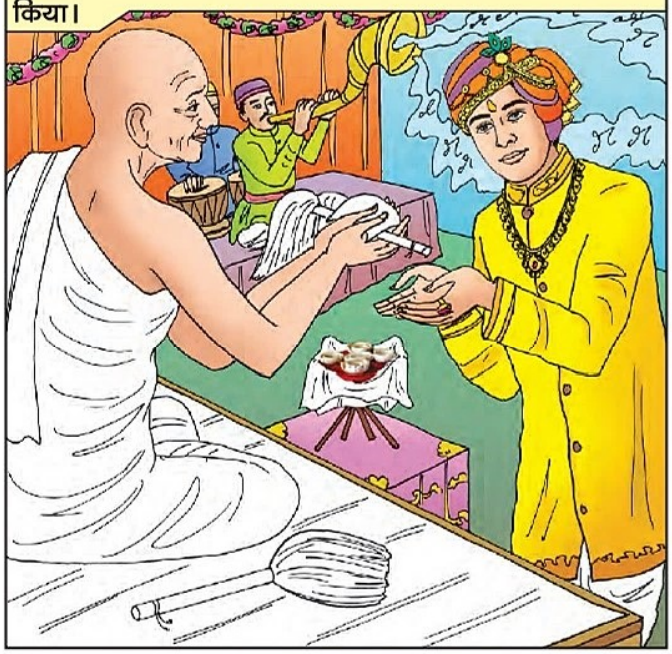

रजोहरण ग्रहण करके इन्द्रवदन का हर्ष अनेक गुना बढ़ गया। उसने रजोहरण को अपने हृदय से लगा लिया फिर हाथ में रजोहरण लेकर नृत्य करने लगा।

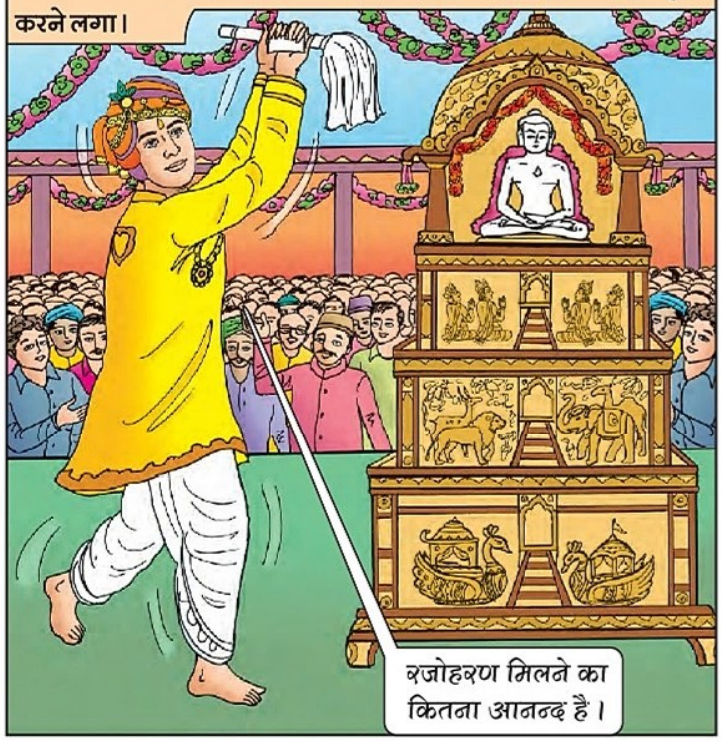

दीक्षा वेश में प्रवेश मण्डप (शामियाने) में उपस्थित मानव भीड़ साधुवेश में सज्जित नूतन दीक्षित को देखने के लिए अधीर हैं। बैण्ड-बाजों की आवाज सुनाई दी। सभी आँखें साधुवेश में सज्ज नूतन दीक्षित को खोज निकालने के लिये प्रयत्नशील हो गईं। कुछ ही देर में मुनि वेश में नूतन मुनिराज धीर-गम्भीर कदम रखते हुए दिखे। इन्द्रवदन की सौम्य और वैराग्य से मण्डित मुखमुद्रा को देखकर लोग ज़ोर-ज़ोर से नारे लगाने लगे-

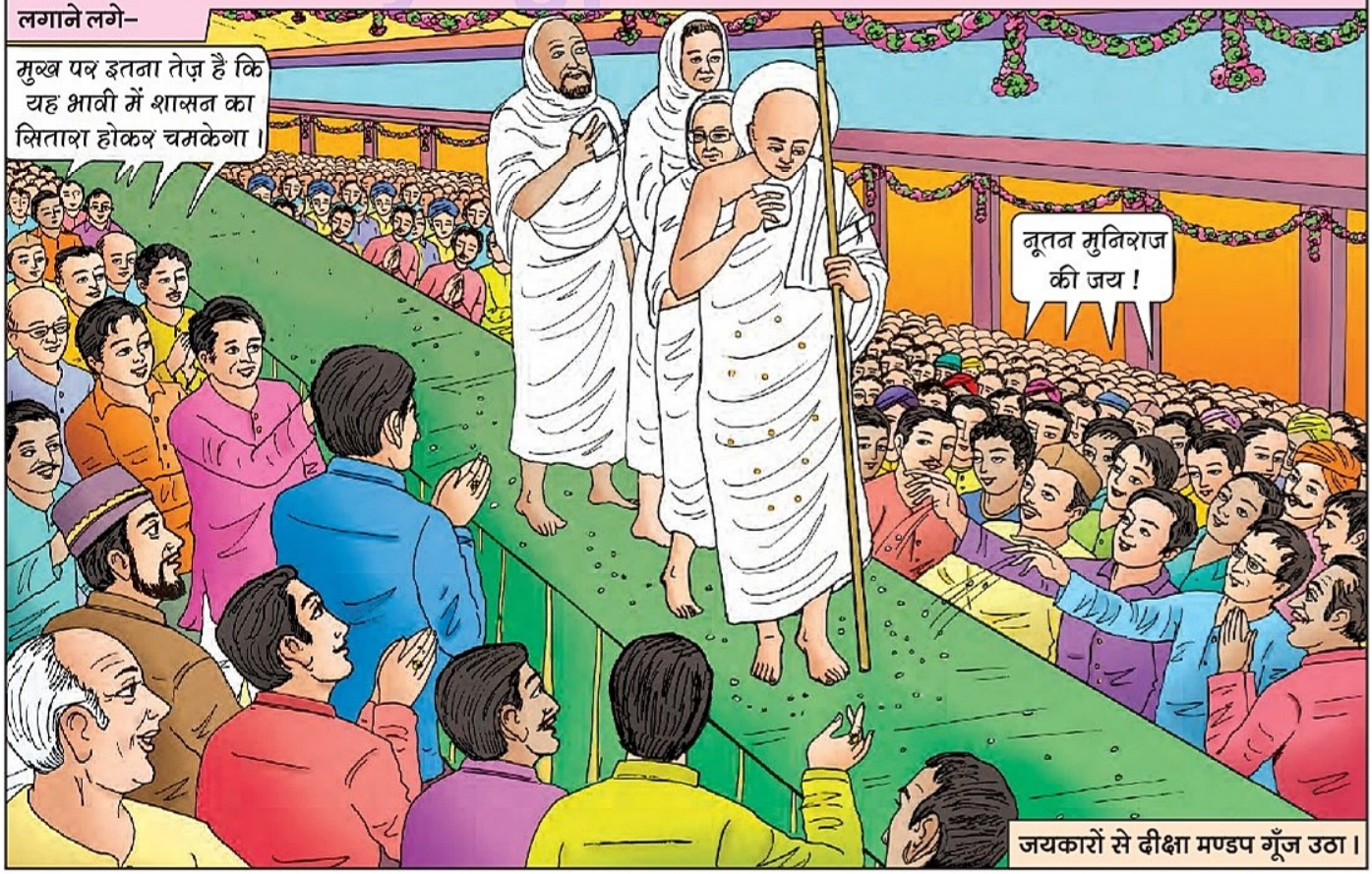

नूतन नामकरण बड़े भाई को दीक्षा के वेश में देखकर छोटा भाई प्रफुल्ल (इन्द्रवदन के प्रति अति प्रेम के कारण) ज़ोर-ज़ोर से रोने लगा। प्रफुल्ल को चुप रखने के लिए जीवाभाई ने आचार्य भगवंत से बात करके इन्द्रवदन के तीन नामों में से एक नाम पसंद करने का ऑफर दिया।

उन दिनों क्रान्तिवीर चन्द्रशेखर आजाद की मूवी बहुत लोकप्रिय हुई थी। उनकी देशभक्ति और खुमारी की चर्चा पूरे देश में चल रही थी। प्रफुल्ल ने कुछ देर सोचने के बाद कहा–

* पू. प्रेमसूरि जी ने दिए हुए तीन नाम – १. पू. मुनिराज श्री लब्धिविजयजी, २. पू. मुनिराज श्री हेमचंद्रविजयजी, ३. पू. मुनिराज श्री चंद्रशेखरविजयजी

वैरागी नूतन मुनिराज दीक्षा के दो दिन पहले इन्द्रवदन ने (1) दूध त्याग, (2) रोज एकासन, (3) मिठाई, फरसान त्याग, (4) आम आदि सभी फ्रूट त्याग ऐसे 108 नियम लिये थे। दीक्षा के दूसरे दिन उपवास का पारणा था। गुरुदेव श्री प्रेमसूरिजी तथा सभी साधुगण उपवास का पारणा कराने पूज्यपादश्री के पास आए। पात्र में दूध डाला। यह देखकर नूतन मुनिराज उदास हो गये।

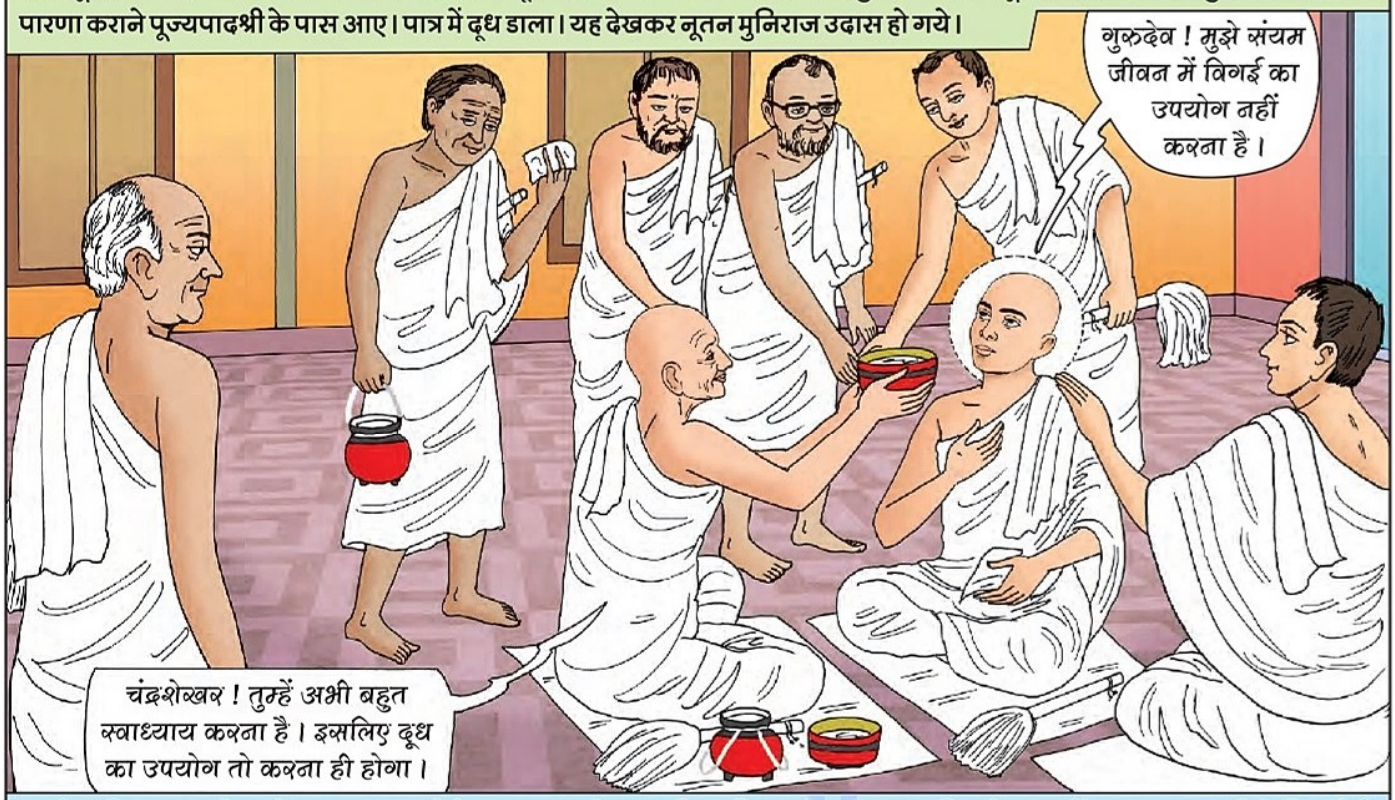

गुरुदेव की आज्ञा स्वीकारते हुए पूज्यपादश्री ने दूध का उपयोग कर लिया किन्तु दीक्षा के प्रथम दिन से 16 वर्षों तक पूज्यपादश्री ने मिठाईयाँ, तली हुई चीजें और आम आदि सब फलों का सम्पूर्ण परित्याग कर दिया था।

चन्द्रशेखर ! कमाल !! कमाल !! प्रथम चातुर्मास में माता सुभद्रा पूज्यपादश्री से मिलने आईं। मुनिश्री ने नजर नीची रखकर मातुश्री की ओर बिना देखे ही अति अल्प शब्दों में बातचीत सम्पन्न की।

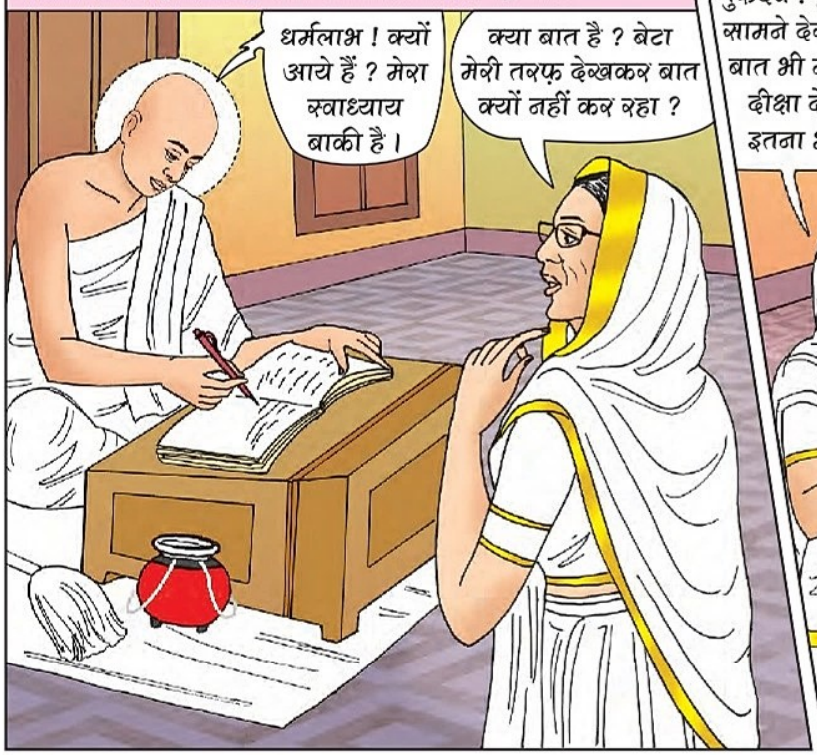

जब मुनिश्री ने नजरें मिलाये बिना बहुत कम बातें की तो सुभद्रा माता ने सीधे पूज्य महाराजजी के समक्ष रोकर फरियाद करते हुए कहा–

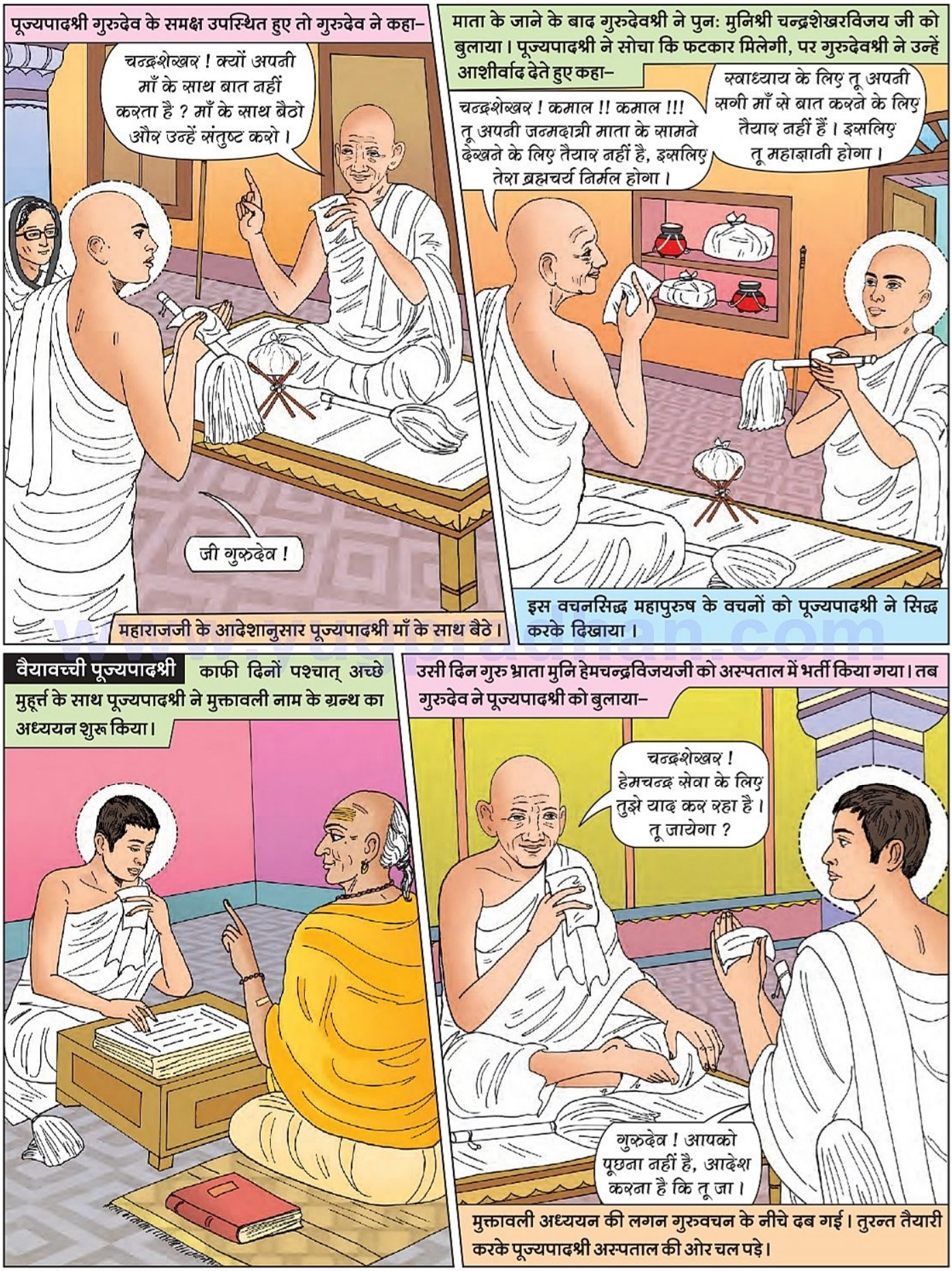
पूज्यपादश्री गुरुदेव के समक्ष उपस्थित हुए तो गुरुदेव ने कहा–
चन्द्रशेखर ! क्यों अपनी माँ के साथ बात नहीं करता है ? माँ के साथ बैठो और उन्हें संतुष्ट करो ।
जी गुरुदेव !
महाराजजी के आदेशानुसार पूज्यपादश्री माँ के साथ बैठे ।
माता के जाने के बाद गुरुदेवश्री ने पुन: मुनिश्री चन्द्रशेखरविजय जी को बुलाया । पूज्यपादश्री ने सोचा कि फटकार मिलेगी, पर गुरुदेवश्री ने उन्हें आशीर्वाद देते हुए कहा–
चन्द्रशेखर ! कमाल !! कमाल !!! तू अपनी जन्मदात्री माता के सामने देखने के लिए तैयार नहीं है, इसलिए तेरा ब्रह्मचर्य निर्मल होगा ।
स्वाध्याय के लिए तू अपनी सगी माँ से बात करने के लिए तैयार नहीं हैं । इसलिए तू महाज्ञानी होगा ।
इस वचनसिद्ध महापुरुष के वचनों को पूज्यपादश्री ने सिद्ध करके दिखाया ।
वैयावच्ची पूज्यपादश्री
काफी दिनों पश्चात् अच्छे मुहूर्त्त के साथ पूज्यपादश्री ने मुक्तावली नाम के ग्रन्थ का अध्ययन शुरू किया।
उसी दिन गुरु भ्राता मुनि हेमचन्द्रविजयजी को अस्पताल में भर्ती किया गया। तब गुरुदेव ने पूज्यपादश्री को बुलाया–
चन्द्रशेखर ! हेमचन्द्र सेवा के लिए तुझे याद कर रहा है । तू जायेगा ?
गुरुदेव ! आपको पूछना नहीं है, आदेश करना है कि तू जा ।
मुक्तावली अध्ययन की लगन गुरुवचन के नीचे दब गई । तुरन्त तैयारी करके पूज्यपादश्री अस्पताल की ओर चल पड़े।

अस्पताल में 40 दिन और उपाश्रय में छह मास तक हेमचन्द्र विजयजी की अविरत सेवा की। लम्बी बीमारी के कारण हेमचन्द्र विजयजी को भोजन के प्रति अरुचि हो गई इसलिए उनका वजन कम होने लगा तब चालाक पूज्यपादश्री आँखों पर पट्टी बाँध कर खिलाते थे।

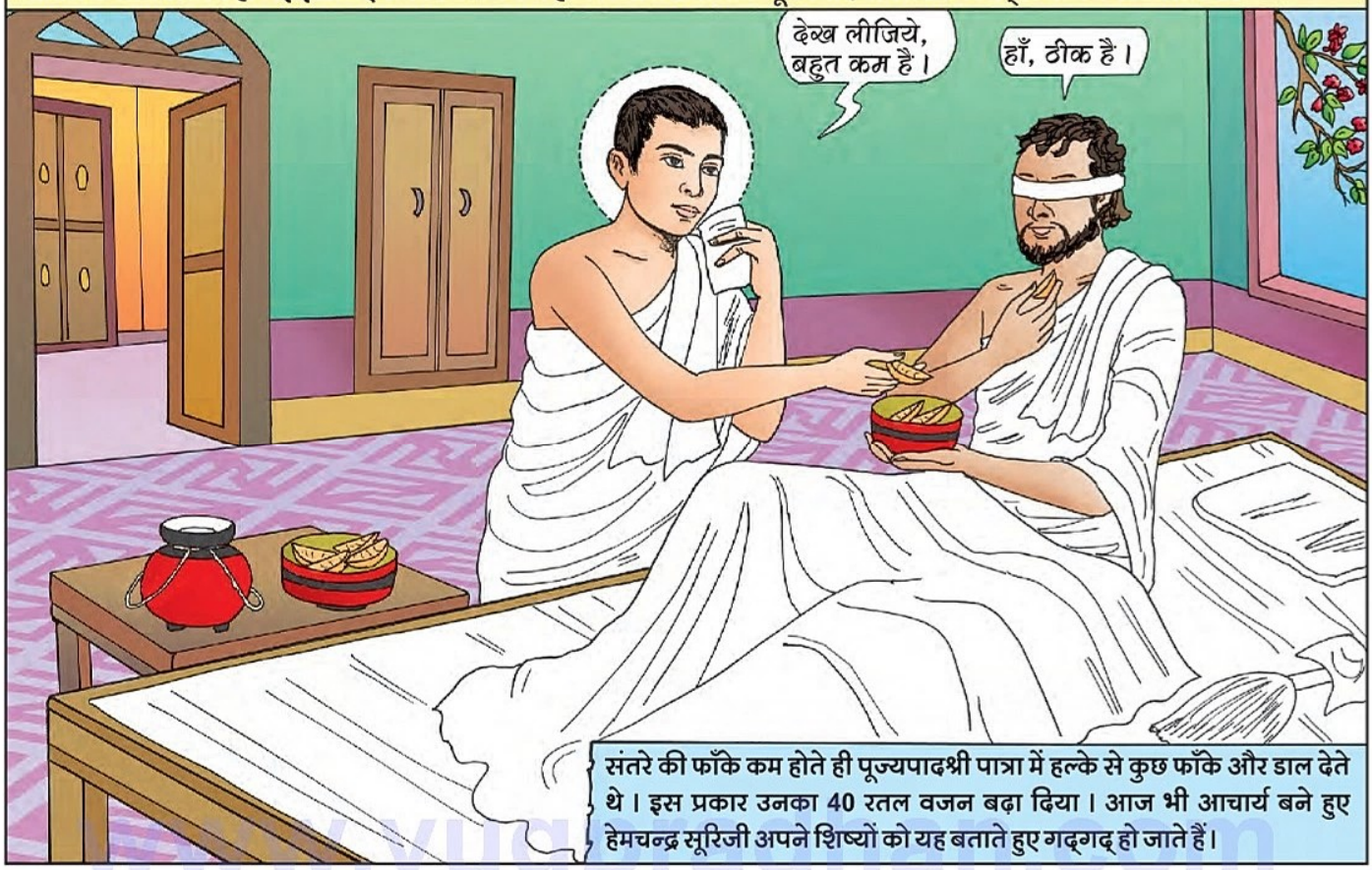

अपूर्व सेवा पूज्यपादश्री अपने गुरुदेव (महाराजजी) को मात्र गुरु ही नहीं साक्षात् भगवान मानते थे। दीक्षा लेने के 16 वर्ष पर्यंत गुरुदेव की अपूर्व सेवा की।

विहार में असमर्थ गुरुदेव श्री प्रेमसूरिजी को शिष्यगण स्ट्रेचर पर उठाकर विहार कराते थे। स्ट्रेचर उठाने में पूज्यपादश्री हमेशा अग्रणी रहते थे। उन्होंने सैंकड़ों कि.मी. स्ट्रेचर में गुरुदेव को उठाने का बहुमूल्य लाभ लिया था। स्ट्रेचर उठाते समय उनका आनन्द आसमाँ को छूता था।

पूज्यपादश्री = चरित्रनायक मुनि श्री चन्द्रशेखर विजयजी म. सा.
महाराजजी = गुरुदेव श्री प्रेमसूरीश्वरजी म. सा.

दिन में कभी महाराजजी आराम फरमाते थे, तब पूज्यपादश्री उनकी बगल में बैठ जाते थे। कोई मक्खी उन पर न बैठ जाये, उसका वे ध्यान रखते थे। कोई आवाज़ करे तो संकेत से उसे शांत करते थे।
मेरे भगवान समान गुरुदेव को नींद में खलल नहीं होनी चाहिए।
शाम को प्रतिक्रमण के बाद रोज़ पूज्यपादश्री अपने गुरुदेवश्री के बड़े भक्ति भाव से पैर दबाते थे।
गुरुदेव ! आपका पावन संस्पर्श और पवित्र दर्शन मेरी भवों की थकान को दूर करता है।
काफ़ी देर तक पूज्यपादश्री पैर दबाते थे तब गुरुदेव कहते–
चन्द्रशेखर ! जा अपना स्वाध्याय कर।
आपके चरणों की सेवा में मेरा सब स्वाध्याय आ गया है।
पूज्यपादश्री का रोम-रोम गुरुसेवा में रत था।
पूज्यपादश्री अपने शिष्यों को कई बार बताते थे–
मेरी शासन प्रभावना और सारी सफलता के मूल में गुरुभक्ति और गुरु बहुमानभाव के वे पवित्र क्षण और मेरे गुरुदेव की अमी दृष्टि ही कारण है।

1. गुरुकृपा ही केवलम्

प्रतिक्रमण से पूर्व सब साधु गुरुदेव के पास वन्दन के लिए एकत्रित हुए तब गुरुदेवश्री ने पूज्यपादश्री से पूछा–

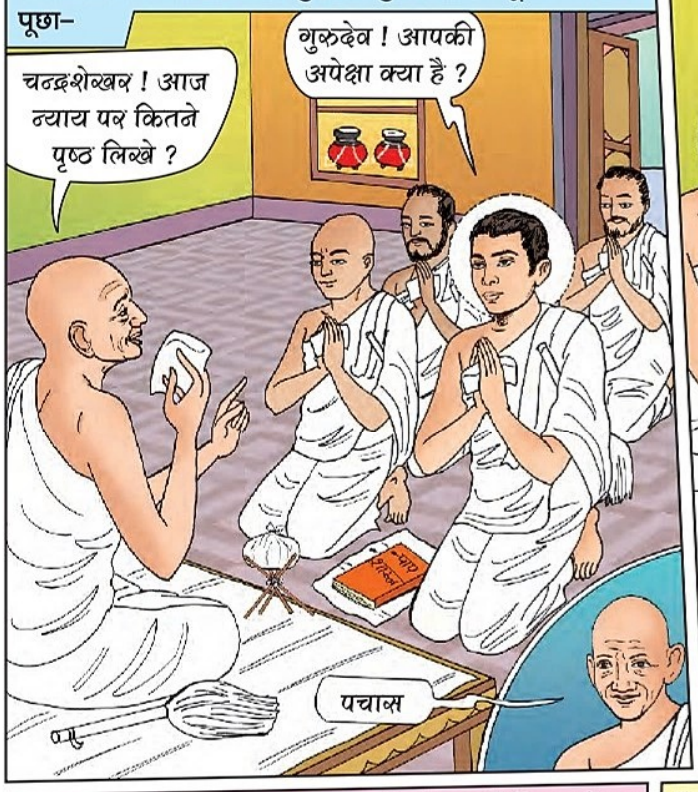

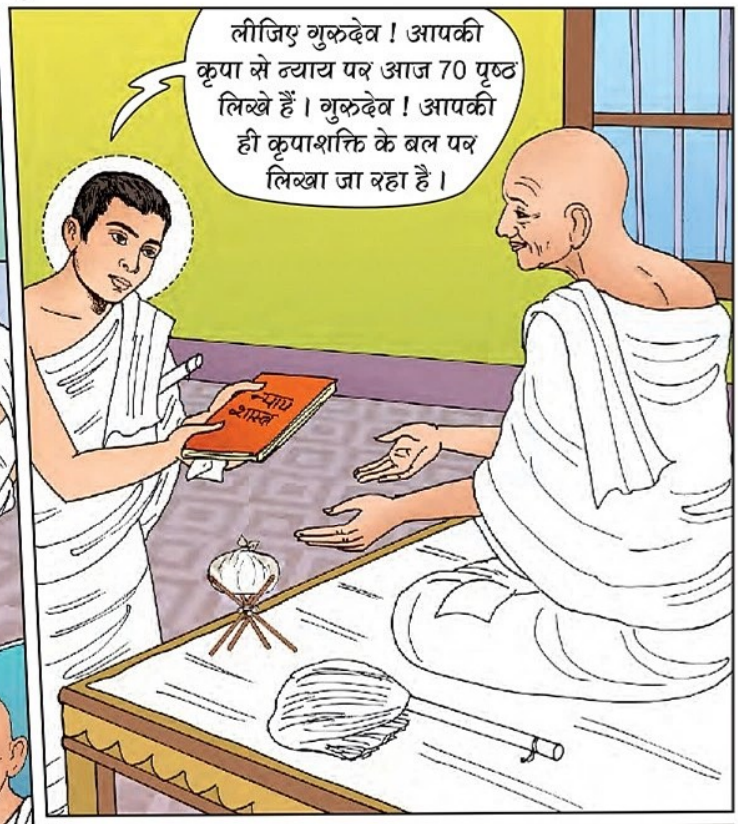

फिर पूज्यपादश्री ने अपना मस्तक गुरुदेव के चरणों में झुकाते हुए कहा–

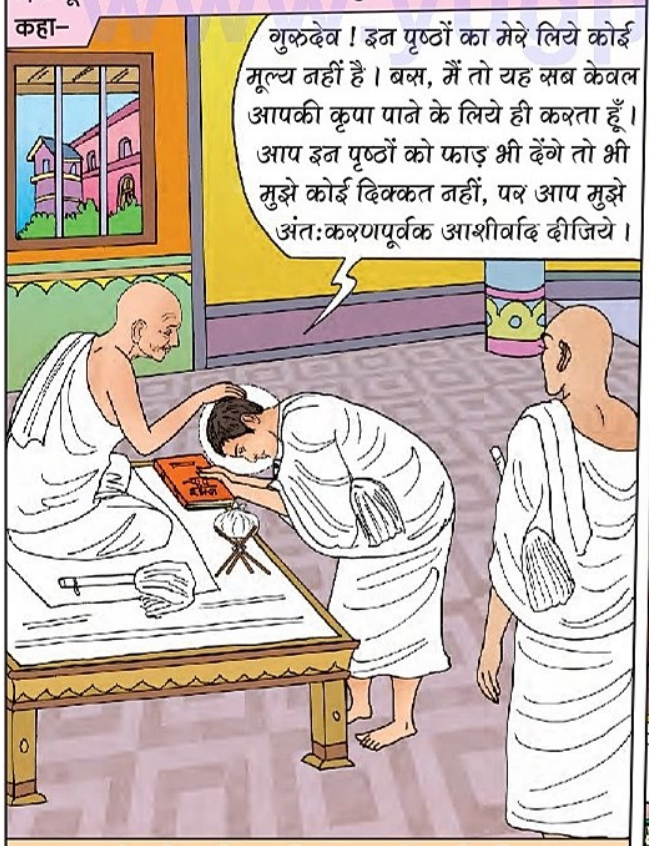

पूज्य गुरुदेव प्रेमसूरीश्वरजी म. सा. ने उनके सिर पर हाथ फिराकर उन्हें खूब आशीर्वाद दिया। यह नित्य क्रम था।

पूज्यपादश्री को पता था कि गुरुदेव को स्वाध्याय अत्यन्त प्रिय है। स्वाध्याय करते रहने से वे बहुत प्रसन्न होते हैं। अत: शुरूआत के सोलह वर्षों तक पूज्यपादश्री सोलह-सोलह घंटे स्वाध्याय करते थे। एक बार तो लगातार एक महिने तक सोये नहीं।

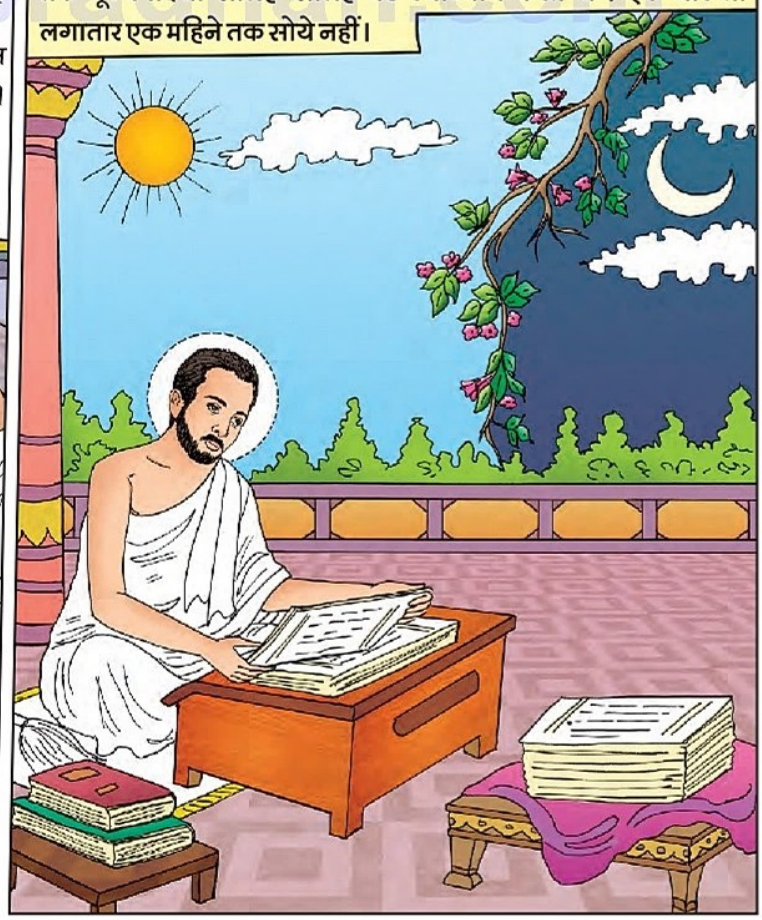

2. चमत्कार अहमदाबाद, जैननगर-पालडी में परम गुरु भक्त रमणलाल वजेचंद के बंगले पर पूज्य महाराजजी अपने विशाल साधु समुदाय के साथ स्थिरता किये हुए थे। उस समय पूज्यपादश्री ''अध्यात्म-सार'' नामक ग्रंथ का भावानुवाद कर रहे थे।

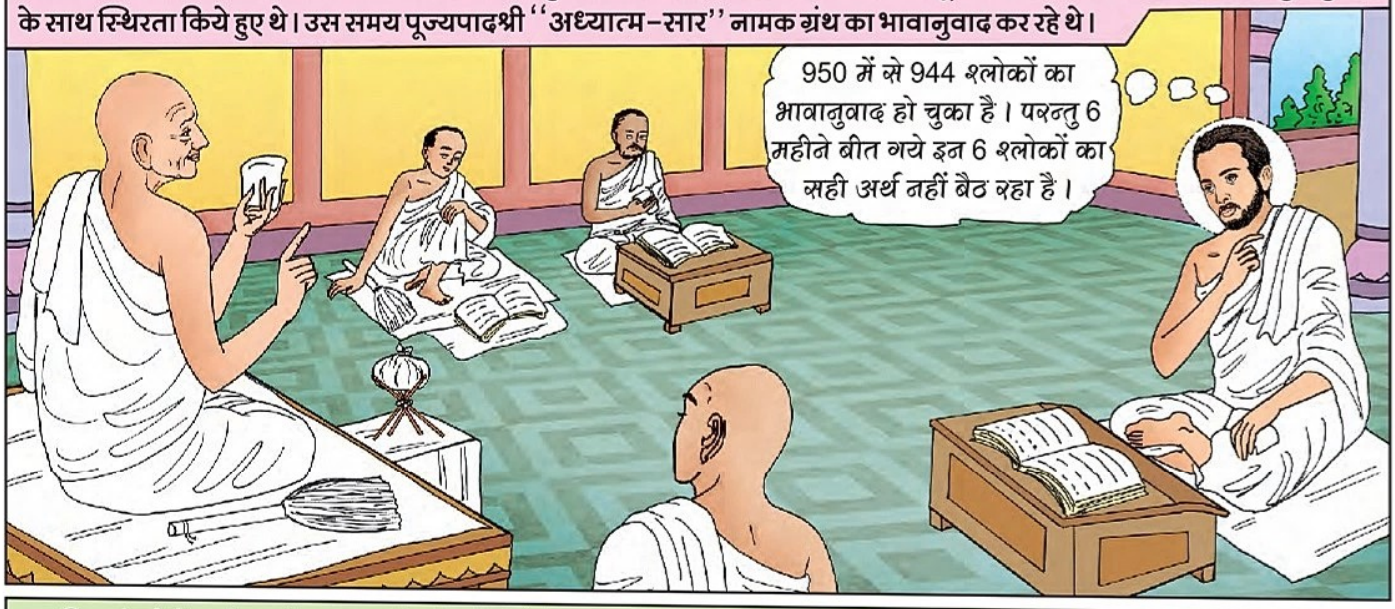

एक दिन बंगले के परिसर में महाराजजी गौचरी होने के पश्चात् टहल रहे थे। अचानक पूज्यपादश्री की नज़र गुरुदेव पर स्थिर हो गई।

भगवान स्वरूप पूज्य गुरुदेव महाराजजी को देखकर पूज्यपादश्री के मोहनीय कर्म का क्षयोपशम हो गया।

अंतर की आवाज़ से स्फुरित होकर पूज्यपादश्री गुरुदेव के पास पहुँचे और उनका हाथ पकड़कर चलाने लगे। चमत्कार सृजित हुआ। पूज्यपादश्री अपने भगवान गुरुदेव का हाथ पकड़कर चला रहे थे और गुरुदेव उनका दिमाग दौड़ा रहे थे। एक-एक गाथाओं का अर्थ अच्छी तरह दिमाग में बैठने लगा।

मुनिश्री की आँखों से हर्ष के आँसू छलक आये। हृदय बहुमान से भर गया।

3. वाग् लब्धि प्रदान एवं शक्तिपात पूज्यपादश्री का भव्य भविष्य देखते हुए पू. गुरुदेवश्री ने मंत्र साधना पूर्वक पूज्यपादश्री की जिह्वा पर सरस्वती मंत्र- 'ऐं' का आलेख किया।

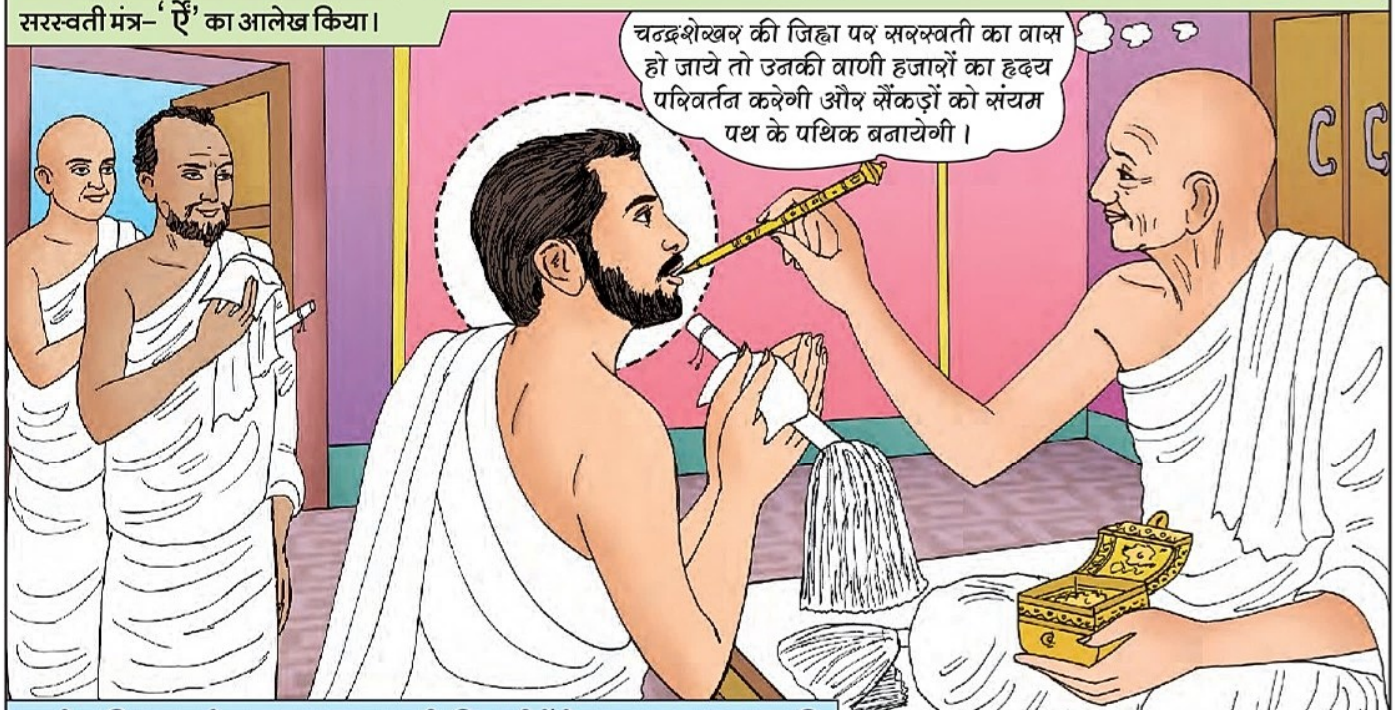

गुरुदेव की भावना के अनुसार पूज्यपादश्री की वाणी में ऐसा अजब जादू आया की उनके एक-एक व्याख्यान से सैंकड़ों गुमराह युवा सच्चे साधु और श्रावक बनने लगे।

4. फलश्रुति पूज्यपादश्री की ज्ञान साधना बेजोड़ थी। उनका स्वाध्याय दिन-रात अविरत चलता रहता था। वे घड़ी के समय के हिसाब से नहीं चलते थे बल्कि स्वाध्याय के हिसाब से घड़ी का समय निश्चित होता था। वे गुरुदेव का आशीर्वाद पाने के लिए लगातार ज्ञान साधना में लगे रहते थे।

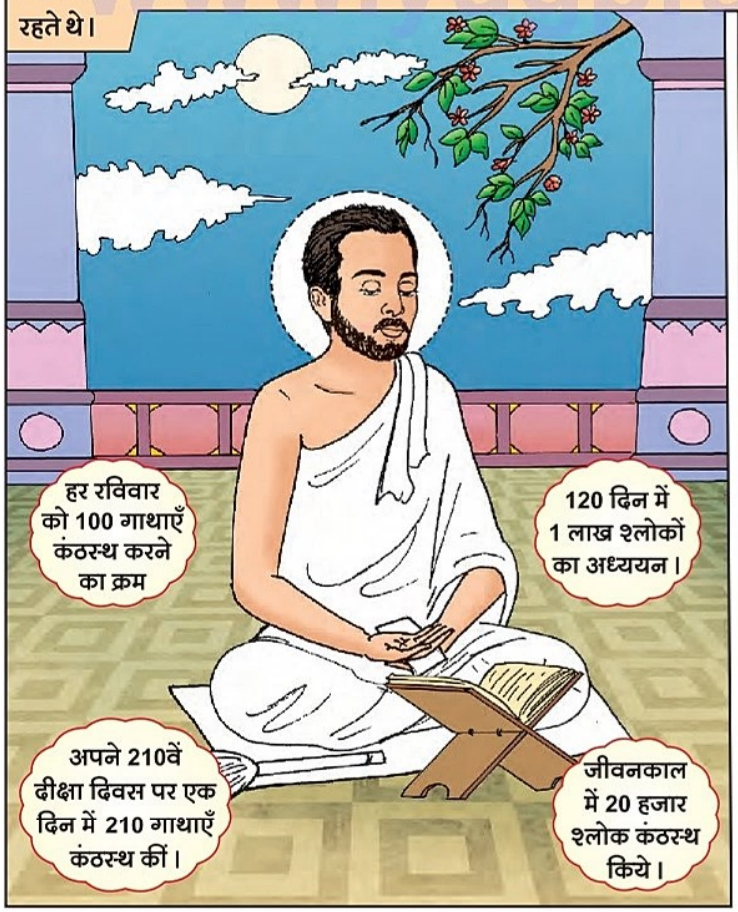

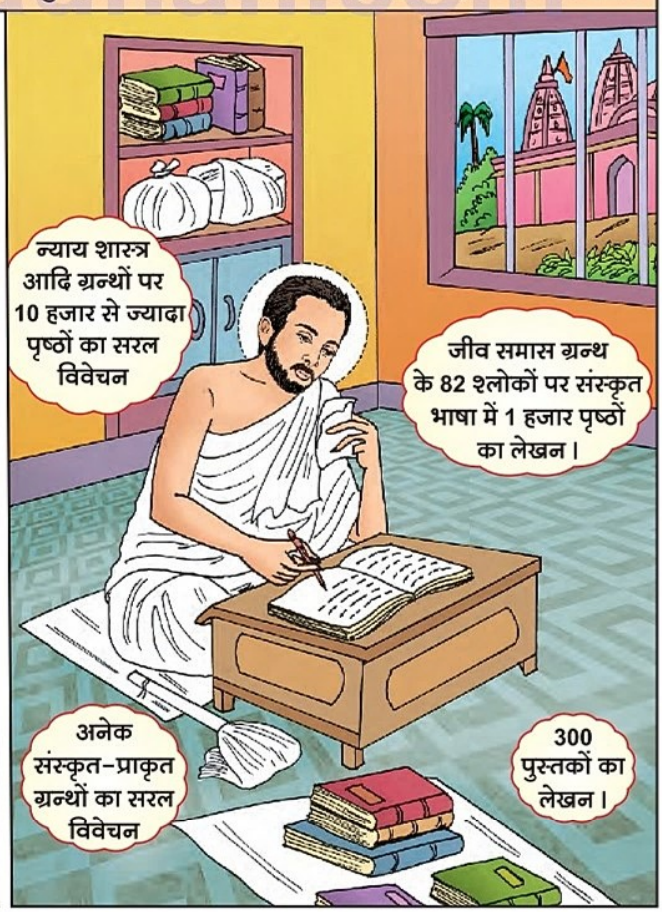

त्वरित बुद्धि और सेवा भाव
अहमदाबाद, ई. स. 1963

एक दिन रात्रिवेला में महाराजजी को अचानक छाती में दर्द होने लगा। परिस्थिति गम्भीर हुई। महाराजजी ने साथ रहे साधुओं को अपने पास बुला लिया और कहा–

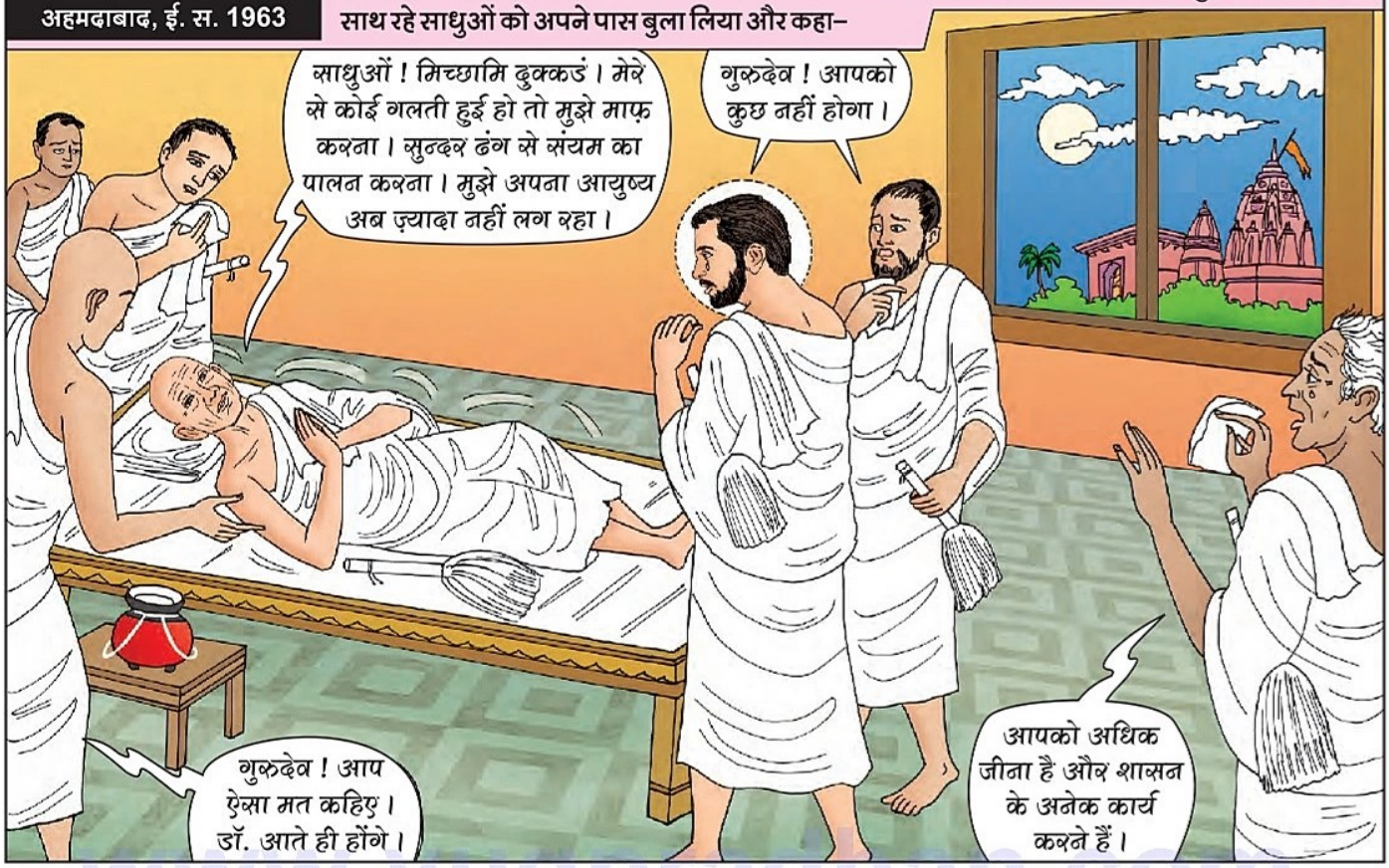

उस समय दुःखी पूज्यपादश्री को कुछ याद आया और वे उठकर थैले टटोलने लगे।

गुरुदेव की सेवा करते-करते पूज्यपादश्री बी.पी. नापने और इंजेक्शन लगाने में कुशल हो गये थे।

पूज्यपादश्री ने फौरन थैले में से इंजेक्शन निकालकर गुरुदेव को लगा दिया।

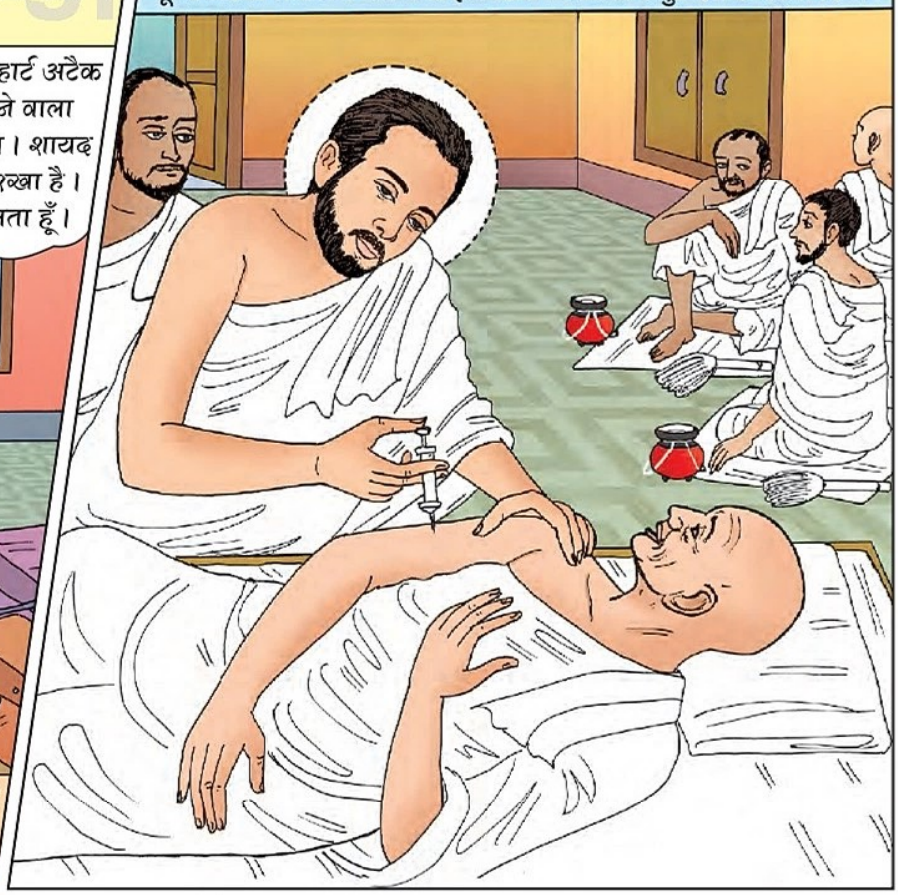

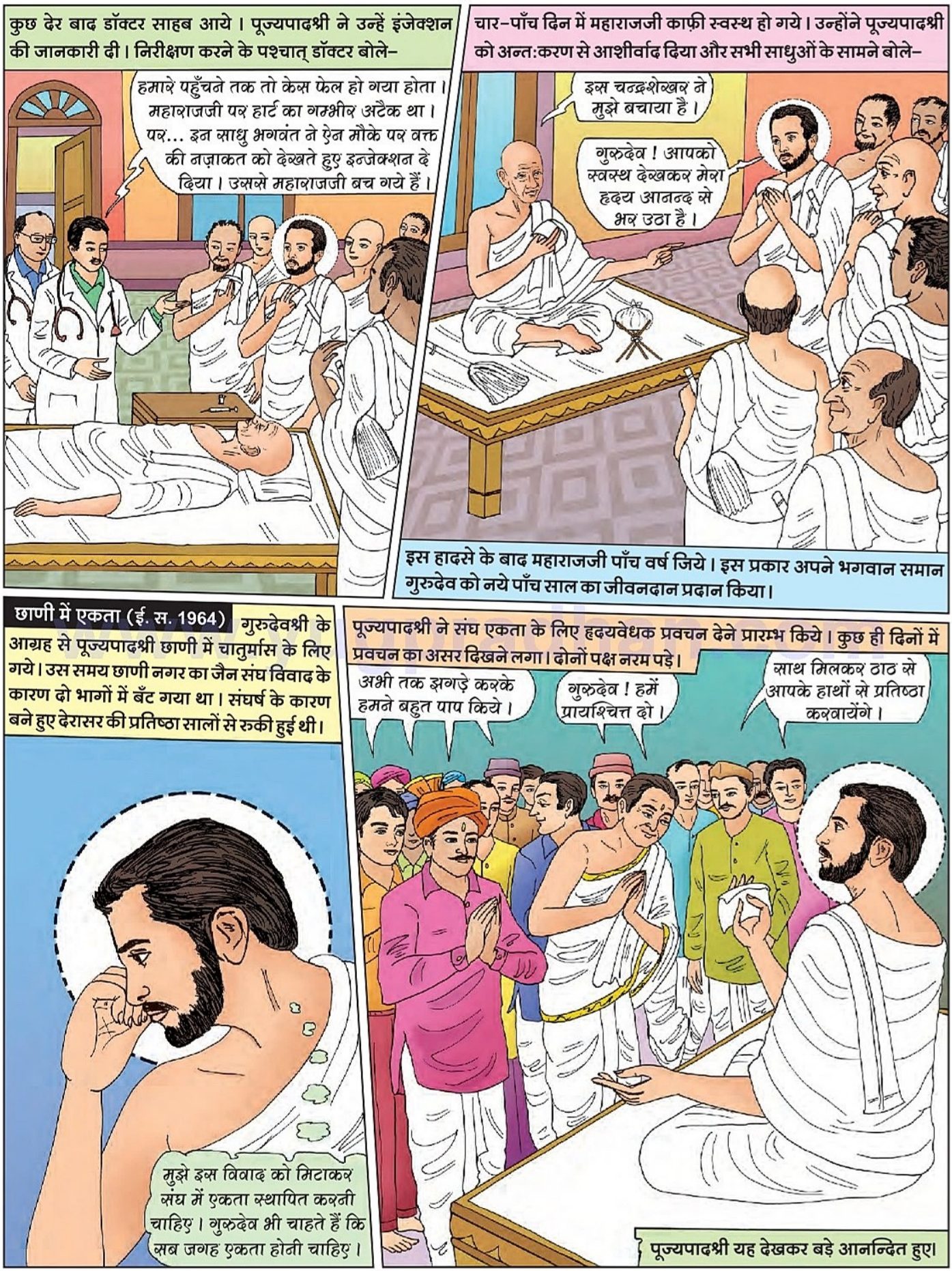
कुछ देर बाद डॉक्टर साहब आये। पूज्यपादश्री ने उन्हें इंजेक्शन की जानकारी दी। निरीक्षण करने के पश्चात् डॉक्टर बोले–
हमारे पहुँचने तक तो केस फेल हो गया होता। महाराजजी पर हार्ट का गम्भीर अटैक था। पर... इन साधु भगवंत ने ऐन मौके पर वक्त की नज़ाकत को देखते हुए इन्जेक्शन दे दिया। उससे महाराजजी बच गये हैं।
चार-पाँच दिन में महाराजजी काफ़ी स्वस्थ हो गये। उन्होंने पूज्यपादश्री को अन्त:करण से आशीर्वाद दिया और सभी साधुओं के सामने बोले–
इस चन्द्रशेखर ने मुझे बचाया है।
गुरुदेव ! आपको स्वस्थ देखकर मेरा हृदय आनन्द से भर उठा है।
इस हादसे के बाद महाराजजी पाँच वर्ष जिये। इस प्रकार अपने भगवान समान गुरुदेव को नये पाँच साल का जीवनदान प्रदान किया।
छाणी में एकता (ई. स. 1964)
गुरुदेवश्री के आग्रह से पूज्यपादश्री छाणी में चातुर्मास के लिए गये। उस समय छाणी नगर का जैन संघ विवाद के कारण दो भागों में बँट गया था। संघर्ष के कारण बने हुए देरासर की प्रतिष्ठा सालों से रुकी हुई थी।
मुझे इस विवाद को मिटाकर संघ में एकता स्थापित करनी चाहिए। गुरुदेव भी चाहते हैं कि सब जगह एकता होनी चाहिए।
पूज्यपादश्री ने संघ एकता के लिए हृदयवेधक प्रवचन देने प्रारम्भ किये। कुछ ही दिनों में प्रवचन का असर दिखने लगा। दोनों पक्ष नरम पड़े।
अभी तक झगड़े करके हमने बहुत पाप किये।
गुरुदेव ! हमें प्रायश्चित्त दो।
साथ मिलकर ठाठ से आपके हाथों से प्रतिष्ठा करवायेंगे।
पूज्यपादश्री यह देखकर बड़े आनन्दित हुए।

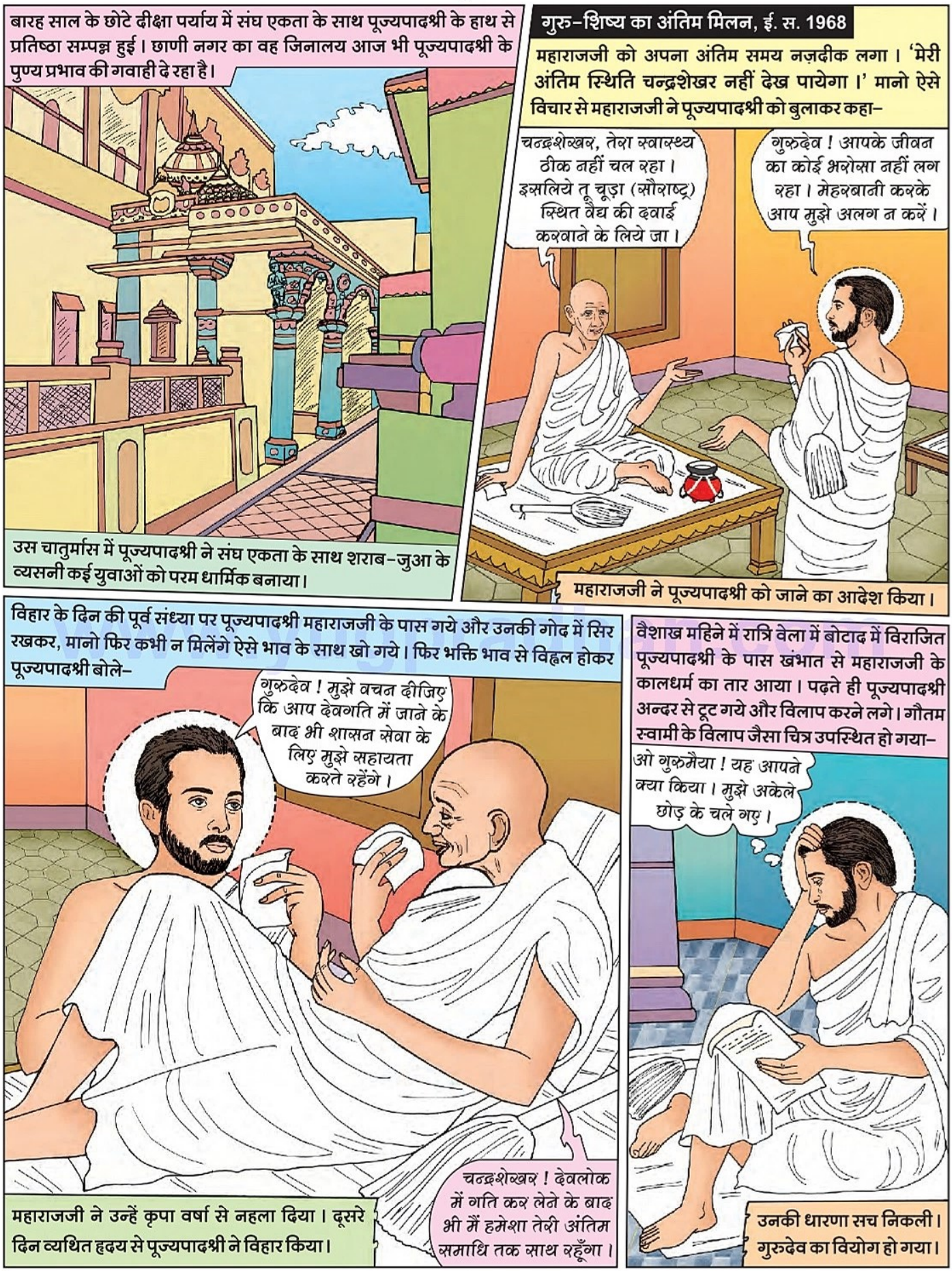
बारह साल के छोटे दीक्षा पर्याय में संघ एकता के साथ पूज्यपादश्री के हाथ से प्रतिष्ठा सम्पन्न हुई। छाणी नगर का वह जिनालय आज भी पूज्यपादश्री के पुण्य प्रभाव की गवाही दे रहा है।
उस चातुर्मास में पूज्यपादश्री ने संघ एकता के साथ शराब-जुआ के व्यसनी कई युवाओं को परम धार्मिक बनाया।
गुरु-शिष्य का अंतिम मिलन, ई. स. 1968
महाराजजी को अपना अंतिम समय नज़दीक लगा। 'मेरी अंतिम स्थिति चन्द्रशेखर नहीं देख पायेगा।' मानो ऐसे विचार से महाराजजी ने पूज्यपादश्री को बुलाकर कहा-
चन्द्रशेखर, तेरा स्वास्थ्य ठीक नहीं चल रहा। इसलिये तू चूड़ा (सौराष्ट्र) स्थित वैद्य की दवाई करवाने के लिये जा।
गुरुदेव ! आपके जीवन का कोई भरोसा नहीं लग रहा। मेहरबानी करके आप मुझे अलग न करें।
महाराजजी ने पूज्यपादश्री को जाने का आदेश किया।
विहार के दिन की पूर्व संध्या पर पूज्यपादश्री महाराजजी के पास गये और उनकी गोद में सिर रखकर, मानो फिर कभी न मिलेंगे ऐसे भाव के साथ खो गये। फिर भक्ति भाव से विह्वल होकर पूज्यपादश्री बोले-
गुरुदेव ! मुझे वचन दीजिए कि आप देवगति में जाने के बाद भी शासन सेवा के लिए मुझे सहायता करते रहेंगे।
चन्द्रशेखर ! देवलोक में गति कर लेने के बाद भी मैं हमेशा तेरी अंतिम समाधि तक साथ रहूँगा।
महाराजजी ने उन्हें कृपा वर्षा से नहला दिया। दूसरे दिन व्यथित हृदय से पूज्यपादश्री ने विहार किया।
वैशाख महिने में रात्रि वेला में बोटाद में विराजित पूज्यपादश्री के पास खंभात से महाराजजी के कालधर्म का तार आया। पढ़ते ही पूज्यपादश्री अन्दर से टूट गये और विलाप करने लगे। गौतम स्वामी के विलाप जैसा चित्र उपस्थित हो गया-
ओ गुरुमैया ! यह आपने क्या किया। मुझे अकेले छोड़ के चले गए।
उनकी धारणा सच निकली। गुरुदेव का वियोग हो गया।

दैवी सहाय महाराजजी के देवलोक गमन के पश्चात् शासन के अनेक कार्यों में जब पूज्यपादश्री पशोपेश में पड़ जाते थे तो सही निर्णय लेने के लिए आँखें बन्द करके महाराजजी का स्मरण करते तब उन्हें सही निर्णय प्राप्त हो जाता था। एक बार 21 वर्ष तक साधना करने वाला एक साधक पूज्यपादश्री से मिलने आया।

महाराजजी के कालधर्म के बाद पूज्यपादश्री के चश्मे के नम्बर और हठीले पुराने रोग गायब हो गए। मुम्बई के बड़े ज्योतिष ने भी कहा कि उनको अपने गुरु देवलोक से सहाय दे रहे हैं।

लींबड़ी चातुर्मास ई. स. 1968
अभ्युदय का आरम्भ

महाराजजी के स्वर्गारोहण के पश्चात् प्रथम चातुर्मास लींबड़ी में हुआ। पूज्यपादश्री ने चातुर्मास में व्याख्यान देना प्रारम्भ किया। चमत्कार हुआ, जिस लींबड़ी में 15 लोग भी व्याख्यान के लिये नहीं आते थे, उसी लींबड़ी में पाँच-पाँच हजार लोग व्याख्यान में उपस्थित होने लगे। जैन-अजैन भावुकों की भारी भीड़ जमने लगी। महाराजजी की दिव्य कृपा ने पूज्यपादश्री के पुण्योदय को प्रकट कर दिया। यह पुण्योदय का तेज़ 42 वर्ष पर्यंत जगत को आलोकित करता रहा।

हजारों लोगों का जीवन परिवर्तन हुआ। लींबड़ी पंथक धर्मभावनाओं से भर गया। चातुर्मास के पश्चात् हजारों लोगों की भीड़ पूज्यपादश्री को विदाई देने उमड़ पड़ी। गाँव के बाहर तक विशाल जनमेदनी पूज्यपादश्री की जय-जयकार करती उन्हें छोड़ने आई थी। आज भी लींबड़ी के लोग उस भव्य चातुर्मास को याद करके आनन्द की अनुभूति करते हैं।

क्रोध के दावानल में क्षमा की अमृत वर्षा
लींबड़ी क्षेत्र में नटुभा नामक खतरनाक व्यक्ति का आतंक फैला हुआ था। एक बार भोयका गाँव के एक दरबार से उसकी नाराज़गी हो गई। नटुभा ने उसे सीधा परलोकगामी बना दिया।
हा... हा... ! मुझसे दुश्मनी करेगा।
आह...!
उसके आतंक से सारा गाँव आक्रांत था। वह जब चाहे किसी को भी मार देता था।
इस तरफ़ झालावाड़ क्षेत्र में जनसंघ नामक राजनैतिक पक्ष के प्रमुख पदाधिकारी बलभद्रसिंह राणा का दबदबा था। वह राजपूत का बच्चा था। जिस पर उसकी आँख तरेरी गई उसके लिये झालावाड़ में जीना भारी पड़ जाता था। एक बार किसी बात को लेकर नटुभा और बलभद्रसिंह राणा के बीच टकराव हो गया।
मैं तेरा खून पी जाऊँगा। तेरे सभी साथियों को मार दूँगा।
मैं तुझे जिन्दा नहीं छोड़ूँगा। मैं तेरे पूरे खानदान को जिन्दा जमीन में गाढ़ दूँगा।
नटुभा के दुष्कृत्यों से दु:खी होकर उसका बेटा भी उसकी जान का दुश्मन बन गया था और उसकी हत्या करना चाहता था।
पूज्यपादश्री को इन तीनों की भयंकर रंजिश की जानकारी हुई–
इनकी लड़ाई से तो सारे जिले में भयंकर खून–खराबा हो जायेगा। मुझे इस झगड़े को शान्त कराने के लिए कुछ करना चाहिए।
हाँ गुरुदेव ! हम भी आतंक के साये में जी रहे हैं। जाने कब किसकी बारी आ जाये...?
पूज्यपादश्री ने कुछ अग्रणी श्रावकों को बुलाकर कहा–
एक बार नटुभा को मेरे व्याख्यान में ले आओ।
गुरुदेव ! झालावाड़ का गुण्डा और व्याख्यान में ? असम्भव है...।
फिर भी पूज्यपादश्री की बात मानकर कुछ श्रावकों ने नटुभा को प्रवचन में आने का निमंत्रण दे दिया।

एक दिन व्याख्यान चल रहा था। अचानक छह फुट कद के नटुभा ने उपाश्रय में प्रवेश किया। व्याख्यान सभागृह में घबराहट फैल गई।

पर पूज्यपादश्री को गुरुकृपा पर अटल विश्वास था। उन्होंने व्याख्यान में नटुभा का स्वागत करते हुए लोगों को शान्ति से बैठे रहने को कहा और व्याख्यान चालू रखा।

अब पूज्यपादश्री ने विषय बदला और उनकी अमृतमयी वाणी ने नटुभा के हृदय तल को स्पर्श किया। व्याख्यान के पश्चात् वह गुरुदेव के चरणों में आ गया और अश्रुपूरित नेत्रों से बोला-

इस तरह नटुभा का हृदय परिवर्तन हो गया। धीरे-धीरे उसने मदिरा-त्याग किया, बुरी आदतें छोड़ दीं और एक सज्जन पुरुष बन गया।

कुछ दिन बाद नटुभा के खून का प्यासा उनका लड़का और बलभद्र सिंह राणा को भी व्याख्यान में निमंत्रित किया गया। तीनों व्याख्यान में बैठे थे और पूज्यपादश्री ने वैरभाव की भयंकरता और क्षमापना पर मर्मस्पर्शी प्रवचन दिया। व्याख्यान सुनते-सुनते नटुभा तो सिसक-सिसककर रोने लगा और बाकी दोनों के हृदय भी क्षमाभाव से भीग गये। तीनों ने गले मिलकर क्षमायाचना की। सभामण्डप हर्षध्वनि से गूँज उठा।

www.jainadhyan.com

एक संत की सूक्ष्म शक्ति लोकमानस पर अंकित हुई। क्षेत्र में छाया आतंक आनन्द में परिवर्तित हो गया। जैनशासन की प्रभावना हुई।

मुक्तिदूत पत्रिका का प्रारम्भ

पूज्यपादश्री की प्रेरणा से ई. स. 1969 के जून महिने से पूज्यपादश्री के चिंतन से युक्त आठ पृष्ठों की नि:शुल्क ''मुक्तिदूत'' मासिक का आरम्भ हुआ। आठ पृष्ठ और तीन हजार प्रतियों के साथ प्रकाशित हुई मुक्तिदूत पत्रिका आज 28 पृष्ठ और 10 हजार प्रतियों के शिखर को छूकर अनेकों का जीवन परिवर्तित कर रही है।

युवा महामिलन (वीर सैनिक दल की स्थापना)

ई. स. 1973, साबरमती जैनसंघ की आयम्बिल शाला के विशाल प्रांगण में, जन्माष्टमी का दिन, पूज्यपादश्री का प्रवचन चल रहा था जिसमें नौ हजार से भी अधिक केवल युवा भाई उपस्थित थे।# ढाई घण्टे तक निरन्तर पूज्यपादश्री की अमृतमय वाणी बरसती रही। जिससे प्रभावित होकर ढाई हजार से भी अधिक युवाओं ने पाँच नियम ग्रहण किये।

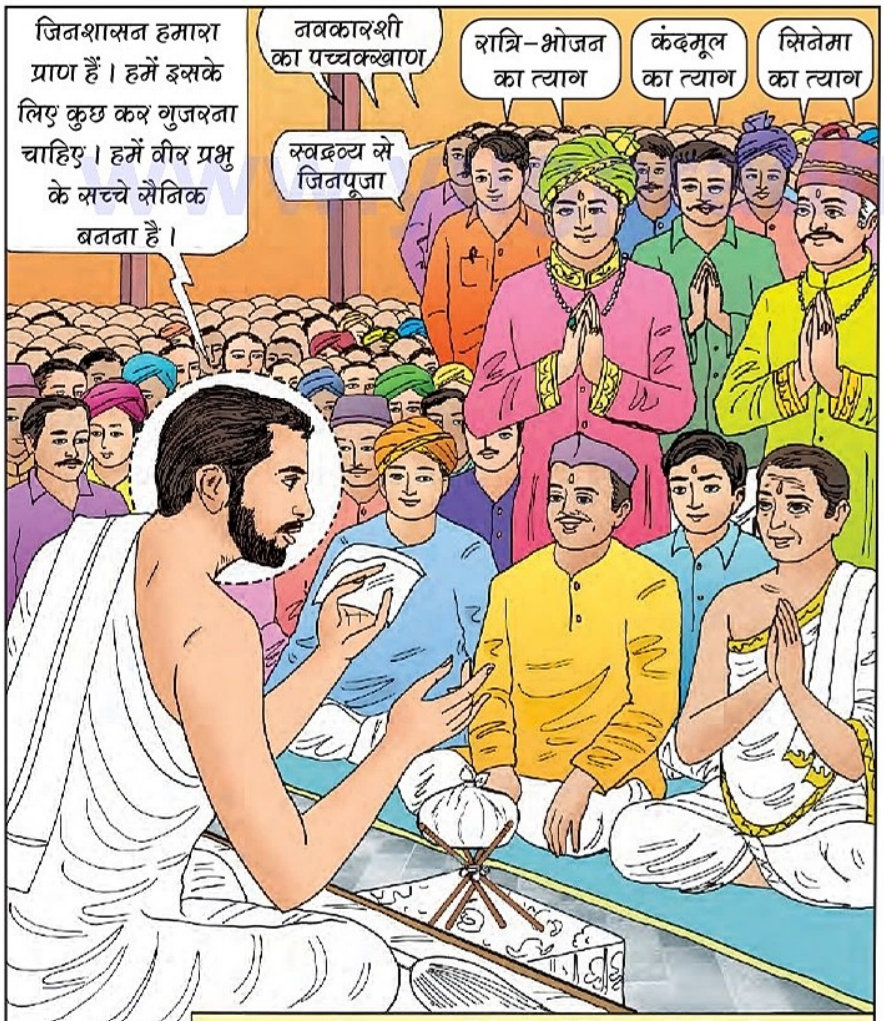

इस तरह ढाई हजार युवाओं ने वीर सैनिक बनने की प्रतिज्ञा ग्रहण की और जन्माष्टमी पर्व वीर सैनिक दल का जन्मदिवस बन गया।

दो साल के अन्दर ही ई. स. 1976 तक गुजरात, महाराष्ट्र और राजस्थान मिलाकर वीर सैनिक दल की 100 शाखाओं का विस्तार हो गया। लगभग पाँच हजार वीर सैनिक बन गये।

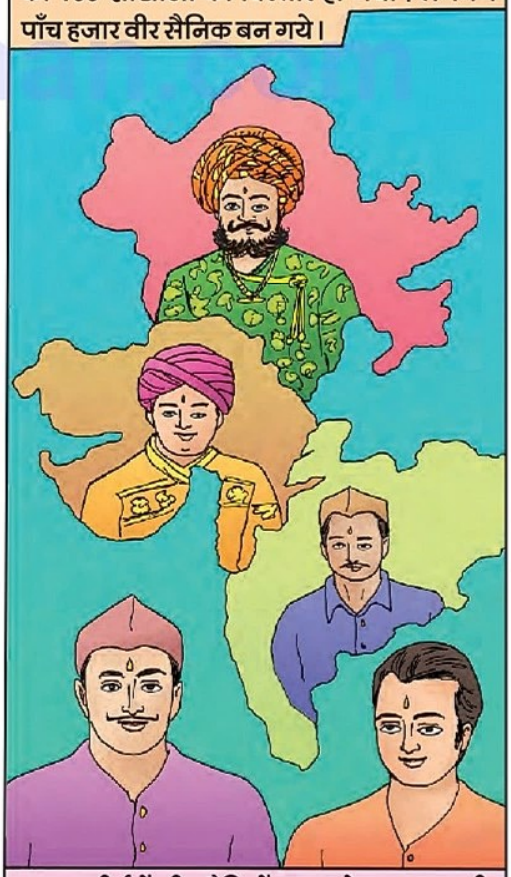

पानसर तीर्थ में वीर सैनिकों का सम्मेलन हुआ। वीर सैनिक दलों का सुचारू संचालन करने हेतु वहाँ अखिल भारतीय संस्कृति रक्षक दल की स्थापना हुई।

बहनों और वृद्ध भाईयों का प्रवेश निषेध था।

प्रभु महावीर के निर्वाण कल्याणक के राष्ट्रस्तरीय उत्सव का विरोध ई. स. 1974, तीर्थंकर प्रभु महावीर के 2500वें निर्वाण कल्याणक को सरकार ने राष्ट्रीय स्तर पर अशास्त्रीय रीत से मनाने का निर्णय लिया। प्रभु की घोर अवहेलना से आक्रांत पूज्यपादश्री ने विराट सभा का आयोजन किया।

पूज्यपादश्री के मर्म स्पर्शी व्याख्यान सुनकर हजारों लोग इस जयन्ति का विरोध करने उनके साथ जुड़ गये।

इस उत्सव के एक भाग के रूप में प्रभु महावीर के जीवन पर आधारित फिल्म बनने वाली थी। जब पूज्यपादश्री को यह समाचार मिला तो वे आक्रांत हो उठे।

चारों ओर विरोध की आँधी खड़ी हो गई। अंत में फिल्म बंद करके निर्माता को माफ़ीनामा लिखकर देना पड़ा।

डोक्युमेंटरी फिल्म विरोध सभा (ई. स. 1974)

राष्ट्रीय स्तर के उत्सव के अनेक अनिष्टों में से एक सबसे बड़ा अनिष्ट था टॉकीज में पिक्चर दिखाने से पूर्व परमात्मा को निर्वस्त्र अवस्था में दिखाया जाना। पिक्चर देखने के लिये आने वाले निम्न कोटि के लोग नग्न प्रभु पर व्यंग करते थे और अभद्र शब्दों का प्रयोग करके परमात्मा की घोर आशातना करते थे। पूज्यपादश्री इस घोर आशातना को लेकर डेढ़ घण्टे तक रोते रहे।

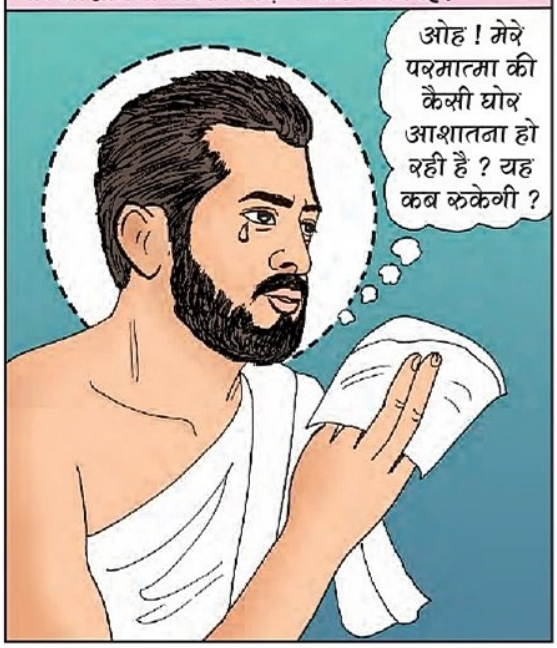

इस उत्सव में परमात्मा को वीतराग सर्वज्ञ तीर्थंकर के रूप में प्रस्तुत न करते हुए समाज सुधारक, साम्यवाद के पिता के रूप में प्रस्तुत किया जाने वाला था। जिससे प्रभु की आशातना हो रही थी।

दूसरे दिन बड़ी सभा का आयोजन हुआ। पूज्यपादश्री ने डोक्युमेंटरी फिल्म के बारे में दर्दभरी अपील की। यह सुनकर पूरी सभा जुलूस के रूप में अशोक टॉकीज पहुँची। भारी विरोध को देखकर मैनेजर पूज्यपादश्री के पाँव में पड़ा।

अन्त में पूज्यपादश्री ने शौर्यपूर्ण संवेदन किया। वहाँ से यात्रा प्रताप टॉकीज पहुँची। वहाँ भी मैनेजर ने माफी माँगी। विरोध नहीं, पर विजययात्रा उपाश्रय के द्वार पर थम गई। वहाँ पूज्यपादश्री ने राष्ट्रीय स्तर के उत्सव के विरोध में कल से अनशन शुरू करने की घोषणा की।

उपवास का प्रारम्भ (ई. स. 1974)

दूसरे दिन से उत्सव के विरोध निमित्त पूज्यपादश्री ने अनशन प्रारम्भ कर दिया। 40 साधु-साध्वीजी और 28 श्रावक-श्राविकाएँ भी साथ जुड़ गये। तीन उपवास हो गये, परन्तु कोई परिणाम नहीं निकला। सर्वत्र उदासी छाई हुई थी।

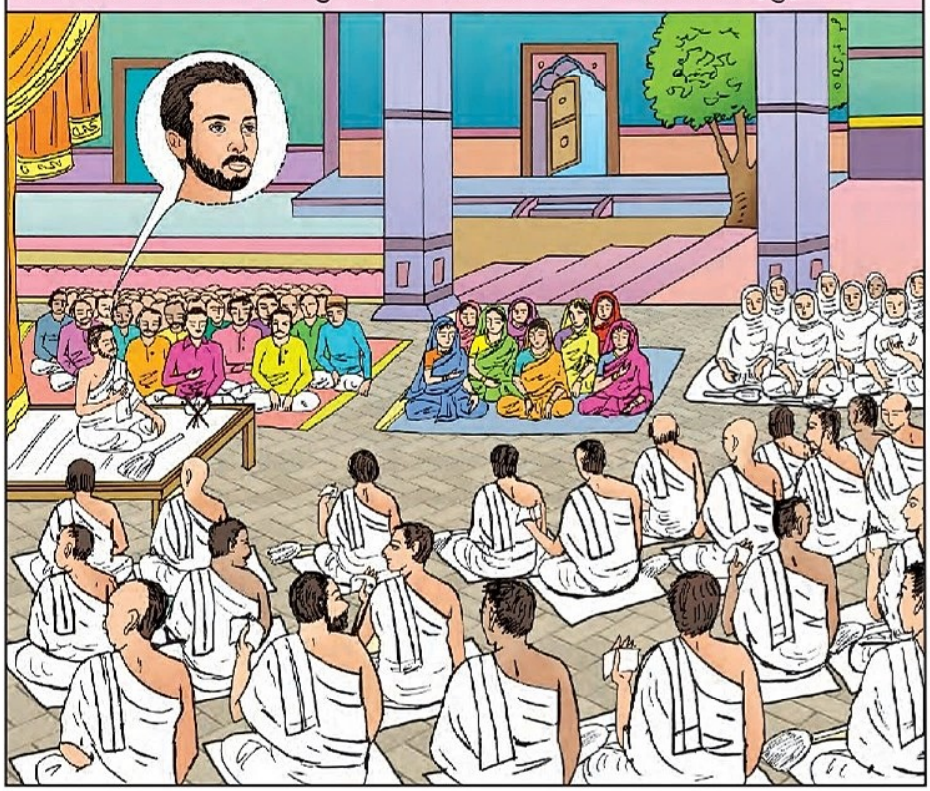

चौथे दिन महोत्सव समिति के अध्यक्ष कस्तूरभाई पूज्यपादश्री का जिन-शासन के प्रति राग और दृढ़ता से प्रभावित होकर नतमस्तक उनके दर्शन करने पहुँचे-

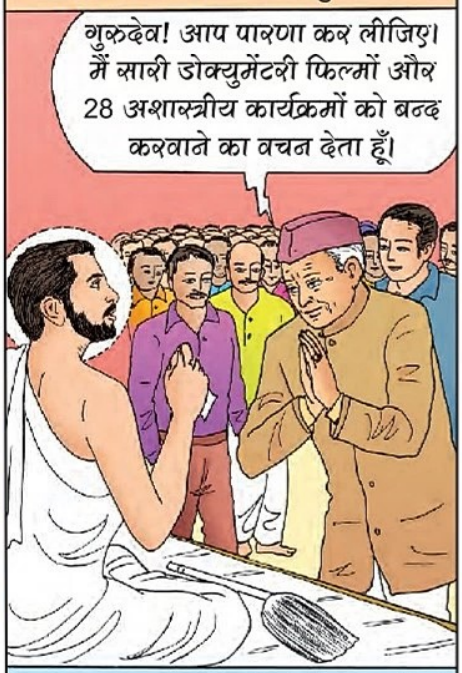

वचन सुनकर पूज्यपादश्री को बेहद खुशी हुई और विजययात्रा के साथ पारणा तय हुआ।

दूसरे दिन सुबह साढ़े सात बजे पूज्यपादश्री की अध्यक्षता में 9 हजार लोक समूह के साथ विजय यात्रा फेलोशिप हाईस्कूल के परिसर में पहुँची। कस्तूरभाई ने ही वहोराकर पूज्यपादश्री को 4 उपवास का पारणा करवाया।

युवा समूह ने आनन्दातिरेक से पूज्यपादश्री को उठा लिया और झूमने लगे। पूज्यपादश्री ने सभा को सम्बोधन करके कहा–

अन्त में प्रभु भक्तों की जीत हुई। सभी अशास्त्रीय कार्यक्रम बन्द करवा दिये गये।

युवाओं द्वारा पर्युषण पर्व की आराधना करवाने की शुरूआत (ई. स. 1976)

पर्युषण में जहाँ साधु-साध्वीजी नहीं पहुँच पाते, उन संघों में प्रतिक्रमण, कल्पसूत्र वाचन आदि के लिए आचारयुक्त युवाओं को तैयार करवाने का विचार पूज्यपादश्री के मन में आया। उसके फलस्वरूप अहमदाबाद विद्याशाला में ई. स. 1976 में लगभग चार मास के लिए चुने हुए 105 युवाओं का शिक्षण वर्ग शुरू हुआ।

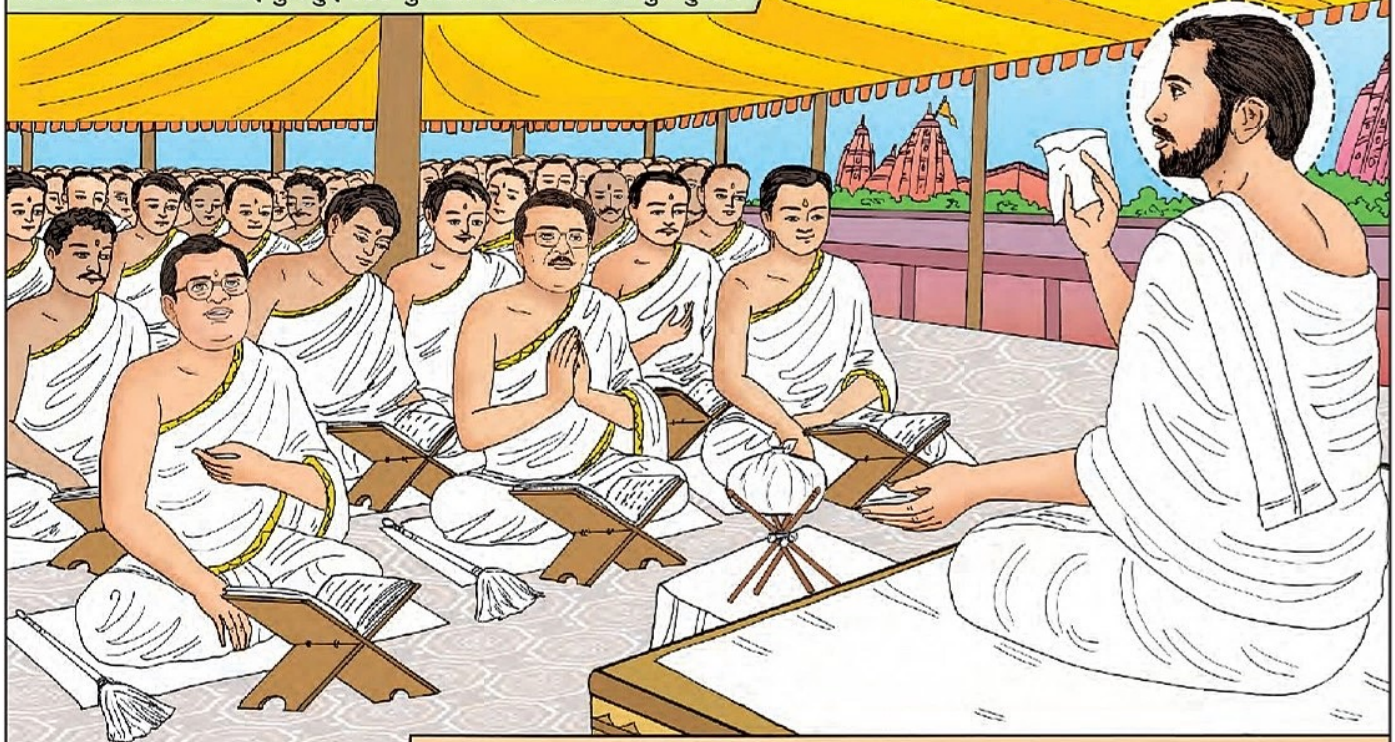

तालीम प्राप्त युवाओं द्वारा ई. स. 1976 में 18 संघों से प्रारम्भ हुआ यह पर्युषण आराधना अभियान आज ई. स. 2017 के वर्ष में विदेश के 16 संघ और भारत के 87 संघ तक व्याप्त है।

क्या आप मुझे सहाय करोगे ? ई.स. 1977 एक दिन दीक्षा के प्रारम्भिक काल में जिन्होंने पूज्यपादश्री को न्याय का अभ्यास करवाया था, वो विद्यागुरु दुर्गानाथ झा का पत्र आया–

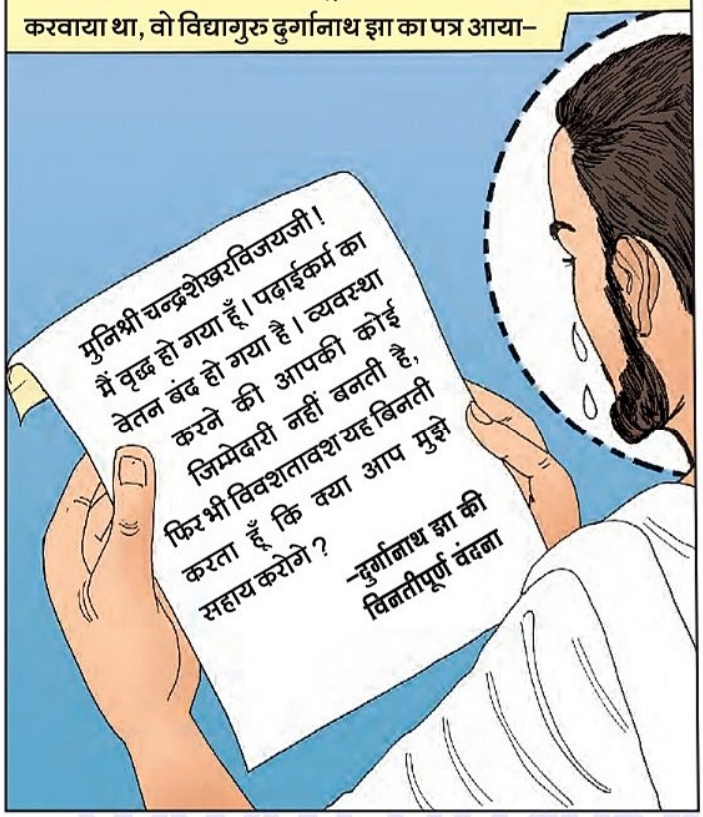

पूज्यपादश्री ने पत्र को दो–तीन बार पढ़ा। आँखों से आँसू टपकने लगे। तुरन्त ही लौटती डाक से पत्र का उत्तर दिया।

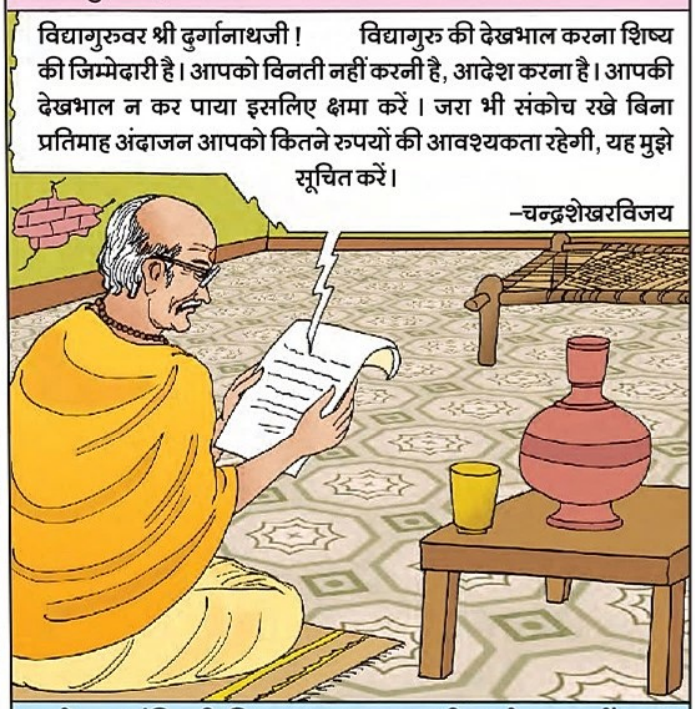

इसके बाद पंडितजी की मृत्यु तक पूज्यपादश्री अपने भक्तगणों द्वारा प्रतिमाह रु. 700/- पंडितजी को बहुमान स्वरूप पहुँचवाते रहे। ऐसी थी विद्यागुरुवर के प्रति पूज्यश्री की उत्कृष्ट भक्ति।

मुम्बई में युवा परिवर्तन ई.स. 1977 में अपनी तेजराशि से समस्त जगत को आलोकित करने की चाह लिए पूज्यपादश्री ने तीन वर्ष तक मुम्बई में चातुर्मास करके समस्त मुम्बई को हिलाकर रख दिया। युवा जगत को सन्मार्ग, सद्ज्ञान और सदाचार का मार्ग बताया।

पूज्यपादश्री की प्रेरणा से वर्धमान संस्कारधाम की स्थापना हुई। जिसमें आज भी युवावर्ग जिनशासन की अद्भुत सेवा कर रहे हैं।

अंतरीक्षजी तीर्थ रक्षा (ई. स. 1981) अंतरीक्षजी तीर्थ के स्वामित्व के लिए वर्षों से श्वेताम्बरों और दिगम्बरों के बीच विवाद चल रहा था। नागपुर कोर्ट ने श्वेताम्बरों के पक्ष में निर्णय भी दे दिया था परन्तु दिगम्बर तीर्थ पर कब्जा करने का प्रयत्न कर रहे थे। पूज्यपादश्री को जब यह पता चला तो वे बहुत दुःखी हुए।

तीर्थ सुरक्षा के लिए पूज्यपादश्री ने अंतरीक्षजी में चातुर्मास करने का निर्णय किया।

तीर्थरक्षा के लिए मुम्बई में विराट सभा का आयोजन किया गया और अन्त में घोषणा हुई–

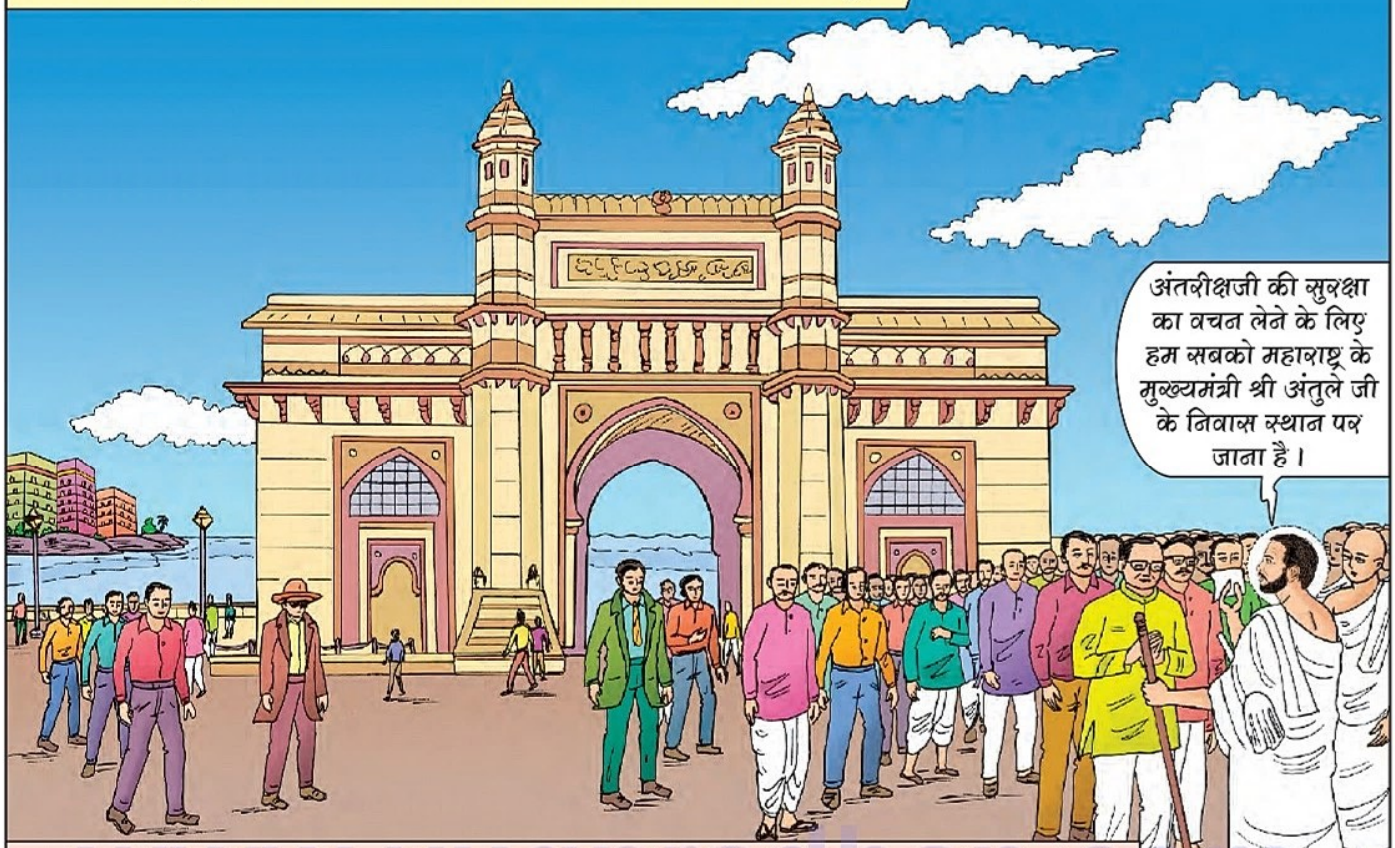

सात हजार से भी अधिक जनसैलाब के साथ पूज्यपादश्री, श्री अंतुलेजी के निवास स्थान पर पहुँचे। अंतुलेजी ने अंतरीक्षजी तीर्थ की रक्षा के लिए संतोषजनक प्रतिभाव दिया। फिर पूज्यपादश्री ने अंतरीक्षजी की ओर विहार किया।

www.vikpradhan.com

पुलिस मेरी क्या रक्षा करेगी ? पूज्यपादश्री के अंतरीक्षजी की ओर विहार से विदर्भ में हलचल मच गई। पूज्यपादश्री के व्याख्यानों से छोटे-छोटे गाँवों में भी अंतरीक्षजी के लिए जागृति आने लगी। इस जागृति से पूज्यपादश्री की जान का खतरा देखकर अग्रणी जनों ने सुरक्षा के लिए पुलिस लगाने की पूज्यपादश्री से प्रार्थना की तब पूज्यपादश्री ने हँसकर कहा–

निराश अग्रणी जन वापस लौट गये।

विहार में जान का खतरा देखकर भाई प्रफुल्ल ने पूज्यपादश्री को पूछे बिना भारतीय सेना की एक वैन उनकी सुरक्षा के लिये रखवाई। जब पूज्यपादश्री को पता चला तो उन्होंने प्रफुल्ल को बुलाकर कहा–

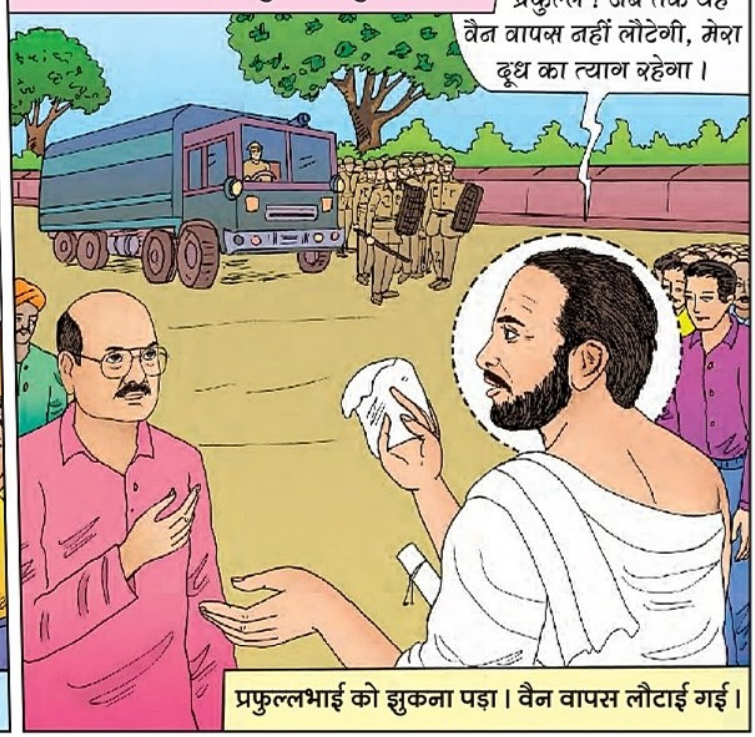

प्रफुल्लभाई को झुकना पड़ा। वैन वापस लौटाई गई।

अंतरीक्षजी में भव्य प्रवेश (ई. स. 1981)

छरी पालक संघ के साथ पूज्यपादश्री अंतरीक्षजी तीर्थ पहुँचे। अगवानी के लिए समस्त शिरपुर गाँव उमड़ आया था। स्पेशीयल रेलगाड़ी और बसों द्वारा लगभग छह हजार जैन शिरपुर पहुँच गये थे। पूज्यपादश्री की भव्य अगुवाई हुई। पूज्यपादश्री ने विशाल जनमेदिनी को सम्बोधित करते हुए कहा –

प्रवचन सुनकर पूरी जनसभा शांतिदूत अमर रहे के नारों से गूँजने लगी।

रक्त रंजित बलिदान पत्र

चातुर्मास में समस्त भारत के युवाओं का चार दिवसीय महासम्मेलन हुआ। पूज्यपादश्री ने फरमाया–

कोने में बैठे एक युवा का हृदय संवेदित हो गया। उसने उँगली पर सुई चुभाकर रक्त रंजित अक्षरों से एक अर्जी लिखी–

थोड़ी देर में युवाओं के 400 रक्तरंजित बलिदान–पत्र पूज्यपादश्री के पास आ गये।

मैंने आपकी हत्या करने का निश्चय किया था

एक दिन पूज्यपादश्री प्रफुलभाई से बातचीत कर रहे थे। अचानक एक गुंडे जैसा व्यक्ति कमरे में आया और हाथ जोड़कर जोर-जोर से रोने लगा–

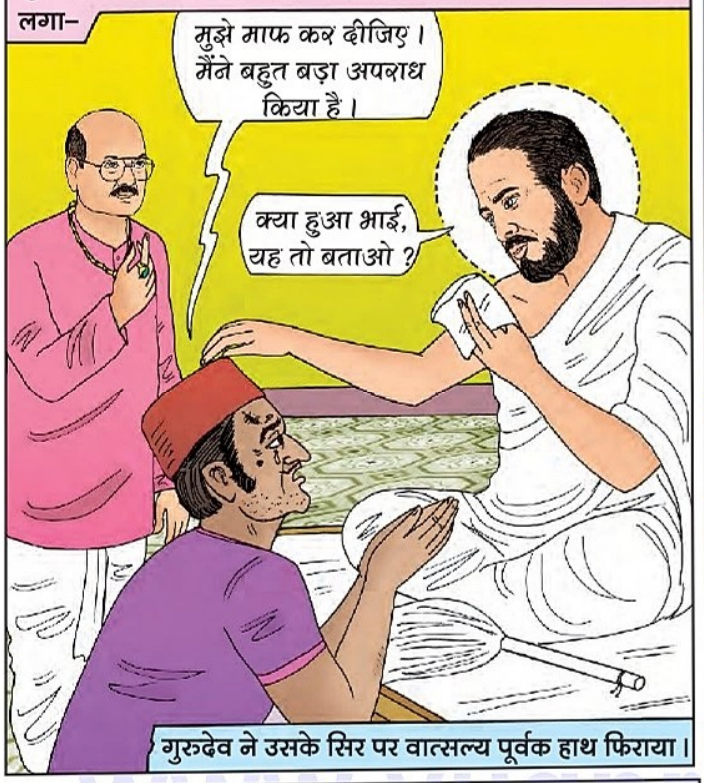

उस आदमी ने सारी हकीकत बताते हुए कहा–

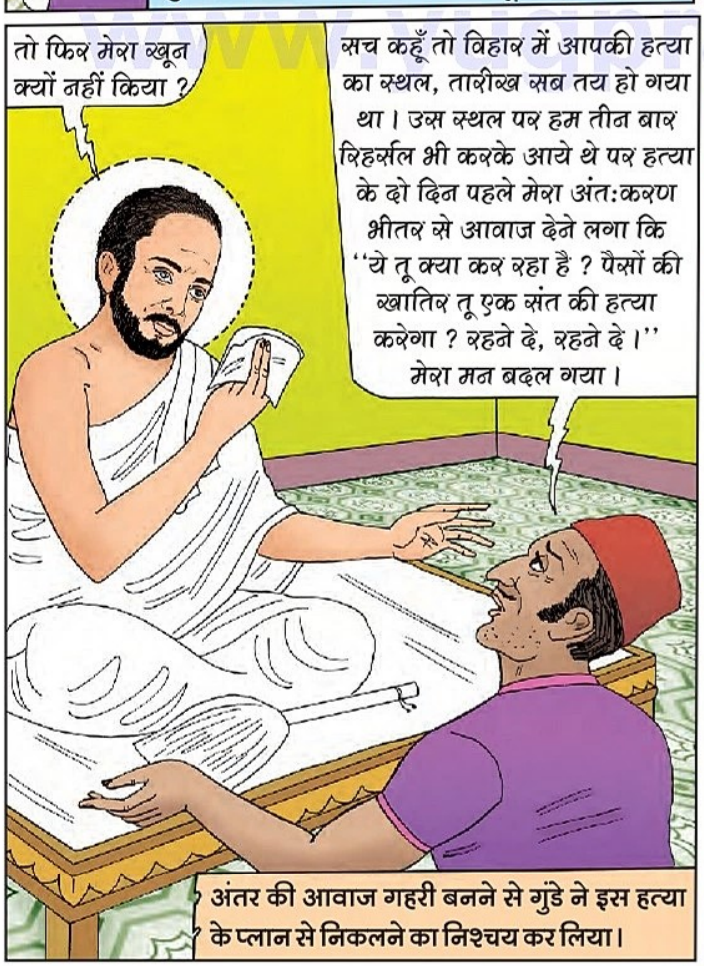

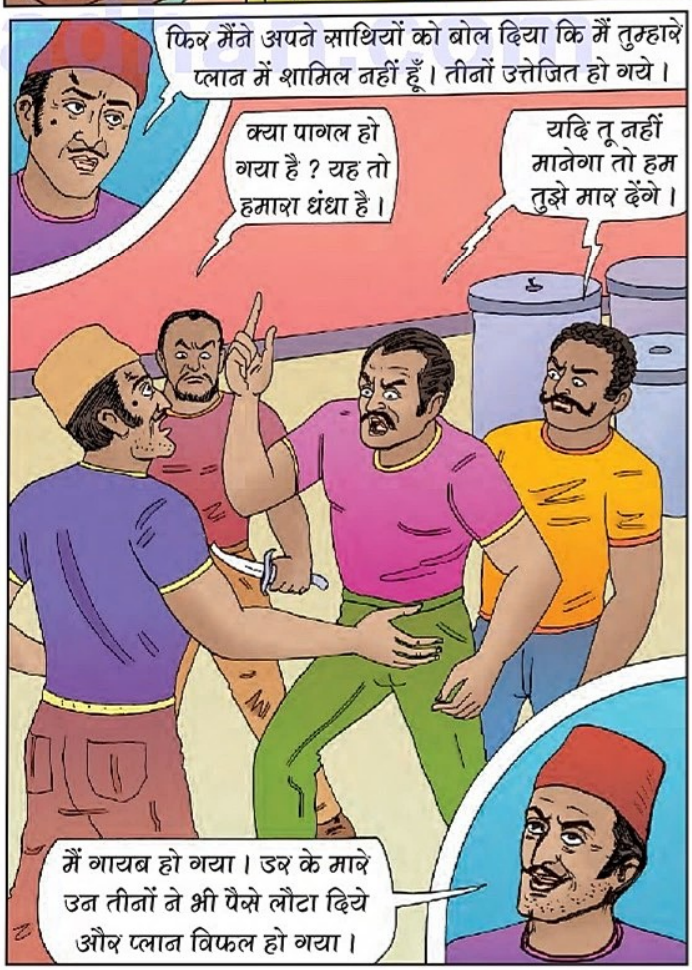

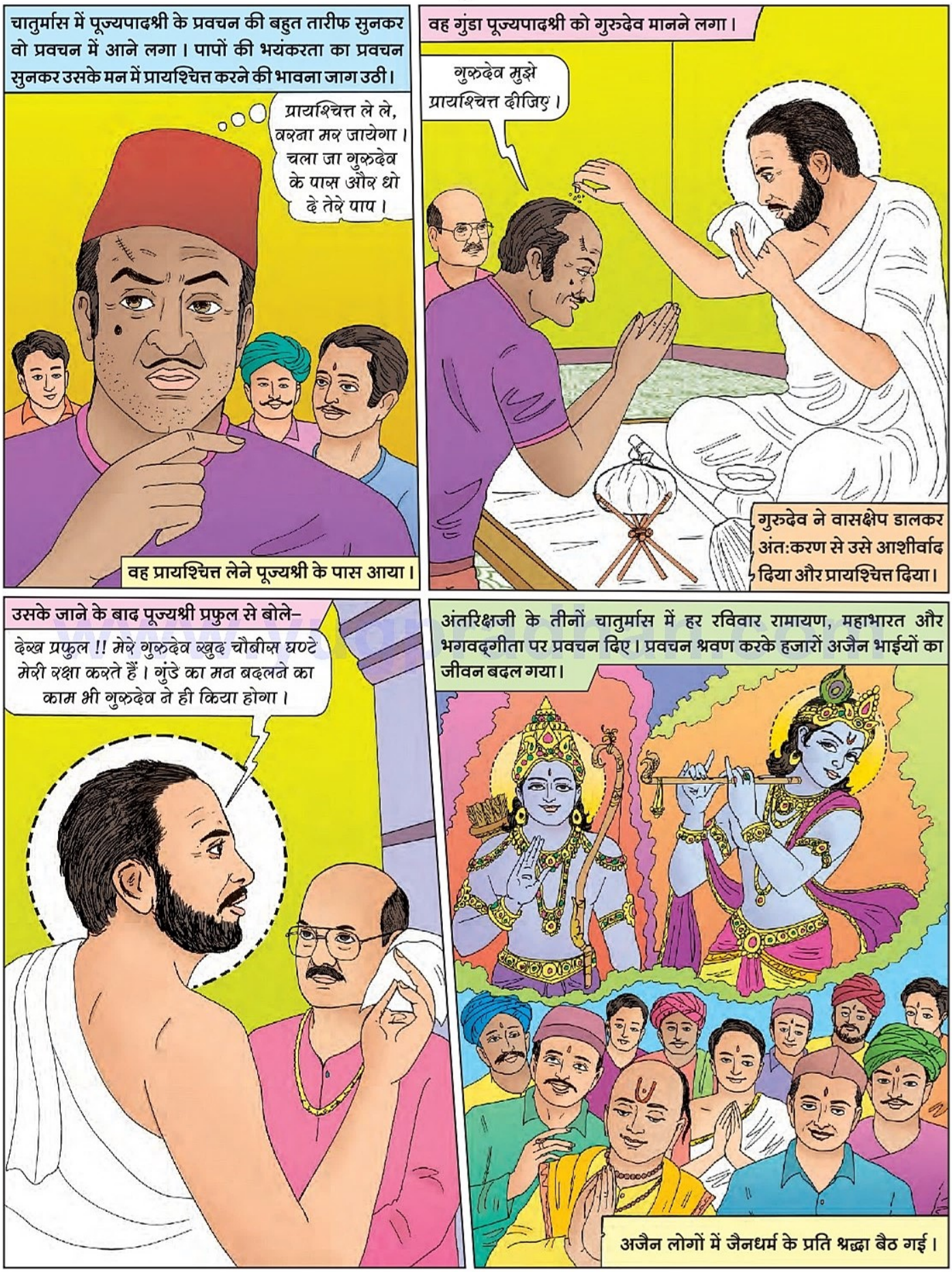
चातुर्मास में पूज्यपादश्री के प्रवचन की बहुत तारीफ सुनकर वो प्रवचन में आने लगा। पापों की भयंकरता का प्रवचन सुनकर उसके मन में प्रायश्चित्त करने की भावना जाग उठी।
प्रायश्चित्त ले ले, वरना मर जायेगा। चला जा गुरुदेव के पास और धो दे तेरे पाप।
वह प्रायश्चित्त लेने पूज्यश्री के पास आया।
वह गुंडा पूज्यपादश्री को गुरुदेव मानने लगा।
गुरुदेव मुझे प्रायश्चित्त दीजिए।
गुरुदेव ने वासक्षेप डालकर अंत:करण से उसे आशीर्वाद दिया और प्रायश्चित्त दिया।
उसके जाने के बाद पूज्यश्री प्रफुल से बोले–
देख प्रफुल !! मेरे गुरुदेव खुद चौबीस घण्टे मेरी रक्षा करते हैं। गुंडे का मन बदलने का काम भी गुरुदेव ने ही किया होगा।
अंतरिक्षजी के तीनों चातुर्मास में हर रविवार रामायण, महाभारत और भगवद्गीता पर प्रवचन दिए। प्रवचन श्रवण करके हजारों अजैन भाईयों का जीवन बदल गया।
अजैन लोगों में जैनधर्म के प्रति श्रद्धा बैठ गई।

तीन चातुर्मास में तीर्थ में शान्ति स्थापित की और रक्षा के लिए भारतभर में जागृति वंटोल फैलाया। जिन लोगों ने प्रवेश के समय पूज्यपादश्री को काली पताकायें दिखाई थीं, उन्हीं दिगम्बर भाईयों की आँखें विहार के दिन छलछला उठीं। दिगम्बर समीति के उपाध्यक्ष ने हाथ जोड़कर पूज्यश्री से कहा–

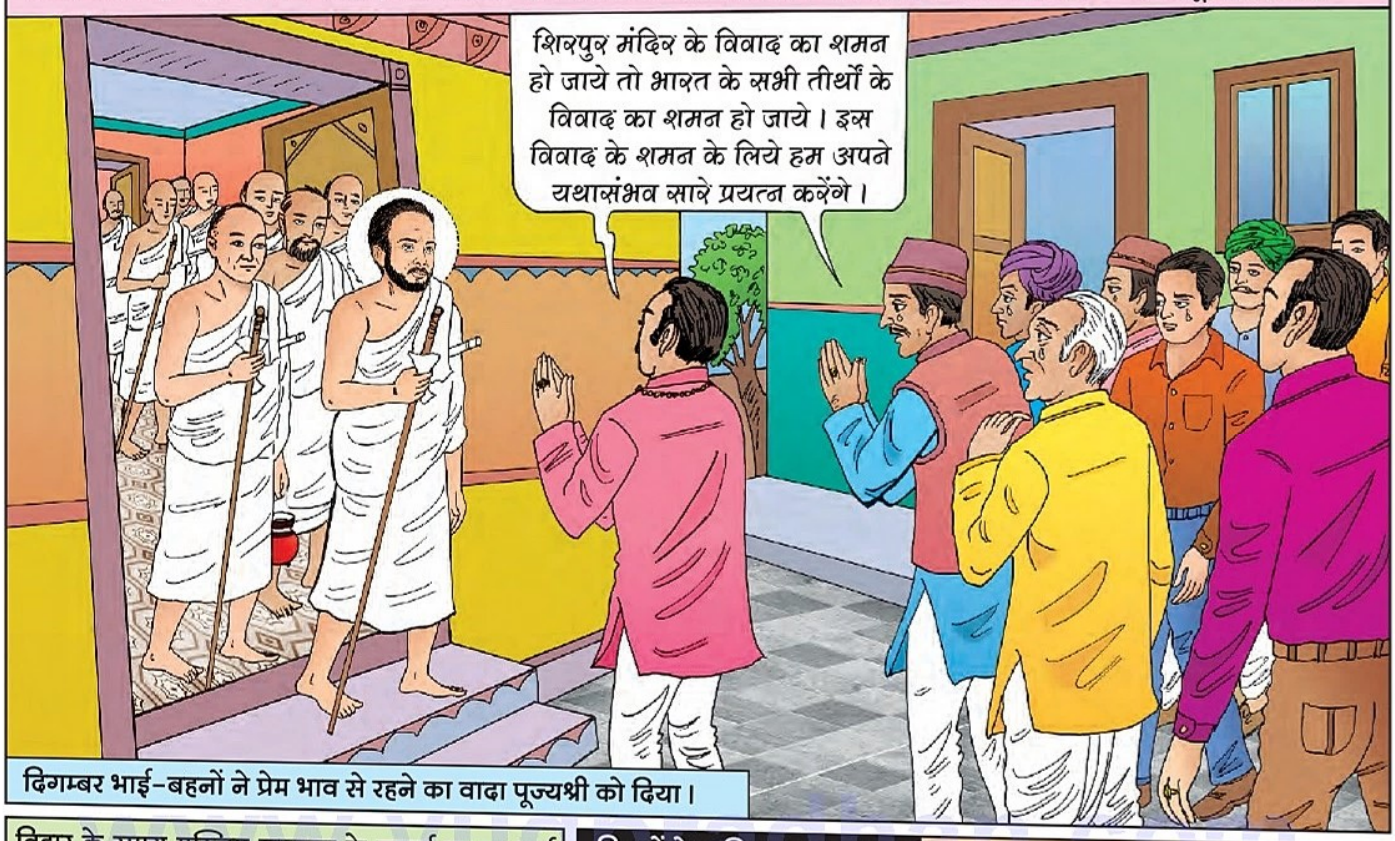

दिगम्बर भाई–बहनों ने प्रेम भाव से रहने का वादा पूज्यश्री को दिया।

विहार के समय मुस्लिम समुदाय के बुजुर्ग महमूद भाई और अजैन संत दीक्षित महाराज सिसक–सिसककर रोने लगे।

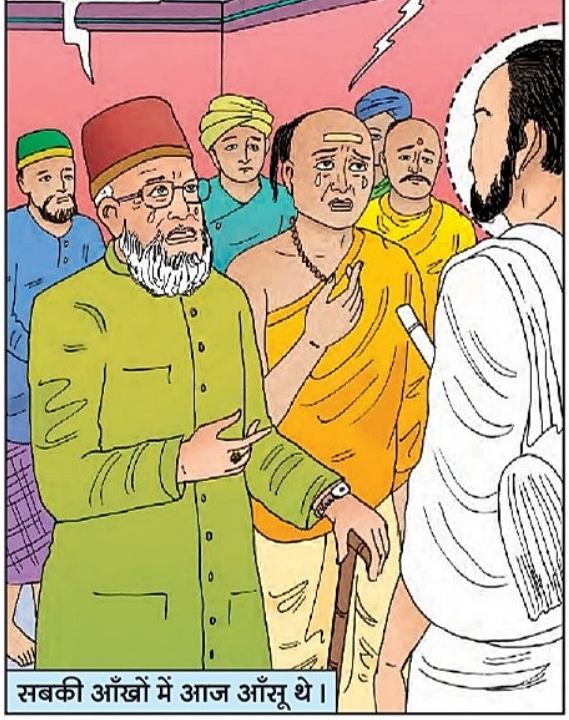

सबकी आँखों में आज आँसू थे।

शिष्यों के प्रति वात्सल्य भाव संगमनेर 5 युवाओं की दीक्षा सम्पन्न करके नूतन मुनिओं के साथ विहार हुआ। भारी ठंड में गाँव के स्कूल में पड़ाव था। रात्रि में पूज्यपादश्री की अचानक नींद खुल गई। ठंड का अहसास हुआ। वात्सल्यभाव पूर्वक अपने संथारे में बिछाई शालें उठाईं और शिष्यों को ओढ़ा दीं–

फिर वे स्वयं जप में लीन हो गये।

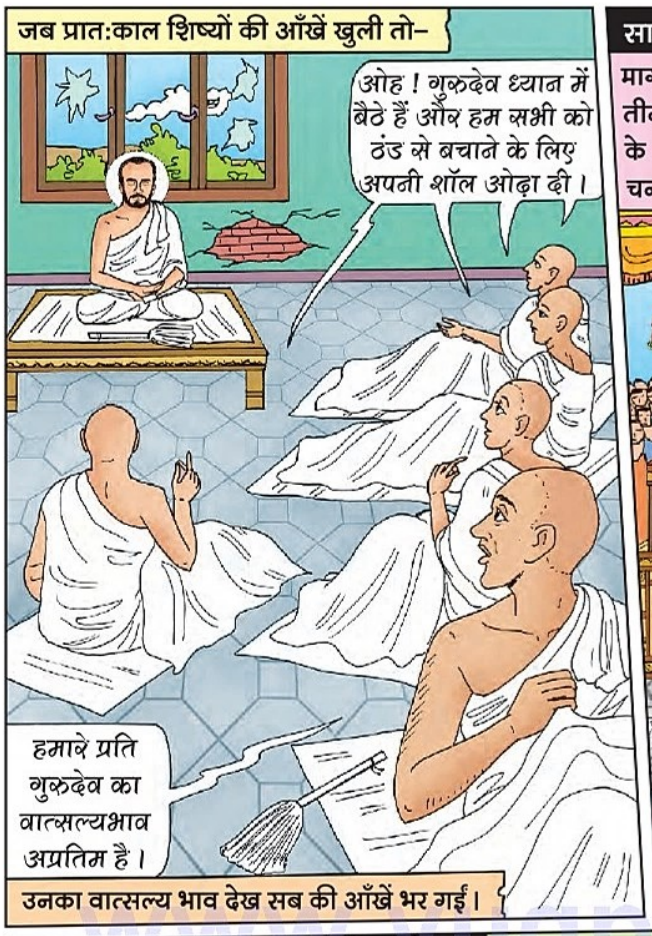
जब प्रात:काल शिष्यों की आँखें खुली तो–
ओह ! गुरुदेव ध्यान में बैठे हैं और हम सभी को ठंड से बचाने के लिए अपनी शॉल ओढ़ा दी।
हमारे प्रति गुरुदेव का वात्सल्यभाव अप्रतिम है।
उनका वात्सल्य भाव देख सब की आँखें भर गईं।

सादगी से पदवी ग्रहण तपोवन संस्कारधाम–नवसारी में ई.स. 1985 के मार्गशीर्ष सुदी दसमी के दिन दस हजार की मानवमेदनी की उपस्थिति में अपने तीन शिष्यों के दीक्षा महोत्सव पर नाण के समक्ष प्रदक्षिणा देकर अत्यंत सादगी के साथ पूज्यपादश्री ने गणी–पंन्यास पद ग्रहण किया और पंन्यास प्रवर चन्द्रशेखर विजयजी गणिवर बन गये।
उन्होंने अपने पदारोहण से सम्बन्धित किसी भी प्रकार का प्रचार नहीं करवाया, कोई पत्रिका नहीं छपवाई और कोई चढ़ावे नहीं बुलवाये। वास्तव में वे एक निस्पृह आदर्श संत पुरुष थे।

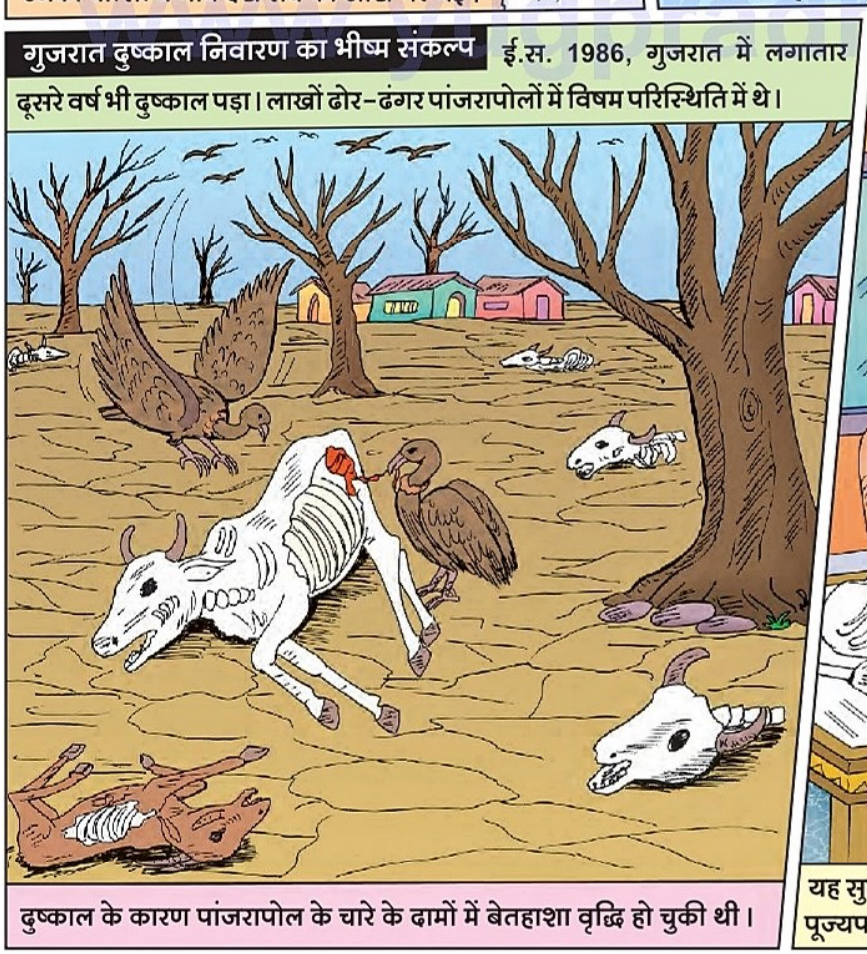
गुजरात दुष्काल निवारण का भीष्म संकल्प ई.स. 1986, गुजरात में लगातार दूसरे वर्ष भी दुष्काल पड़ा। लाखों ढोर–ढंगर पांजरापोलों में विषम परिस्थिति में थे।
दुष्काल के कारण पांजरापोल के चारे के दामों में बेतहाशा वृद्धि हो चुकी थी।

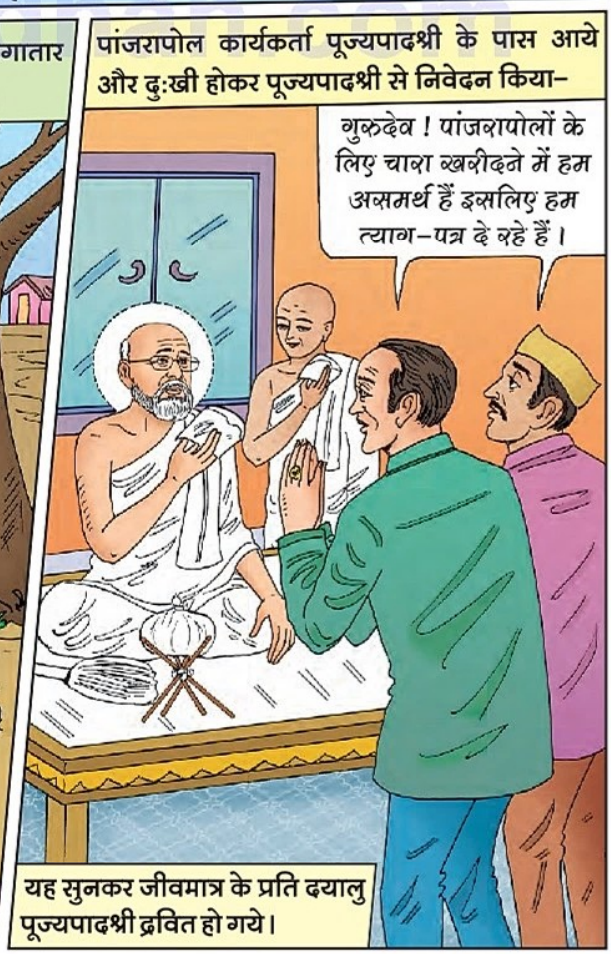
पांजरापोल कार्यकर्ता पूज्यपादश्री के पास आये और दु:खी होकर पूज्यपादश्री से निवेदन किया–
गुरुदेव ! पांजरापोलों के लिए चारा खरीदने में हम असमर्थ हैं इसलिए हम त्याग–पत्र दे रहे हैं।
यह सुनकर जीवमात्र के प्रति दयालु पूज्यपादश्री द्रवित हो गये।

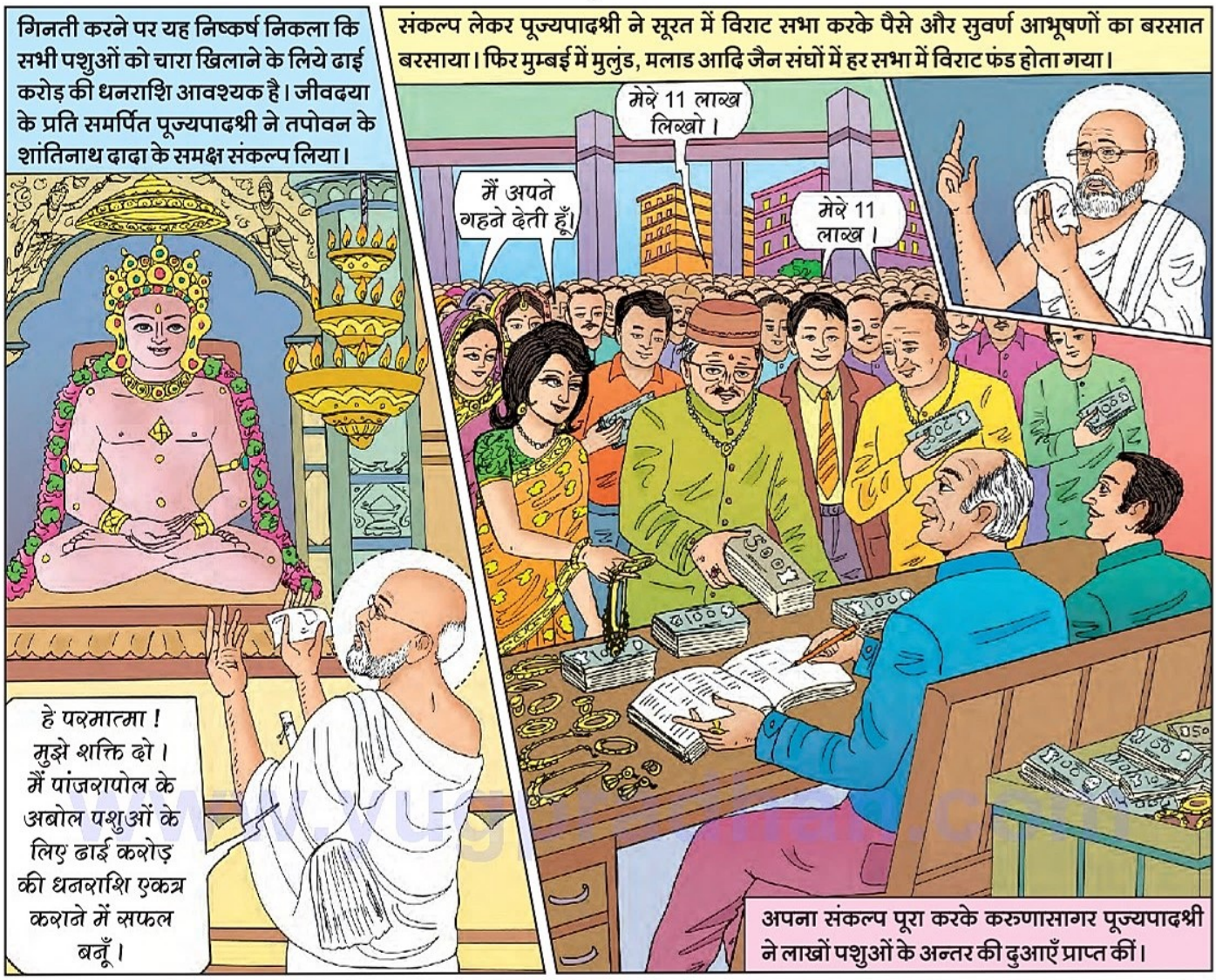
गिनती करने पर यह निष्कर्ष निकला कि सभी पशुओं को चारा खिलाने के लिये ढाई करोड़ की धनराशि आवश्यक है। जीवदया के प्रति समर्पित पूज्यपादश्री ने तपोवन के शांतिनाथ दादा के समक्ष संकल्प लिया।
हे परमात्मा ! मुझे शक्ति दो। मैं पांजरापोल के अबोल पशुओं के लिए ढाई करोड़ की धनराशि एकत्र कराने में सफल बनूँ।
संकल्प लेकर पूज्यपादश्री ने सूरत में विराट सभा करके पैसे और सुवर्ण आभूषणों का बरसात बरसाया। फिर मुम्बई में मुलुंड, मलाड आदि जैन संघों में हर सभा में विराट फंड होता गया।
मैं अपने गहने देती हूँ।
मेरे 11 लाख लिखो।
मेरे 11 लाख।
अपना संकल्प पूरा करके करुणासागर पूज्यपादश्री ने लाखों पशुओं के अन्तर की दुआएँ प्राप्त कीं।

तेरे प्रवचन मुर्दे में भी जान भर देते हैं
गच्छाधिपति श्री भुवनभानुसूरिजी रोज पूज्यपादश्री के व्याख्यान सुनने जाते थे। एक दिन अस्वस्थता के कारण आराम में थे तो पूज्यपादश्री अकेले चले गए। वापस आए तब सूरिजी ने ठपका दिया–
चन्द्रशेखर ! तुमने मुझे क्यों नहीं जगाया? मेरा आज का प्रवचन श्रवण रह गया। तेरे प्रवचन मुर्दे में भी जान भर देते हैं।
जिस सूरिजी के वैराग्यपूर्ण प्रवचनों के श्रवण से पूज्यपादश्री को वैराग्य हुआ और दीक्षा हुई, वह सूरिजी आज शिष्यतुल्य पूज्यपादश्री के प्रवचन श्रवण के लिए उत्सुक थे।

गौवंश हत्या प्रतिबंध करवाया, ई.स. 1993 प्रभु महावीर के जन्म-कल्याणक के उपलक्ष में आयोजित महासभा में पूज्यपादश्री ने विशेष अतिथि के रूप में पधारे मुख्यमंत्री श्री चीमनभाई पटेल से समग्र गुजरात में गौवंश-वध पर प्रतिबंध का कानून बनाने और उसका सख्ती से पालन करने की अपील की। पूज्यपादश्री की वेधक वाणी मुख्यमंत्री के हृदय को छू गई। उन्होंने सभा में आश्वासन दिया-

पूज्यपादश्री की पावन प्रेरणा से मुख्यमंत्री श्री चीमनभाई पटेल ने शीघ्र ही समग्र गुजरात में गौवंश-वध प्रतिबन्ध किया साथ में पर्युषण में नौ दिन कत्लखाने, करोड़ों मेंढकों का डीसेक्सन और 5,000 भेड़ों का कत्ल भी बंद करवाया। यह पूज्यपादश्री की दर्दभरी अपील का परिणाम था।

मुमुक्षुओं के वैराग्य की परीक्षा मुम्बई के अति धनवान इंजीनियर नवीनभाई मुमुक्षु के रूप में पूज्यश्री के पास थे। एक दिन संघ के प्रमुख ने पूज्यपादश्री से विनंती की-

उस भाई ने पूज्यपादश्री की आज्ञानुसार एकदम फीका खाना परोसा।

खाना खिलाने के बाद भाई रिपोर्ट देने आये-

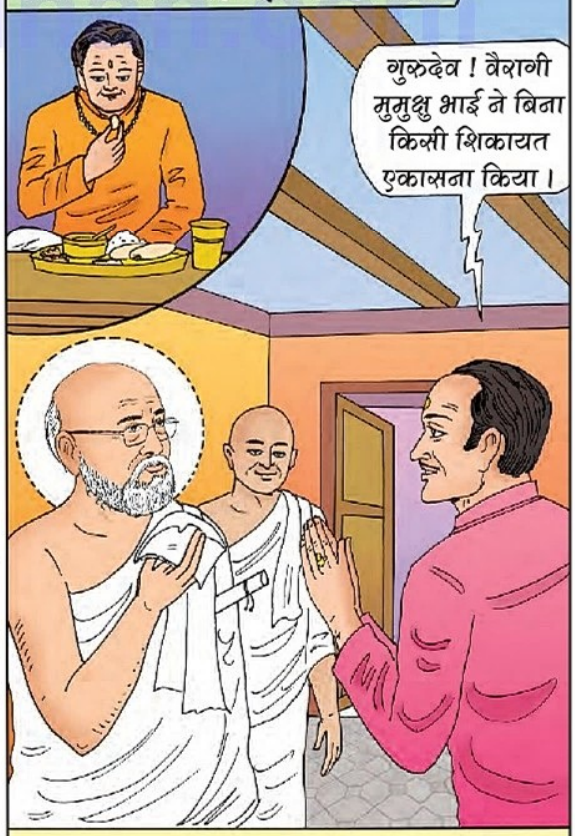

वैरागी मुमुक्षु परीक्षा में उत्तीर्ण हो गये। पूज्यपादश्री मुमुक्षुओं की कठिन परिक्षाएँ लेते थे फिर दीक्षा प्रदान करते थे।

अंतिम समाधि-दान पूज्यपादश्री ने उपकारी गच्छाधिपति श्री भुवनभानुसूरिजी की अंतिम छह मास अपूर्व सेवा की। हॉस्पीटल में साथ रहकर पूज्यपादश्री ने अंतिम समय में उत्कृष्ट समाधि-दान दिया।

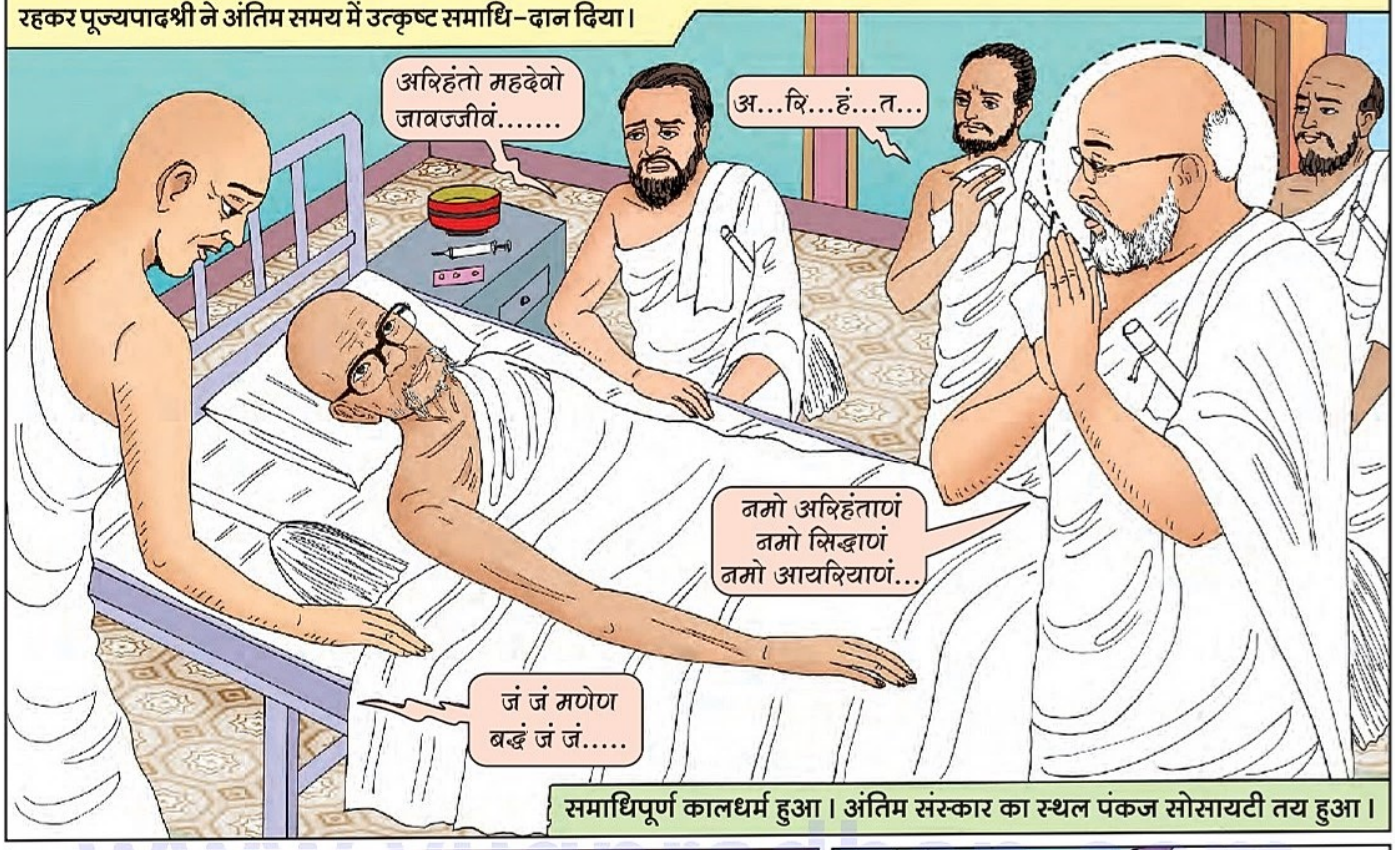

समाधिपूर्ण कालधर्म हुआ। अंतिम संस्कार का स्थल पंकज सोसायटी तय हुआ।

वात्सल्य सम्राट् महत्त्व के निर्णय लेने के लिए भारी धूप में पूज्यपादश्री एक शिष्य के साथ पंकज सोसायटी की ओर चले। बीच में तपी हुई सड़क पर नंगे पाँव चलते अपने शिष्य को देखकर पूज्यपादश्री रुक गये। वात्सल्य भाव से अपने कपड़े के दो टुकड़े करके शिष्य को पाँव में बाँधने के लिए दिए।

शिष्य ने कपड़े बाँधे तब पूज्यपादश्री को शान्ति हुई। गुरु के वात्सल्यभाव को देखकर शिष्य की आँखें हर्षाश्रु से भर गईं।

बाढ़ पीड़ितों की सहायता ई.स. 1994, कैलाश नगर, चातुर्मास के समय में सूरत में भयंकर बाढ़ आई और प्लेग की बीमारी होने लगी। करुणा के अवतार पूज्यपादश्री ने जैनों को जोरदार प्रेरणा देते हुए कहा–

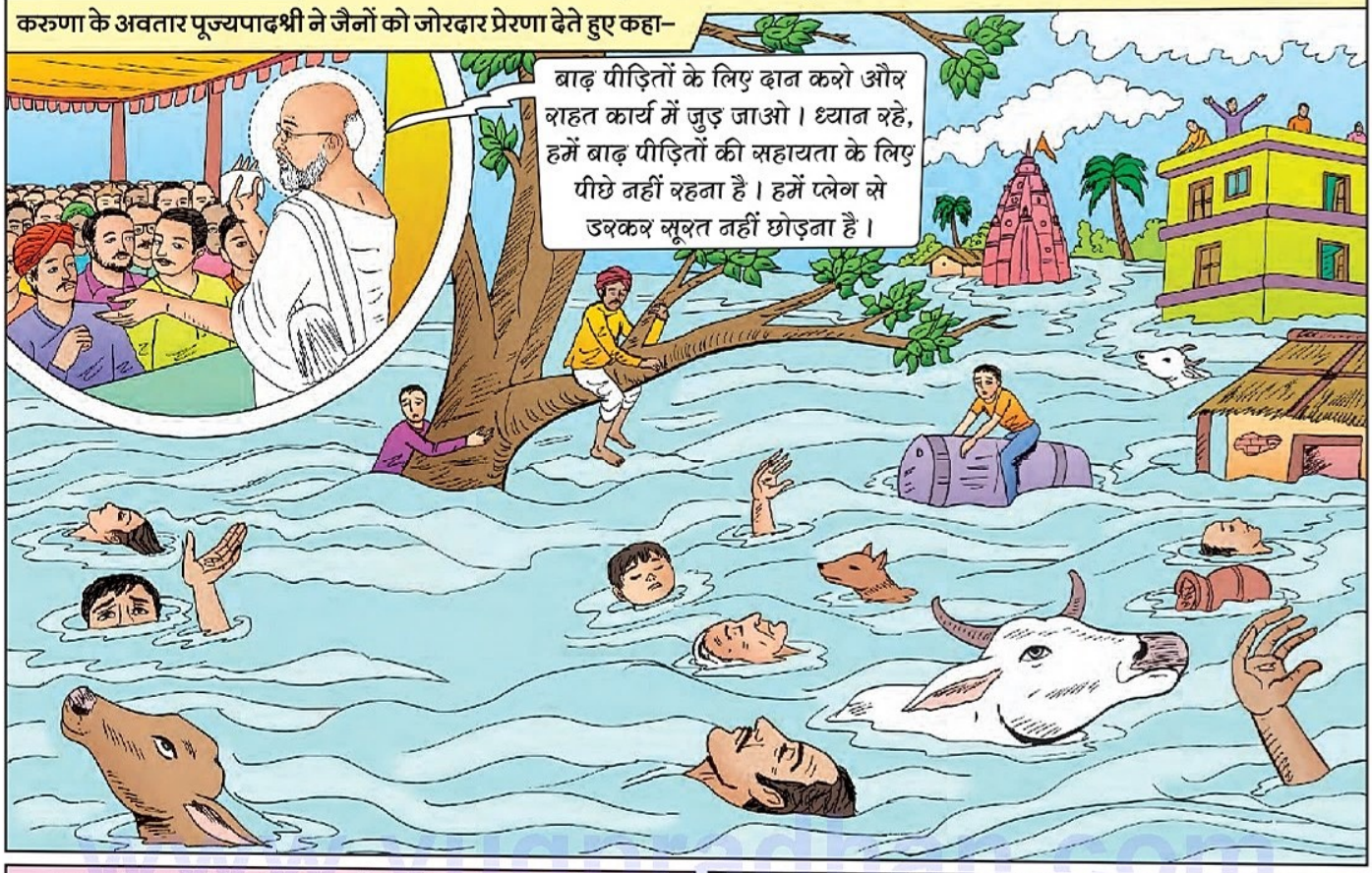

इस पावन प्रेरणा से प्रेरित होकर लाखों रुपये का दान एकत्र हो गया और करीबन 300 कार्यकर्ताओं ने हजारों बाढ़ पीड़ितों को जीवन रक्षक सामग्री उपलब्ध कराई और सुरक्षित स्थानों पर पहुँचाया।

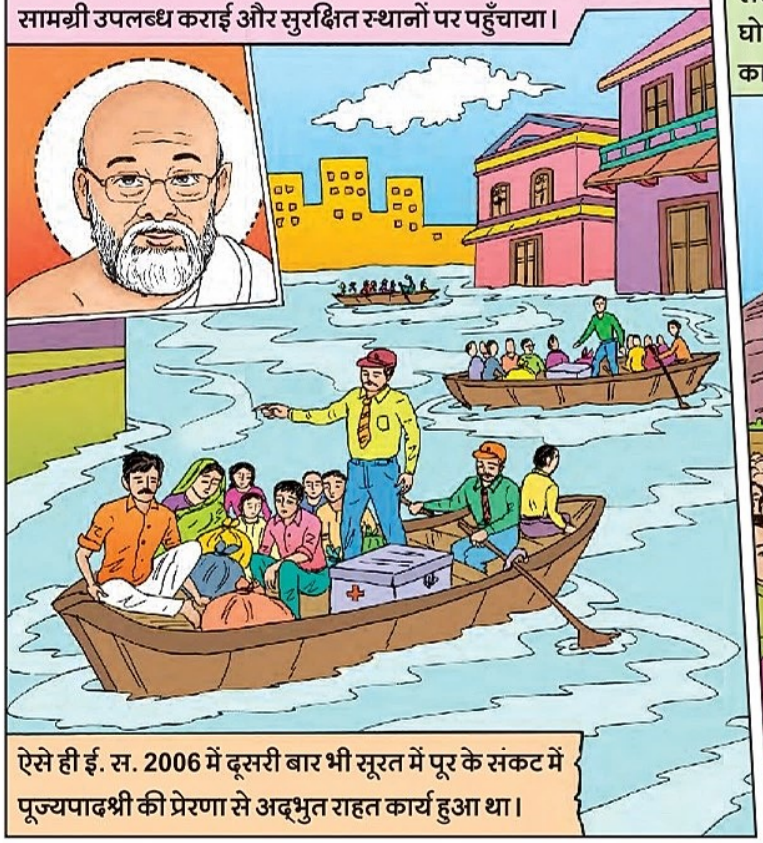

ऐसे ही ई. स. 2006 में दूसरी बार भी सूरत में पूर के संकट में पूज्यपादश्री की प्रेरणा से अद्‌भुत राहत कार्य हुआ था।

सम्मेतशिखर जी तीर्थरक्षा आंदोलन ई.स. 1994 में बिहार सरकार ने सम्मेतशिखर जी तीर्थ का पहाड़ अपने नियंत्रण में लेने की घोषणा की। पूज्यपादश्री ने इसका विरोध करने के लिये विशाल रेली का आयोजन किया। पूज्यपादश्री ने रेली में घोषणा की–

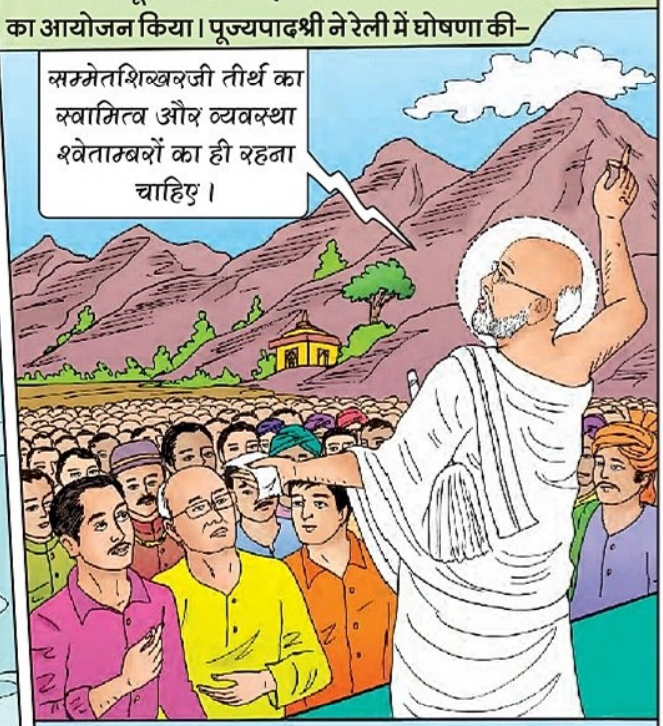

तीर्थरक्षा के उपलक्ष में एक लाख से अधिक आयंबिल तप करवाए।

मुख्यमंत्री को आह्वान पूज्यपादश्री ने गुजरात राज्य के मुख्यमंत्री चीमनभाई पटेल द्वारा वि.सं. 2049 में (चार वर्ष पूर्व) समग्र गुजरात में गौवंश-वध प्रतिबंध का अध्यादेश जारी करवाया था। चीमनभाई के जाने के बाद कायदे के अमलीकरण में लापरवाही बरती गई। गुजरात से प्रतिदिन हजारों गायें देवनार के कत्लखाने की ओर जाती थीं।

जीवदया के प्रति करुणाप्लावित पूज्यपादश्री इस बात को लेकर अत्यंत व्यथित थे।

जैनों की विराट सभा में पधारे मुख्यमंत्री शंकरसिंह वाघेला को पूज्यपादश्री ने तेज भाषा में कहा-

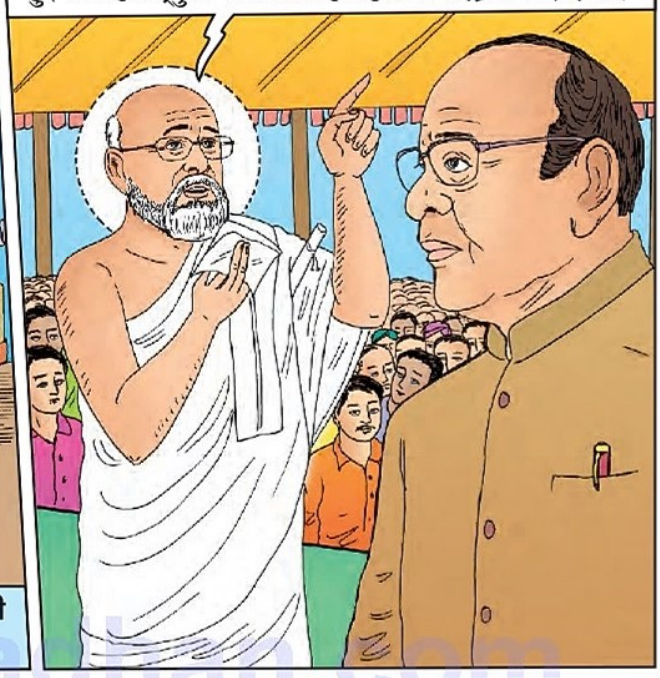

पूज्यपादश्री के पुण्यप्रभाव से मुख्यमंत्रीजी ने तत्काल प्रत्युत्तर देते हुए कहा-

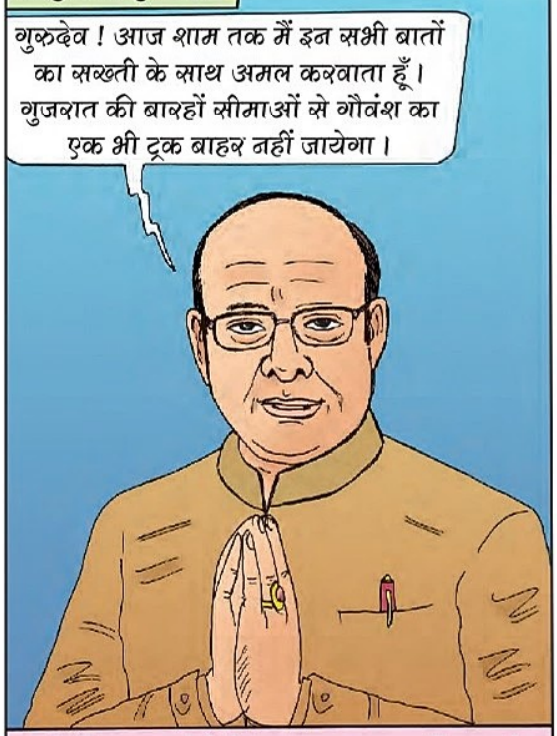

उसी दिन मुख्यमंत्री ने वचन का पालन किया और कानून का अमलीकरण शुरू हो गया।

गिरनार रोप-वे प्रोजेक्ट का स्थगन ई.स. 1999 में गुजरात सरकार ने तीर्थ पर 36 करोड़ की लागत से रोप-वे बनाने का प्रोजेक्ट घोषित किया। गिरनार तीर्थ के जैन-अजैन भक्तों में इस बात को लेकर भारी विरोध हुआ।

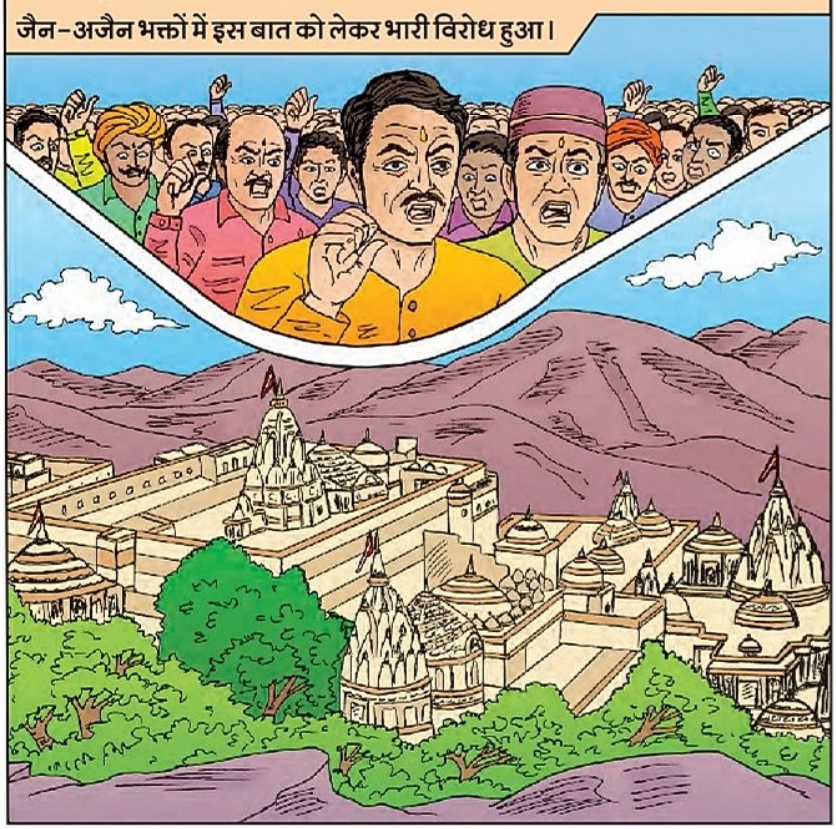

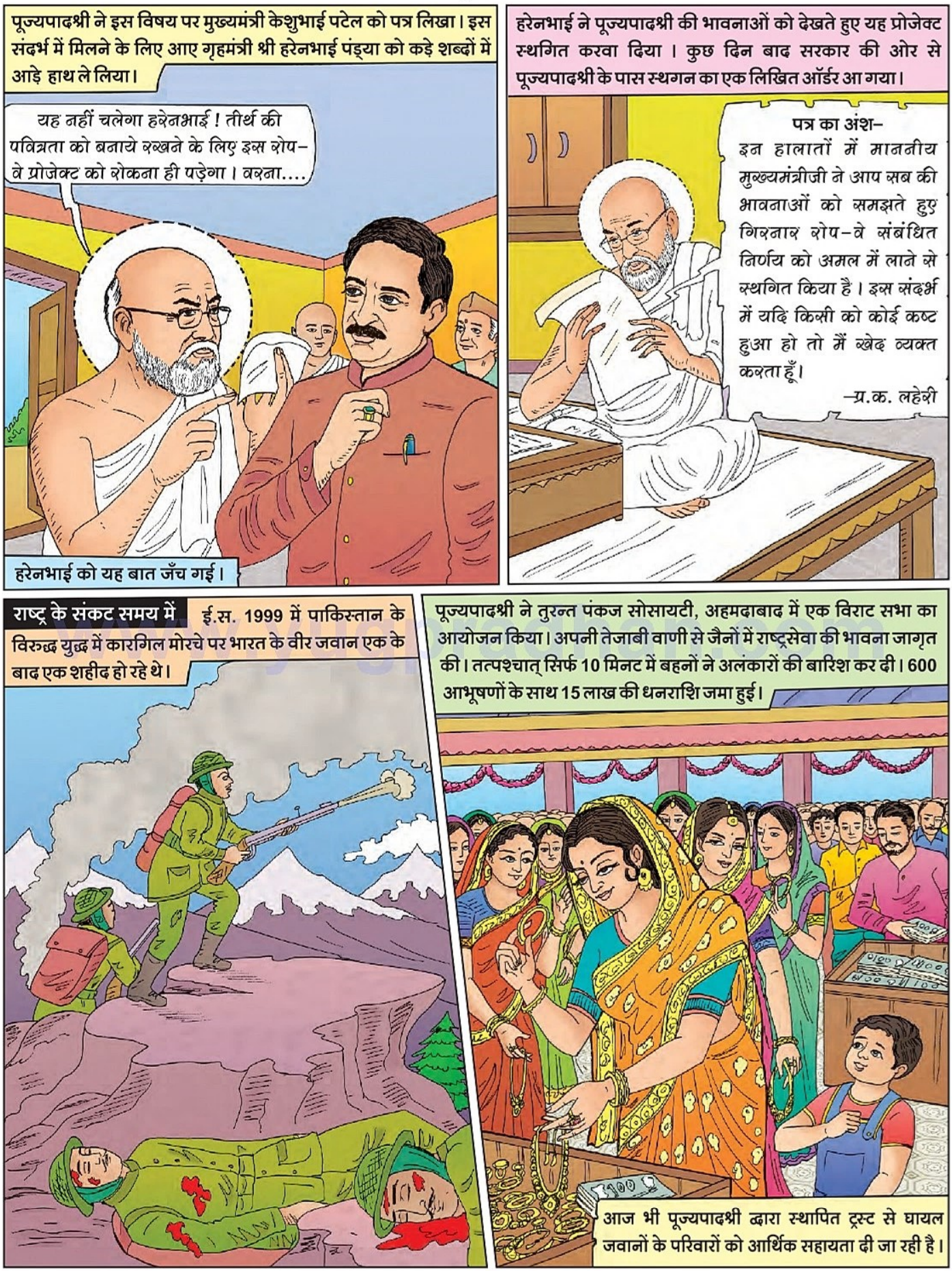
पूज्यपादश्री ने इस विषय पर मुख्यमंत्री केशुभाई पटेल को पत्र लिखा। इस संदर्भ में मिलने के लिए आए गृहमंत्री श्री हरेनभाई पंड्या को कड़े शब्दों में आड़े हाथ ले लिया।
यह नहीं चलेगा हरेनभाई ! तीर्थ की पवित्रता को बनाये रखने के लिए इस रोप-वे प्रोजेक्ट को रोकना ही पड़ेगा। वरना....
हरेनभाई को यह बात जँच गई।
हरेनभाई ने पूज्यपादश्री की भावनाओं को देखते हुए यह प्रोजेक्ट स्थगित करवा दिया। कुछ दिन बाद सरकार की ओर से पूज्यपादश्री के पास स्थगन का एक लिखित ऑर्डर आ गया।
पत्र का अंश-
इन हालातों में माननीय मुख्यमंत्रीजी ने आप सब की भावनाओं को समझते हुए गिरनार रोप-वे संबंधित निर्णय को अमल में लाने से स्थगित किया है। इस संदर्भ में यदि किसी को कोई कष्ट हुआ हो तो मैं खेद व्यक्त करता हूँ।
-प्र.क. लहेरी
राष्ट्र के संकट समय में
ई.स. 1999 में पाकिस्तान के विरुद्ध युद्ध में कारगिल मोरचे पर भारत के वीर जवान एक के बाद एक शहीद हो रहे थे।
पूज्यपादश्री ने तुरन्त पंकज सोसायटी, अहमदाबाद में एक विराट सभा का आयोजन किया। अपनी तेजाबी वाणी से जैनों में राष्ट्रसेवा की भावना जागृत की। तत्पश्चात् सिर्फ 10 मिनट में बहनों ने अलंकारों की बारिश कर दी। 600 आभूषणों के साथ 15 लाख की धनराशि जमा हुई।
आज भी पूज्यपादश्री द्वारा स्थापित ट्रस्ट से घायल जवानों के परिवारों को आर्थिक सहायता दी जा रही है।

भूकम्प-राहत कार्य ई.स. 2001 में गुजरात भूकम्प की चपेट में आया। कच्छ, काठियावाड़ और अहमदाबाद में बहुत विनाश हुआ। करुणा सागर पूज्यपादश्री ने अहमदाबाद में विशाल सभा का आयोजन करके अपनी दर्दभरी वाणी से सबको संवेदित किया। कुछ ही देर में 4 करोड़ की विशाल धनराशि जमा हो गई और 170 नवयुवा राहत कार्य में जुड़ गये।

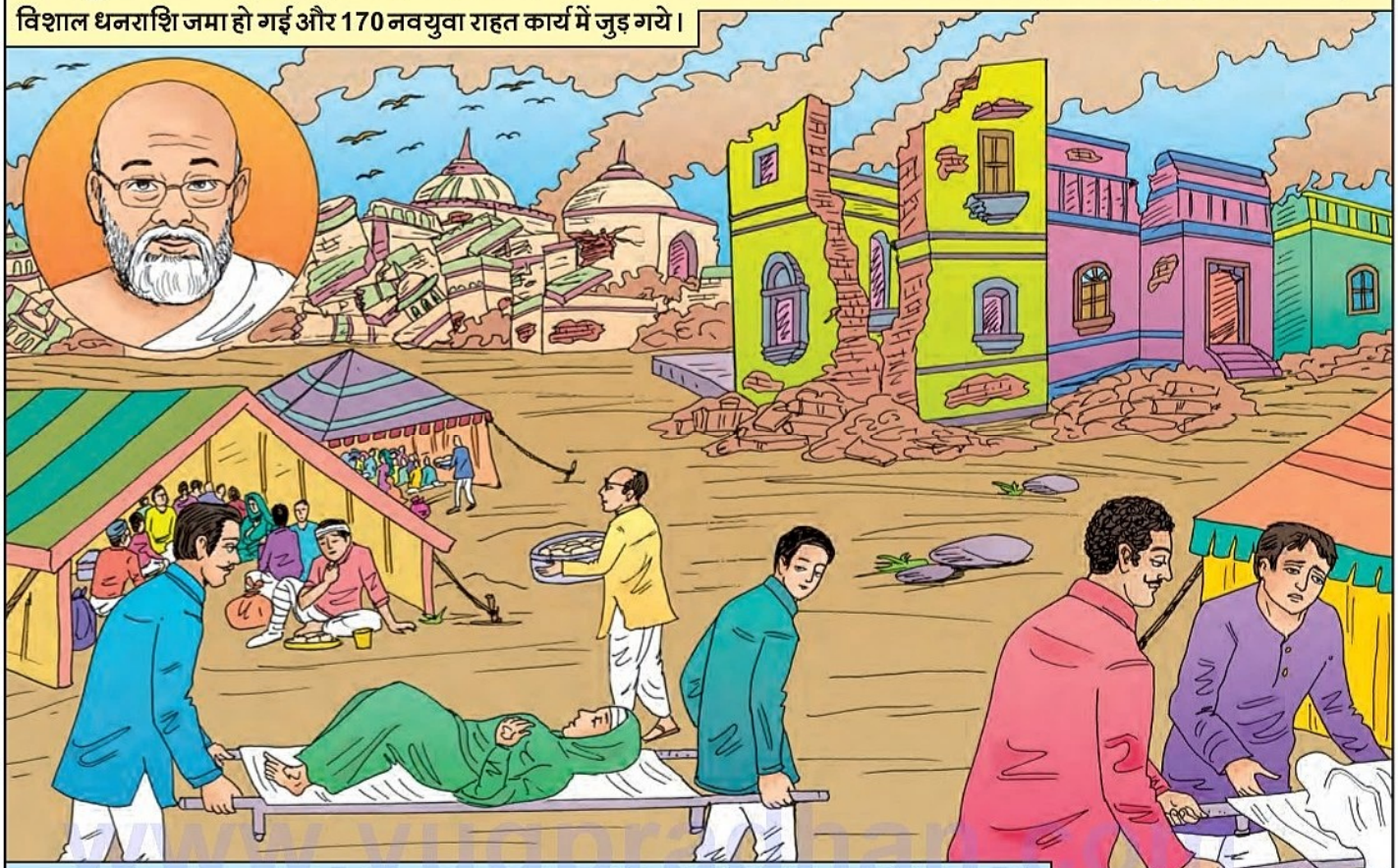

भूकम्प राहत द्वारा शासन प्रभावना के साथ-साथ पूज्यपादश्री ने अनेकों से हार्दिक दुआएँ भी प्राप्त कीं।

चन्द्रशेखर ! तुमने आज जीवन दान दिया ई.स. 2002, एक दिन दोपहर के समय एक श्रावक पूज्यपादश्री के पास आया और बोला-

यह बात सुनकर पूज्यपादश्री को गहरा दुःख हुआ।

पूज्यपादश्री ने मुनिश्री पर सांत्वना भरा पत्र लिखा-

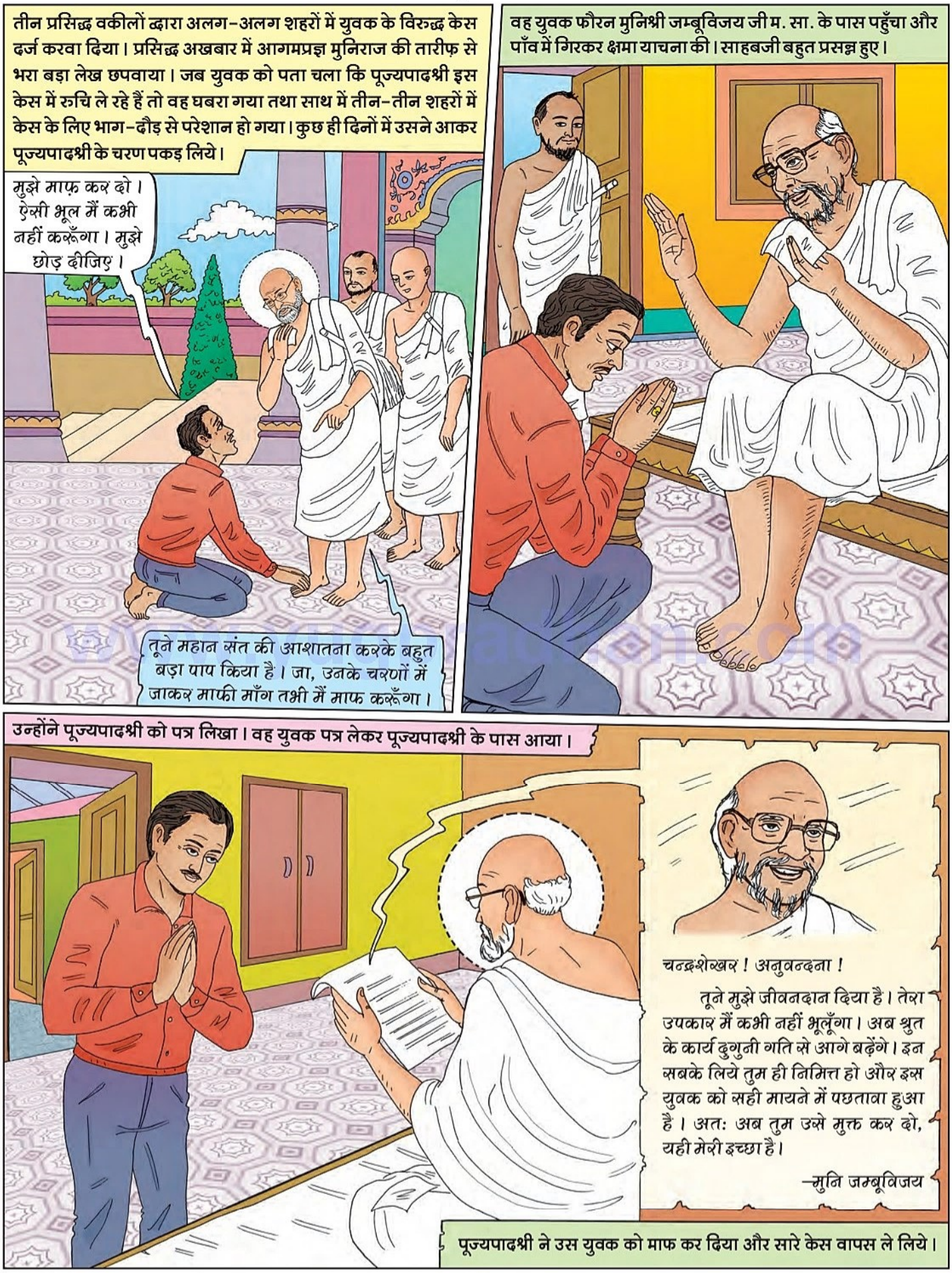
तीन प्रसिद्ध वकीलों द्वारा अलग-अलग शहरों में युवक के विरुद्ध केस दर्ज करवा दिया। प्रसिद्ध अखबार में आगमप्रज्ञ मुनिराज की तारीफ़ से भरा बड़ा लेख छपवाया। जब युवक को पता चला कि पूज्यपादश्री इस केस में रुचि ले रहे हैं तो वह घबरा गया तथा साथ में तीन-तीन शहरों में केस के लिए भाग-दौड़ से परेशान हो गया। कुछ ही दिनों में उसने आकर पूज्यपादश्री के चरण पकड़ लिये।
मुझे माफ़ कर दो। ऐसी भूल मैं कभी नहीं करूँगा। मुझे छोड़ दीजिए।
तूने महान संत की आशातना करके बहुत बड़ा पाप किया है। जा, उनके चरणों में जाकर माफी माँग तभी मैं माफ करूँगा।
वह युवक फौरन मुनिश्री जम्बूविजय जी म. सा. के पास पहुँचा और पाँव में गिरकर क्षमा याचना की। साहबजी बहुत प्रसन्न हुए।
उन्होंने पूज्यपादश्री को पत्र लिखा। वह युवक पत्र लेकर पूज्यपादश्री के पास आया।
चन्द्रशेखर! अनुवन्दना!
तूने मुझे जीवनदान दिया है। तेरा उपकार मैं कभी नहीं भूलूँगा। अब श्रुत के कार्य दुगुनी गति से आगे बढ़ेंगे। इन सबके लिये तुम ही निमित्त हो और इस युवक को सही मायने में पछतावा हुआ है। अतः अब तुम उसे मुक्त कर दो, यही मेरी इच्छा है।
-मुनि जम्बूविजय
पूज्यपादश्री ने उस युवक को माफ कर दिया और सारे केस वापस ले लिये।

56 हजार कत्लखानों का विरोध दसवीं पंचवर्षीय योजना में भारत सरकार ने भारतभर में नये 56 हजार कत्लखाने निर्मित करने की विस्तृत रिपोर्ट तैयार की। अति क्रूरतापूर्ण रिपोर्ट को पढ़कर पूज्यपादश्री काँप उठे। उन्होंने भारत सरकार के खिलाफ़ आन्दोलन छेड़ दिया और राजनेताओं को बुलाकर इस विषय पर चर्चा की। सभी का एकमत था–

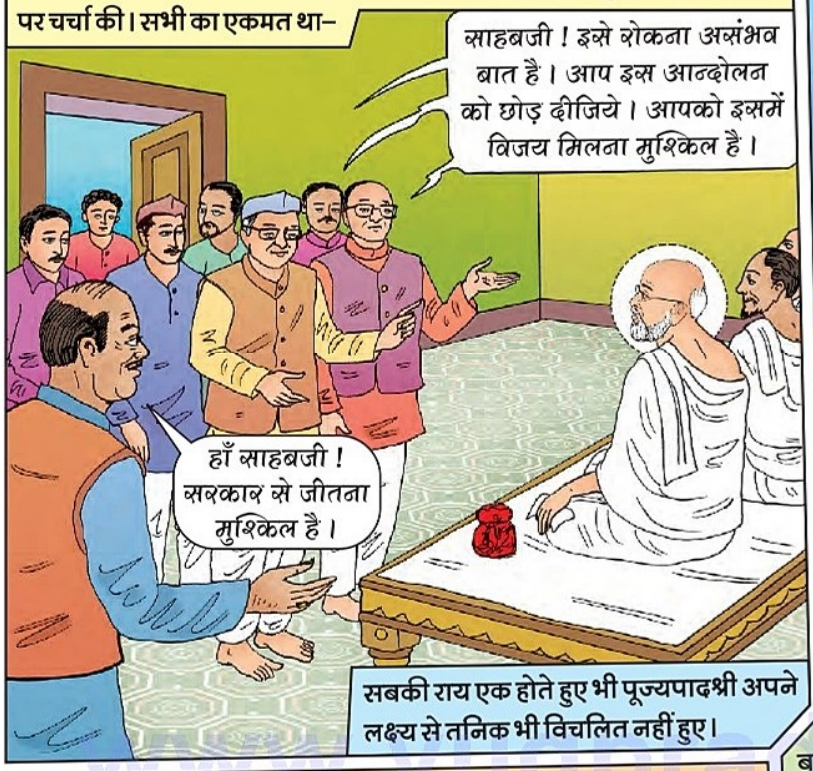

सबकी राय एक होते हुए भी पूज्यपादश्री अपने लक्ष्य से तनिक भी विचलित नहीं हुए।

आन्दोलन में गति लाने के लिए पूज्यपादश्री ने एक प्रेस कॉन्फ्रेंस बुलाकर घोषणा की–

सुर्खियों के साथ अखबारों में आत्मविलोपन की खबरें छपीं। इस चेतावनी से आन्दोलन को दुगुनी गति प्राप्त हुई।

तपोवन में 400 बच्चों के साथ भव्य अष्टप्रकारी पूजा चल रही थी। तब केन्द्रीय रक्षामंत्री हरिनभाई पाठक वहाँ पहुँचे। पूज्यपादश्री ने अश्रुपूरित नेत्रों से पशुओं का कत्ल रोकने के लिए हरिनभाई से दर्दभरी विनती की–

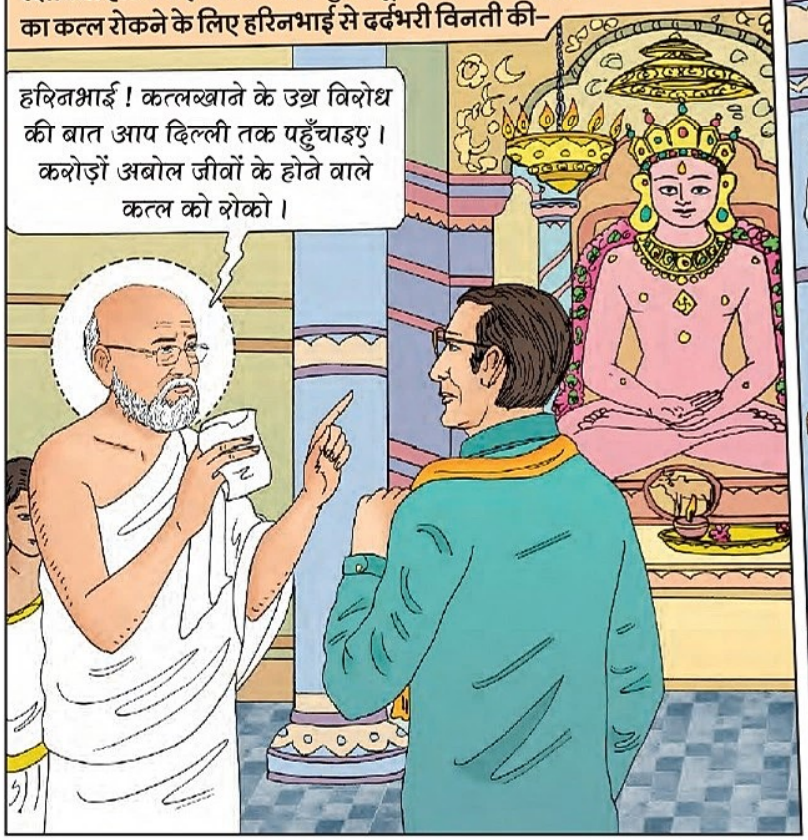

पूज्यपादश्री के आत्मविलोपन की दर्दपूर्ण बातें सुनकर बच्चे ज़ोर-ज़ोर से रोने लगे। कुछ बच्चे रोते-रोते हरिनभाई से बोले–

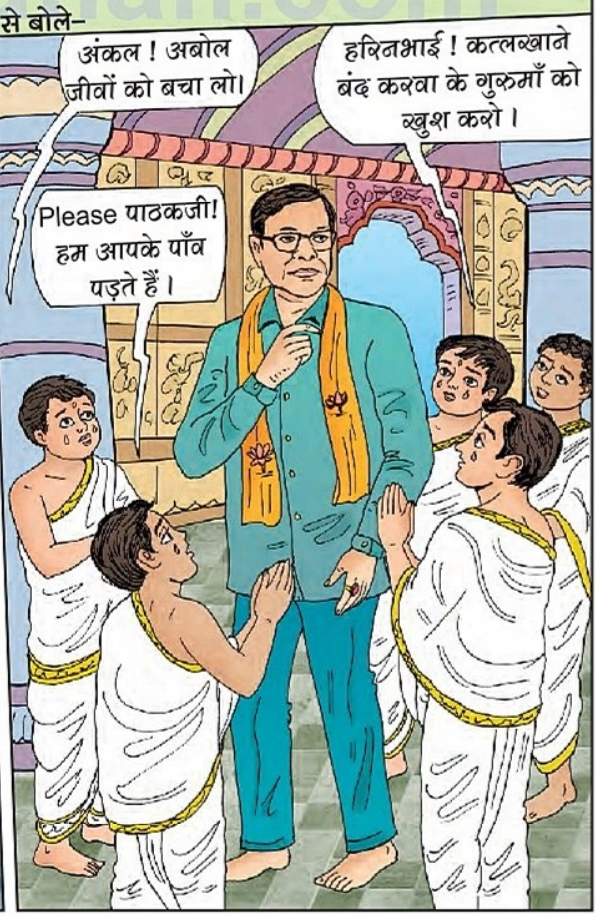

हरिनभाई का हृदय द्रवित हो गया। वे जोश से बोले–

दिल्ली पहुँचकर हरिनभाई ने प्रधानमंत्री श्री अटलबिहारी बाजपेयी जी को पूज्यश्री के आत्मविलोपन के निर्णय से अवगत कराया। प्रधानमंत्री जी ने रिपोर्ट पर रोक लगाने का आश्वासन दिया।

एक महिने बाद ही पूज्यपादश्री के पास केन्द्र सरकार का आश्वासन पत्र आ गया। जीवदया प्रेमियों की विजय हुई। बड़े-बड़े अखबारों की हेडलाइन में खबर छपी–

पूज्यपादश्री के प्रचण्ड पुण्योदय से असंभव कार्य सम्भव हुआ।

गच्छाधिपति के आदेश पालन में चुस्त पूज्यश्री

पूज्यपादश्री का ई.स. 2003 का चातुर्मास पालीताणा निश्चित हो गया था। करीब 350 साधु-साध्वीवृंद पूज्यपादश्री की वाचना लेने के लिए पालीताणा चातुर्मास करने वाले थे। एक दिन गच्छाधिपति का पत्र आया–

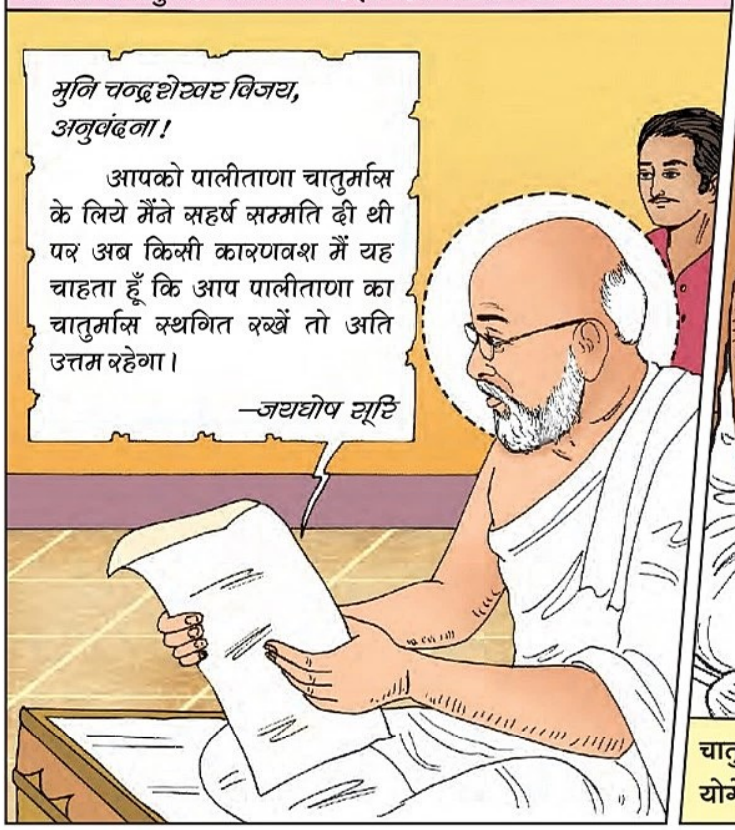

पूज्यपादश्री ने फौरन ही गच्छाधिपति के नाम पत्र लिखकर चातुर्मास रद्द करने की स्वीकृति दे दी।

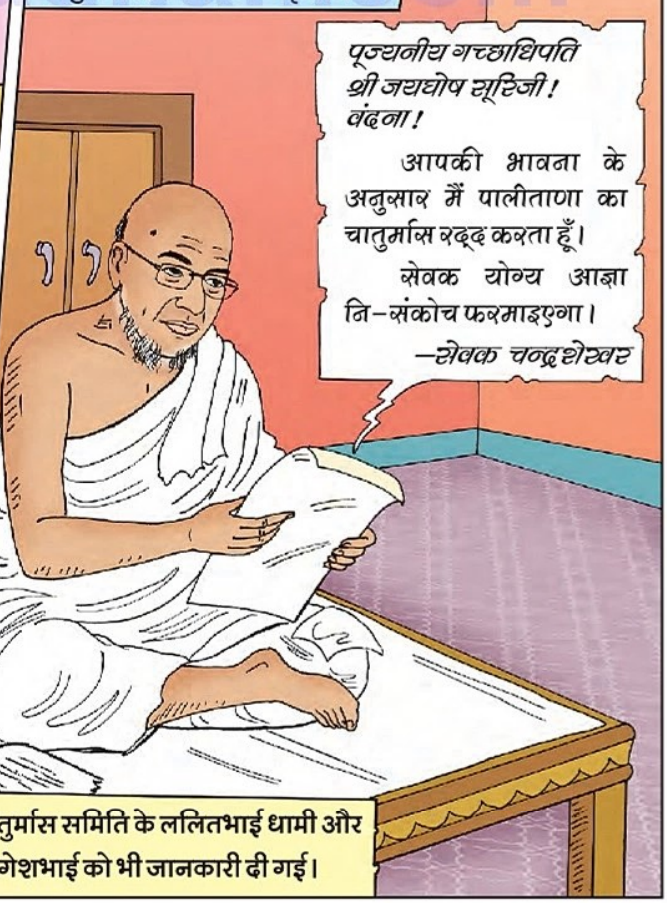

चातुर्मास समिति के ललितभाई धामी और योगेशभाई को भी जानकारी दी गई।

ललितभाई और योगेश भाई पूज्यपादश्री के पास पहुँचे और विनंती की–

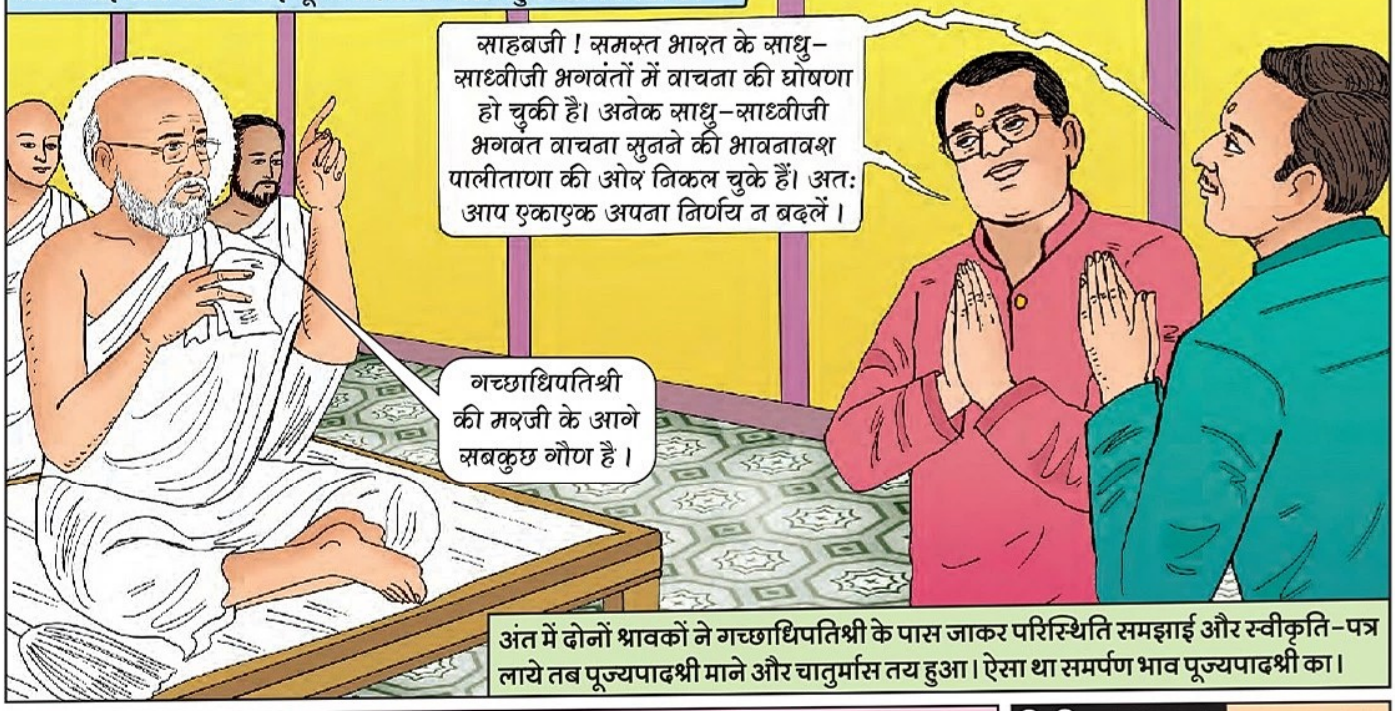

अंत में दोनों श्रावकों ने गच्छाधिपतिश्री के पास जाकर परिस्थिति समझाई और स्वीकृति-पत्र लाये तब पूज्यपादश्री माने और चातुर्मास तय हुआ। ऐसा था समर्पण भाव पूज्यपादश्री का।

गिरिराज की गोद में..... संयमी के संयम जीवन का स्तर ऊपर उठेगा तो ही धर्म और संस्कृति पर आई हुई आपदाएँ टलेंगी। इस बात को ध्यान में रखकर पूज्यपादश्री ने साधु-साध्वीजी भगवंत की पालीताणा में चातुर्मासिक वाचना श्रेणी का आयोजन किया। चार महीने तक 41 शिष्यगण, 350 साध्वी जी भगवंत और 50 मुमुक्षुओं को वैराग्यसभर वाचना का दान करके संयम की शुद्धि और वृद्धि की।

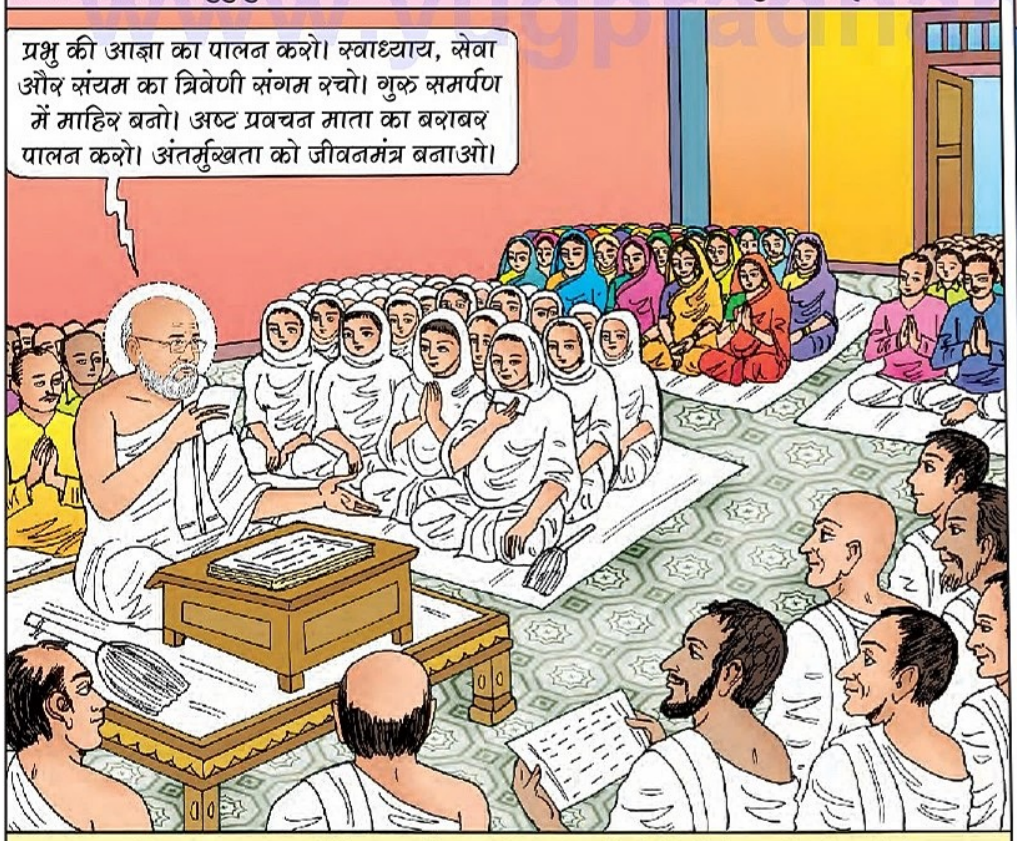

इस तरह अनेक बार पूज्यपादश्री ने मास-दो मास की वाचना श्रेणी भी की है। सर्वविरतिधरों को वाचना दान का यह कार्य शायद इस शताब्दी का और उनके समस्त कार्यों में सर्वातिश्रेष्ठ कार्य होगा।

विरतिदूत का प्रारम्भ वाचना श्रेणी के बाद भी हर महिने संयमीओं को पूज्यपादश्री की वैराग्यसभर वाचनाएँ मिलती रहे, इस उद्देश्य से विरतिदूत मासिक की शुरूआत हुई।

ई.स. 2003 से शुरू हुआ यह मासिक आज 14 साल से विरतिधरों को वैराग्य का खजाना दे रहा है।

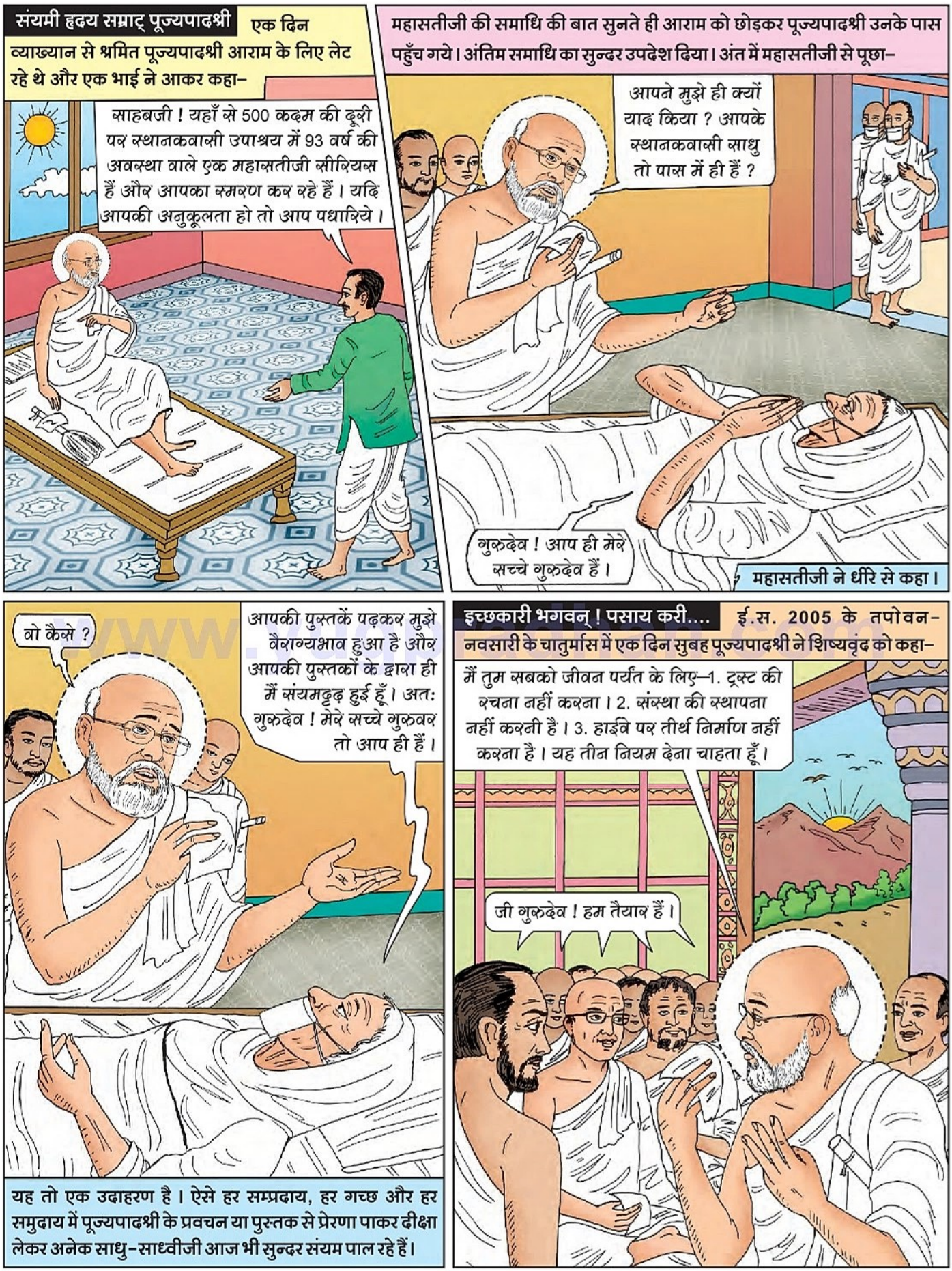
संयमी हृदय सम्राट् पूज्यपादश्री
एक दिन व्याख्यान से श्रमित पूज्यपादश्री आराम के लिए लेट रहे थे और एक भाई ने आकर कहा–
साहबजी ! यहाँ से 500 कदम की दूरी पर स्थानकवासी उपाश्रय में 93 वर्ष की अवस्था वाले एक महासतीजी सीरियस हैं और आपका स्मरण कर रहे हैं। यदि आपकी अनुकूलता हो तो आप पधारिये।
महासतीजी की समाधि की बात सुनते ही आराम को छोड़कर पूज्यपादश्री उनके पास पहुँच गये। अंतिम समाधि का सुन्दर उपदेश दिया। अंत में महासतीजी से पूछा–
आपने मुझे ही क्यों याद किया ? आपके स्थानकवासी साधु तो पास में ही हैं ?
गुरुदेव ! आप ही मेरे सच्चे गुरुदेव हैं।
महासतीजी ने धीरे से कहा।
वो कैसे ?
आपकी पुस्तकें पढ़कर मुझे वैराग्यभाव हुआ है और आपकी पुस्तकों के द्वारा ही मैं संयमदृढ़ हुई हूँ। अतः गुरुदेव ! मेरे सच्चे गुरुवर तो आप ही हैं।
यह तो एक उदाहरण है। ऐसे हर सम्प्रदाय, हर गच्छ और हर समुदाय में पूज्यपादश्री के प्रवचन या पुस्तक से प्रेरणा पाकर दीक्षा लेकर अनेक साधु-साध्वीजी आज भी सुन्दर संयम पाल रहे हैं।
इच्छकारी भगवन् ! पसाय करी....
ई.स. 2005 के तपोवन-नवसारी के चातुर्मास में एक दिन सुबह पूज्यपादश्री ने शिष्यवृंद को कहा–
मैं तुम सबको जीवन पर्यंत के लिए–1. ट्रस्ट की रचना नहीं करना। 2. संस्था की स्थापना नहीं करनी है। 3. हाईवे पर तीर्थ निर्माण नहीं करना है। यह तीन नियम देना चाहता हूँ।
जी गुरुदेव ! हम तैयार हैं।

इसके बाद तुरन्त ही सभी समर्पित शिष्य खड़े हो गये और वंदना करके एक साथ बोले–
इच्छकारी भगवन् ! पसाय करी...। पच्चक्खाण का आदेश दीजिये ।
धारणा अभिग्रहं..... वोसिरइ
शिष्यों के संयम की हमेशा चिंता करते पूज्यपादश्री ने सबको नियम दे दिए।
इधर तो भरपेट खाना मिलता है...
एक बार पूज्यपादश्री उस अन्नक्षेत्र (सुरत) की मुलाकात के लिये खुद गये। पंगत के मध्य में बैठे हुए एक मुस्लिम से उन्होंने पूछा–
तुमको मस्जिद पर खैरात तो मिलती है, तो फिर इधर क्यों आते हो ?
मुसलमान ने खड़े होकर दोनों हाथ जोड़कर नमन करते हुए कहा–
ओलियाजी ! खैरात तो मिलती है, उससे पेट नहीं भरता । इधर तो पेट भर खाना मिलता है ।
जय महावीर ! जय महावीर !
पूज्यपादश्री की प्रेरणा से भारतभर में ऐसे करीबन 250 खिचड़ीघर चल रहे हैं। ये खिचड़ीघर अजैनों के हृदय में प्रभु महावीर बसाकर शासन प्रभावना के केन्द्र बन गये हैं।
पंकज सोसाइटी चातुर्मास की विशेषताएँ
ई. स. 2005 का चातुर्मास पंकज सोसाइटी में था। एक बार अगस्त माह में गुजरात के मुख्यमंत्री (वर्तमान में भारत के प्रधानमंत्री) श्री नरेन्द्रभाई मोदी पूज्यश्री के दर्शनार्थ पधारे।
गुरुदेव ! मैं अठारह साल का था, तब से आपके सम्पर्क में हूँ। मैं आपश्री की कलम से निसृत राजनीति एवं संस्कृति से सम्बन्धित पुस्तकें आज भी पढ़ता हूँ।

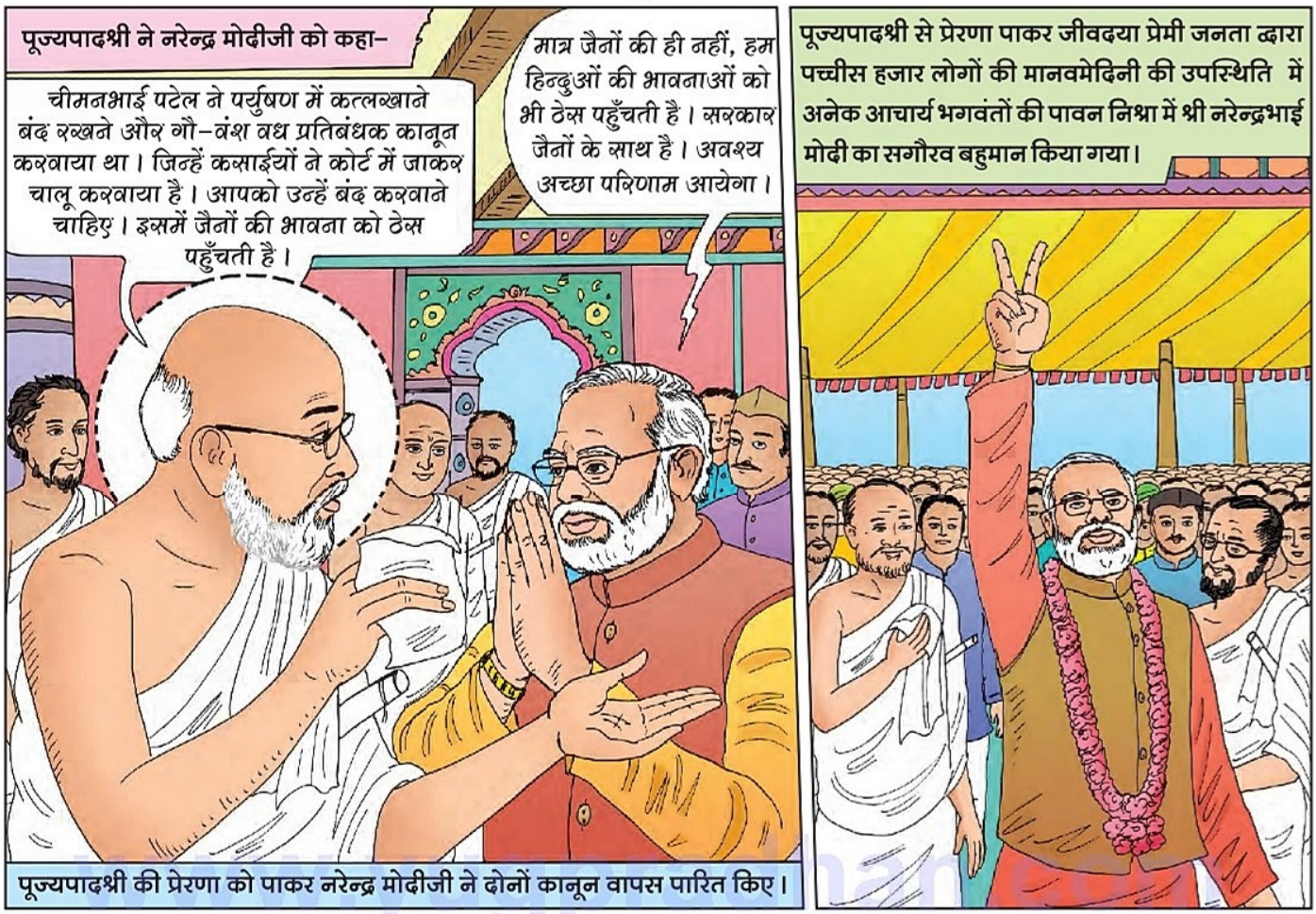

मेरी तस्वीर नीचे उतारो ई.स. 2005, उमरा (सूरत) में चातुर्मास प्रवेश के दिन व्याख्यान हॉल खचाखच भरा था। पूज्यपादश्री व्याख्यान की पाट पर आये तब बराबर पाट के सामने अपनी बड़ी तस्वीर लगी देखी। फोटो देखकर सार्वजनिक रूप में खुलकर बोले–

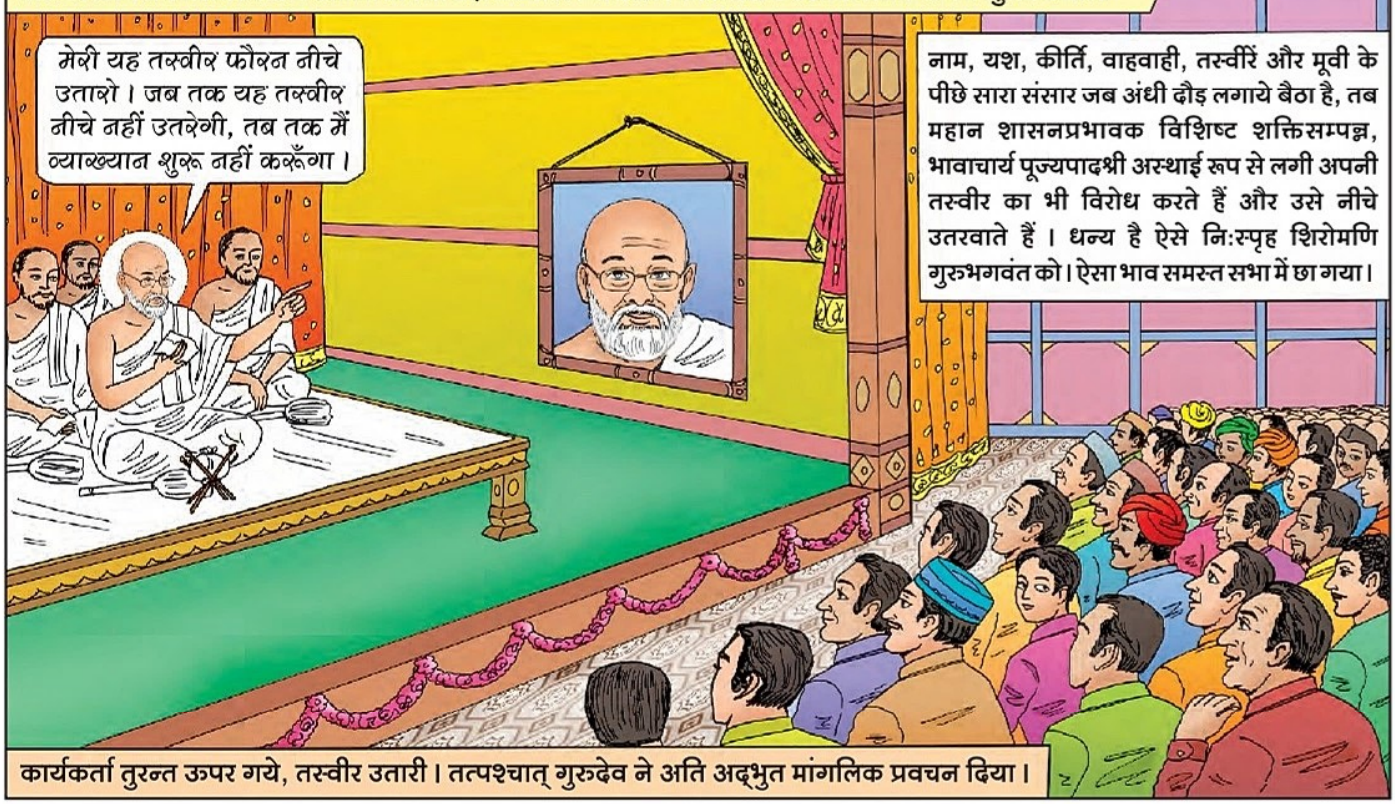

वार्षिक श्रमण ज्ञानशाला पूज्यपादश्री ने अपने शिष्यों को एक वर्ष तक स्वाध्याय और संयम की विशेष तालीम देने के लिए अपने पास बुलाया।

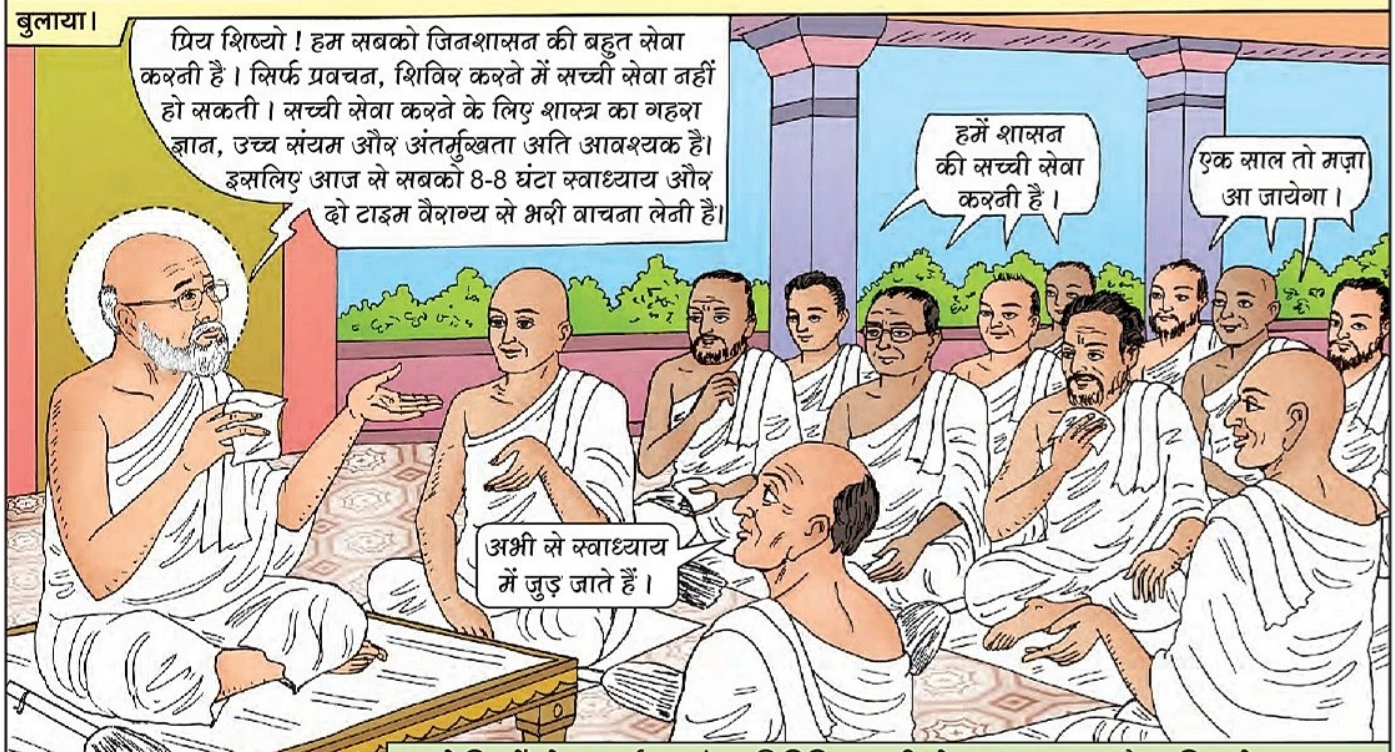

अपने शिष्यों को एक वर्ष तक संयम की विशिष्ट तालीम देकर शासन सुभट तैयार किए जो आज शासन की विशिष्ट सेवा कर रहे हैं। इसी तरह 4-4 मास के तीन विहार करवा के भी शिष्यों को संयम में दृढ़ किया।

आचार चुस्त पूज्यश्री पूज्यपादश्री तपोवन नवसारी में विराजमान थे। श्रावक ललितभाई पास में बैठे थे। अचानक फोन आया–

आचार्य धर्मेन्द्र को राष्ट्र की किसी समस्या को लेकर पूज्यपादश्री से अंगत काम था।

आचार चुस्त पूज्यपादश्री ने ललितभाई के द्वारा उन्हें कहलवाया–

आचार्य धर्मेन्द्र ने भारी आग्रह किया।

सात लाख हिन्दु संन्यासियों के मुखिया (President)।

बुन्देलखण्ड में अकाल के लिए राहत फण्ड ई.स. 2008 में उत्तर प्रदेश के बुन्देलखण्ड में भयंकर दुर्भिक्ष पड़ा। दुर्भिक्ष के तीन वर्ष में 3 से 4 लाख पशुओं की मृत्यु हुई। मनुष्य घास से बनी रोटी खाकर अपना जीवन बचा रहा था। कई बहनों के पास पहनने के लिये वस्त्र भी नहीं थे।

जब यह सारी हकीकत पूज्यश्री के ध्यान में आयी, तब मुम्बई में पूज्यपादश्री की पावन निश्रा में दीक्षा-प्रसंग का समारोह चल रहा था। उसमें पूज्यपादश्री के ''गुरुपूजन'' की बोली लगी हुई थी। फौरन पूज्यपादश्री ने गुरुपूजन का चढ़ावा रोकते हुए कहा–

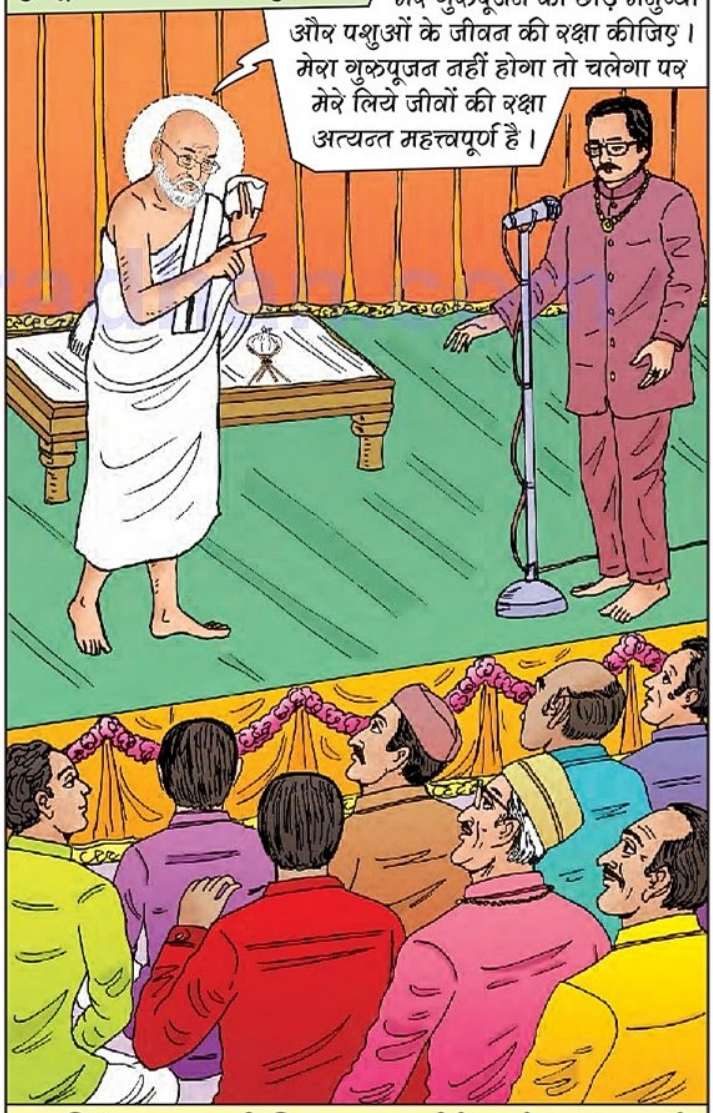

पुण्यनिधान पूज्यपादश्री की परमपावनकारी प्रेरणा से अकाल राहत के लिये लाखों रुपयों का फण्ड हुआ। उसके बाद ही गुरुपूजन का चढ़ावा आगे बढ़ा।

राहतकार्य हेतु सवा करोड़ रुपये का फण्ड एकत्रित हुआ। पूज्यपादश्री के युवा कार्यकर्ताओं ने कई दिनों तक वहाँ रहकर गरीबों में गेहूँ आदि का वितरण किया, कत्लखाने जा रहे पशुओं को बचाया। पशुओं के लिए चारा-पानी की व्यवस्था की।

दिगम्बर सम्प्रदाय के आचार्य विद्यासागरजी उस क्षेत्र में विचरण कर रहे थे। उन्होंने वहाँ कार्यरत युवाओं से कहा–

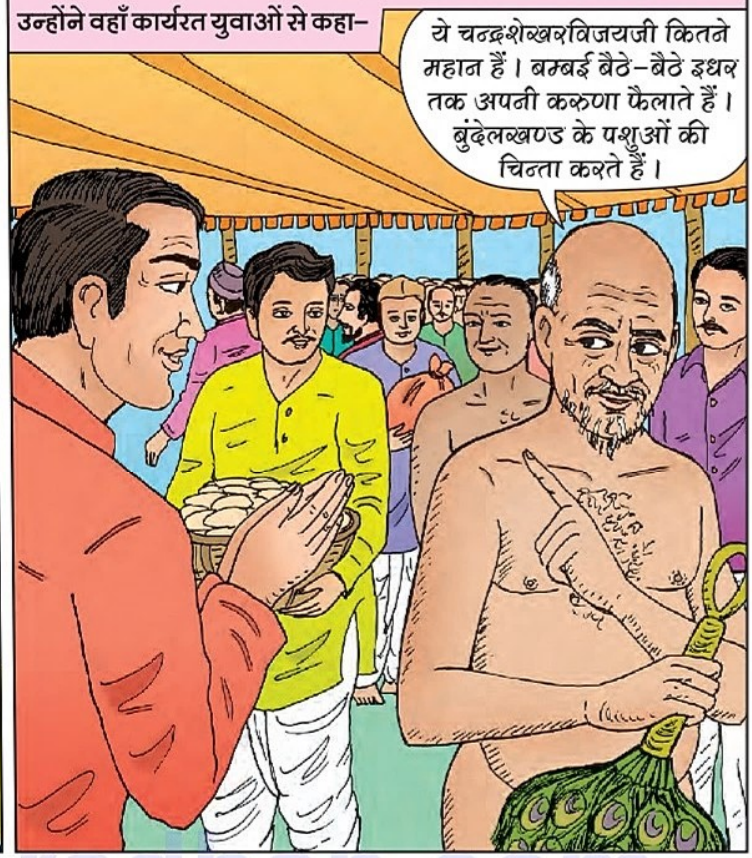

देवनार कत्लखाने के आधुनिकीकरण का विरोध, ई.स. 2008

माँस का निर्यात करने हेतु 125 करोड़ के खर्चे से अल्ट्रामोर्डन मशीनरी द्वारा देवनार के कत्लखाने का आधुनिकीकरण करने का मुम्बई महानगरपालिका ने निर्णय किया। यह जानकर पूज्यपादश्री काँप उठे।

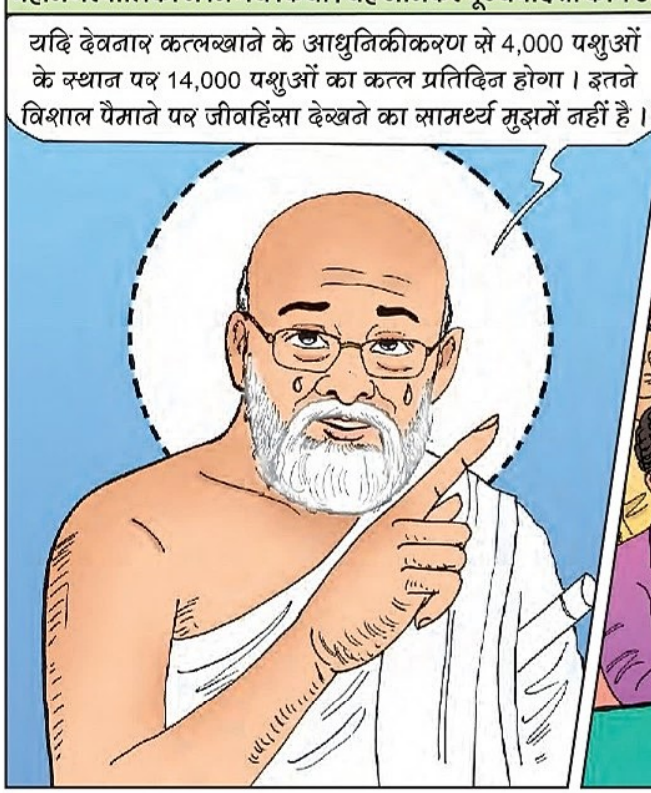

देवनार कत्लखाने से माँस का निर्यात और उसके आधुनिकीकरण के विरुद्ध पूज्यपादश्री ने विराट आंदोलन जगाया। उन्होंने विशाल सभा को सम्बोधित करते हुए कहा–

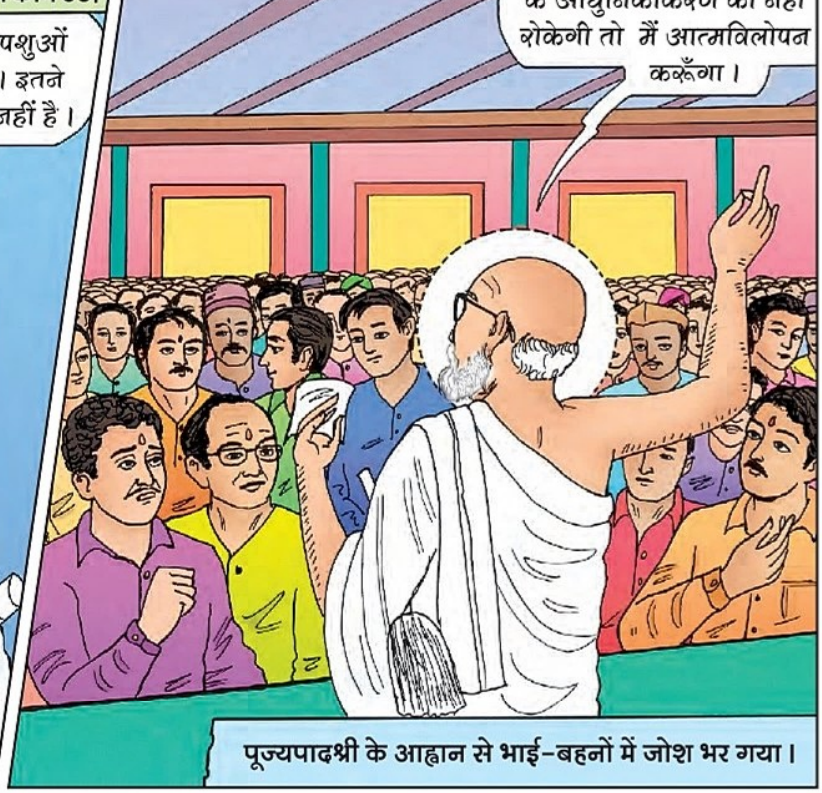

पूज्यपादश्री के आह्वान से भाई-बहनों में जोश भर गया।

15 अगस्त को अनेक आचार्य भगवंतों की पावन निश्रा में विश्व हिन्दू परिषद के आचार्य धर्मेन्द्र, रघुनाथजी आदि अजैन संत और अनेकों नगरसेवकों की उपस्थिति में सभा का आयोजन हुआ। पूज्यपादश्री ने महानगरपालिका के इस घातकी निर्णय के खिलाफ भारी आक्रोश व्यक्त किया।

लोगों ने अपना विरोध प्रकट करने के लिए इस तरह के एक लाख SMS किये।

पूज्यपादश्री के विराट पुण्यबल से माँसाहारी मराठाओं के विरुद्ध असंभव माने जाने वाले कार्य में केवल 15 दिन में ज्वलंत विजय प्राप्त हुई। 17 अगस्त की पार्ला की विरोध सभा में ही शिवसेना के कार्यकारी अध्यक्ष उद्धव ठाकरे की ओर से सुभाष देसाई ने घोषित किया–

प्रतिदिन नये 10 हजार पशुओं को अभयदान दिये जाने के आनन्द ने पूज्यपादश्री का हृदय प्रसन्नता से भर दिया।

75वें वर्ष में भी पूज्यपादश्री के दृढ़ संकल्प और विशिष्ट ऊर्जाशक्ति को देखकर उस मौके पर सबने मिलकर पूज्यपादश्री को ''ऊर्जापुरुष'' के रूप में नवाजित किया।

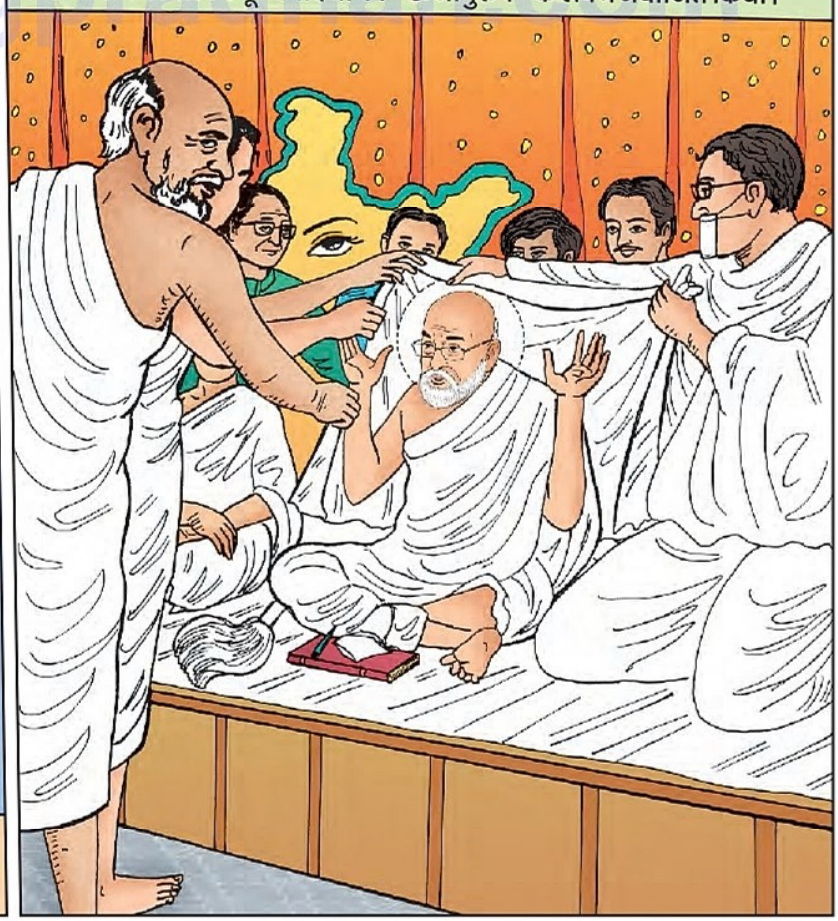

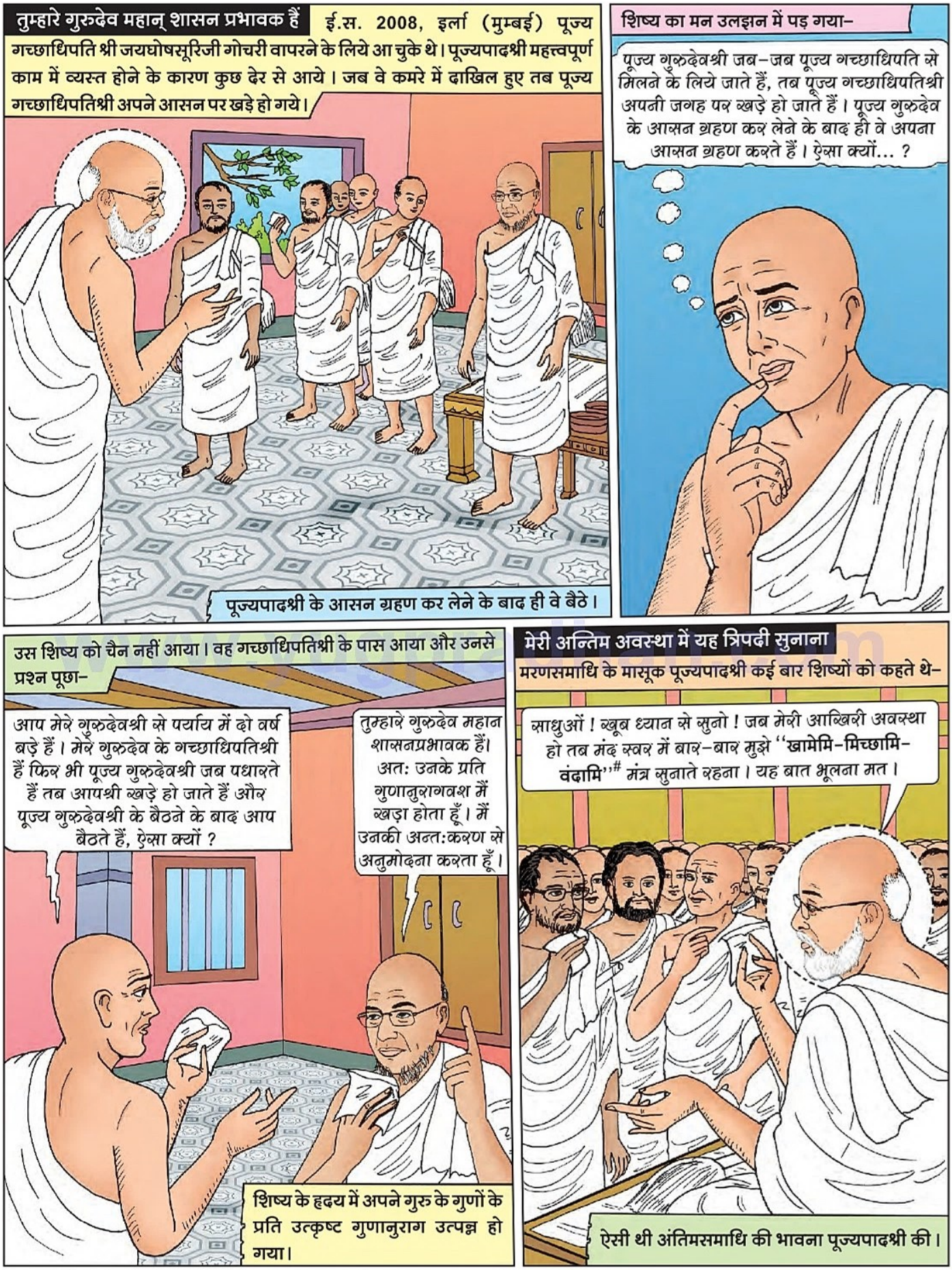

खामेमि अर्थात् "खामेमि सव्व–जीवे, सव्वे जीवा खमंतु मे। मित्ती मे सव्वभुएसू, वेरं मज्झ न केणई।"
मिच्छामि अर्थात् "ओ अरिहंत ! मिच्छामि दुक्कडं।" वंदामि अर्थात् "वंदामि जिणे चउवीसं।"

अच्छा तो लगेगा ही बरसों से आत्मसात् की हुई यह त्रिपदी की धुन स्वास्थ्य बिगड़ा तब शिष्यगण रोज 3-4 बार सुनाने लगे। एक बार शिष्य ने पूछा–

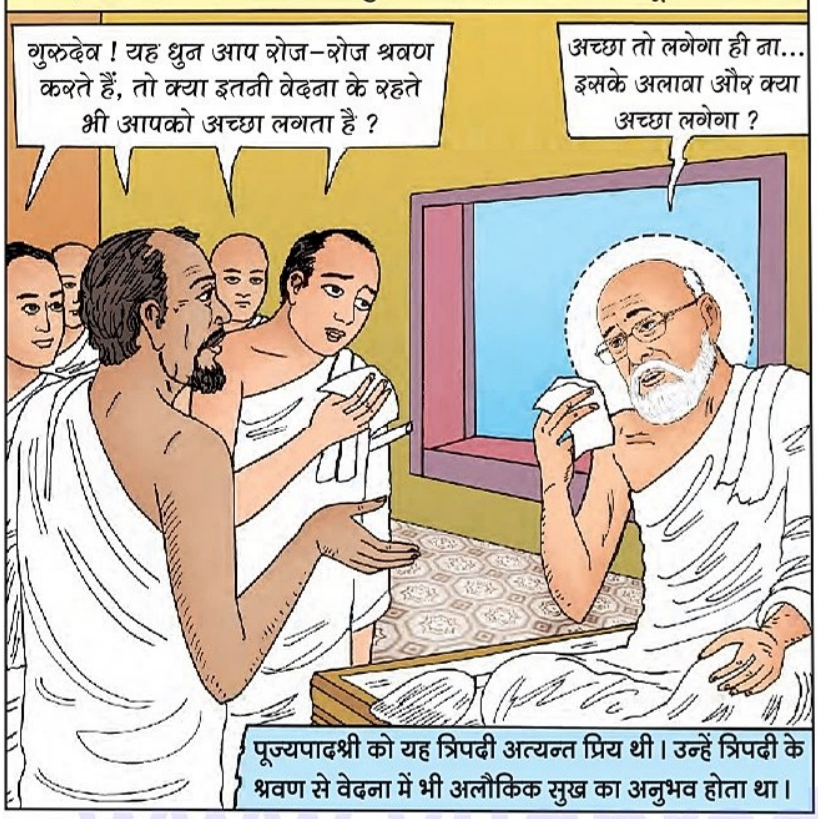

पूज्यपादश्री को यह त्रिपदी अत्यन्त प्रिय थी। उन्हें त्रिपदी के श्रवण से वेदना में भी अलौकिक सुख का अनुभव होता था।

जीवन के अंतिम शब्द जीवन के अंतिम छह महीने पूज्यपादश्री लगभग मौन थे। कालधर्म के दस दिन पहले जीवन के तीन अंतिम शब्द बोले–

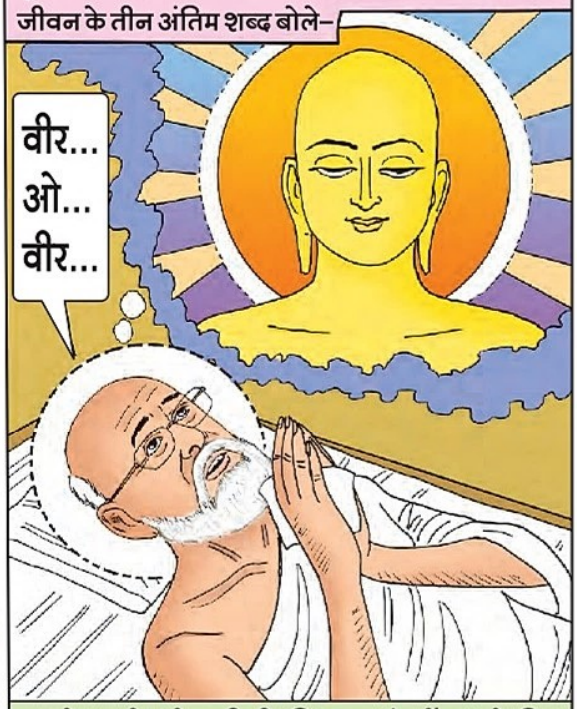

अपने गुरुदेव प्रेमसूरिजी की तरह अंत में अपने प्रिय भगवान महावीर को याद किया। फिर कभी शब्ददेह से प्रकट नहीं हुए।

अंतिम चार महीनों में उन्होंने अपने शरीर का राग भी छोड़ दिया। चाहे जितने इंजेक्शन, इंसुलिन और ब्लड टेस्ट की सुईयाँ उनके शरीर में उतारीं, उन्होंने आह तक नहीं की या प्रतिकार तक नहीं किया। उन्होंने शरीर और आत्मा का भेद ज्ञान आत्मसात् करके आचरण में उतार लिया था।

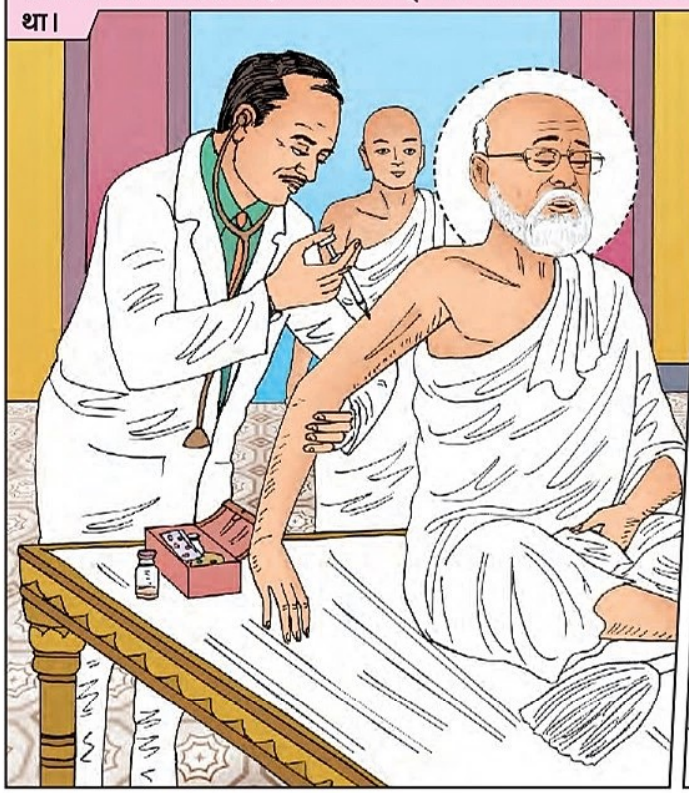

अंतिम पलों का आत्मवैभव वि.सं. 2067 की श्रावण सुदी 10 का दिवस। आंबावाड़ी (अहमदाबाद) उपाश्रय में सुबह 8.00 बजे स्वास्थ्य ज्यादा बिगड़ा। सतर्क शिष्यवृंद आत्मिक उपचारों में जुट गया। संथारा पोरिसी अर्थ के साथ सुनाना शुरू किया।

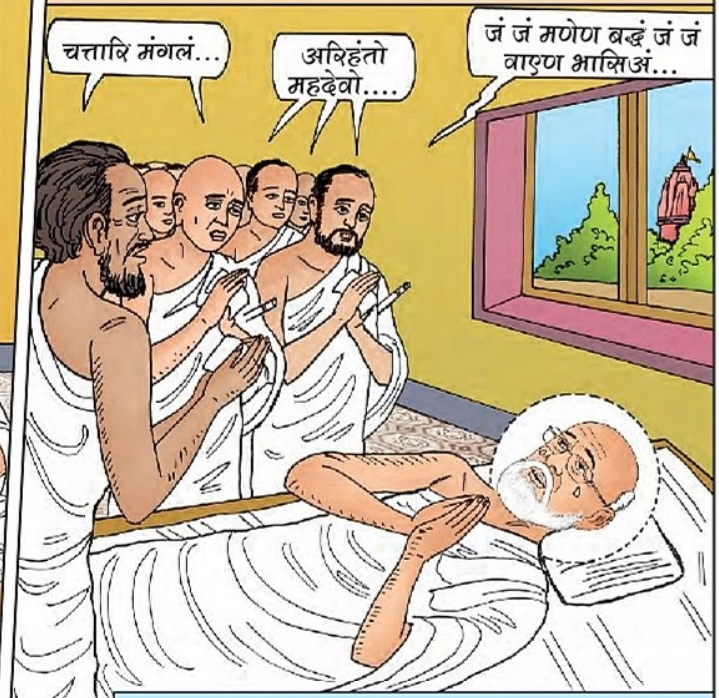

संथारा पोरिसी सुनते–सुनते आँख से अश्रु बिंदु टपक पड़े।

पंच महाव्रत उच्चारण, मिच्छामि दुक्कडं की धुन, चतु:शरण, दुष्कृत गर्हा, सुकृत अनुमोदना, सागारिक अनशन विधि आदि आराधना जोर-शोर से शुरू हुई।

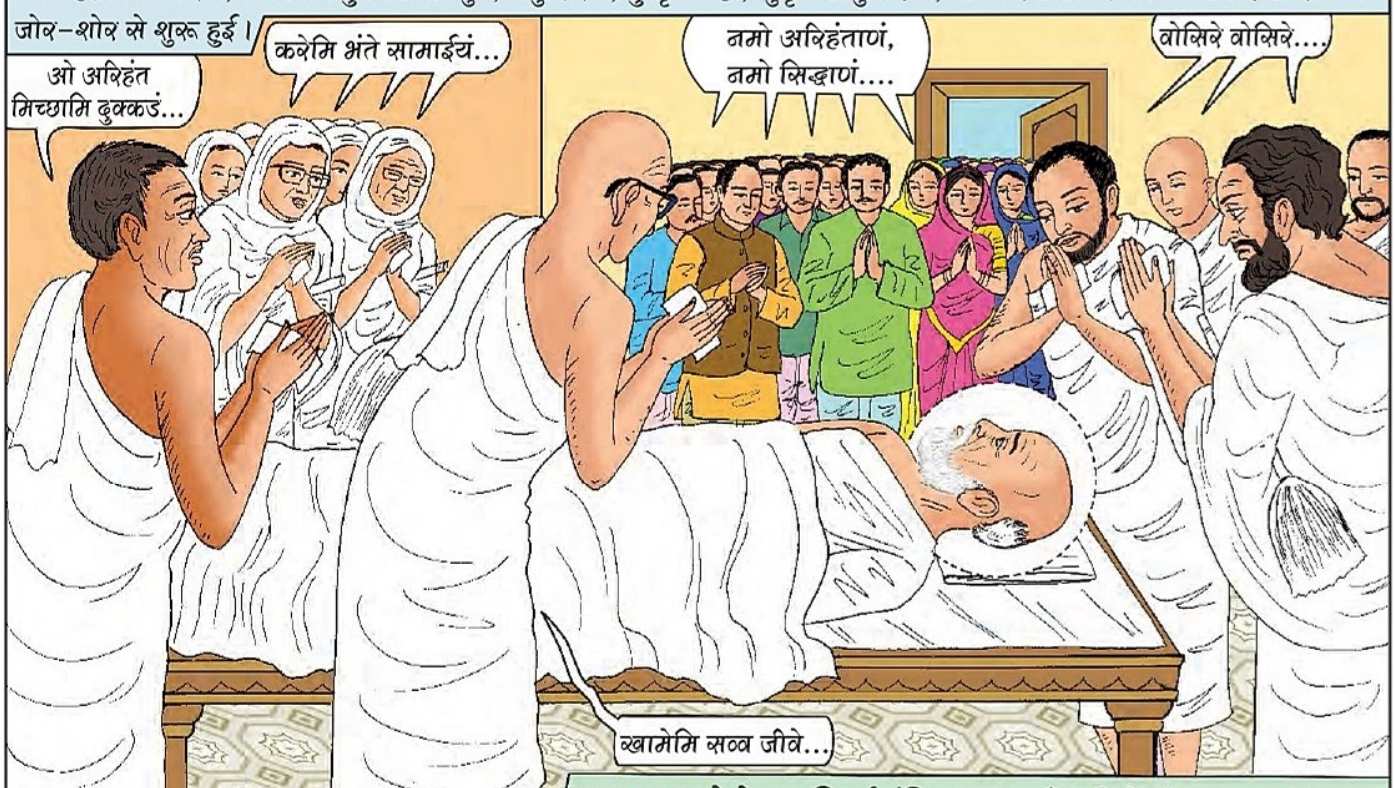

सुबह 8.30 बजे से शुरू की गई अंतिम आराधनाएँ आखिरी साँस तक चलती ही रहीं।

दोपहर 12.42 पर संघ के आधार, अनेकों के राहबर पूज्यपादश्री ने बिना किसी वेदना मुख से आखरी साँस छोड़कर उत्कृष्ट समाधिपूर्वक स्वर्गारोहण किया। मृत्यु के क्षणों में पूज्यश्री की आँखें खुली थीं। ऐसा लगता था, जैसे पूज्यपादश्री ऊपर लगाए हुए शत्रुंजय गिरिराज के या सिद्धशिला के ध्यान में तल्लीन थे। पूज्यपादश्री के देहांत के पश्चात् तुरन्त ही बारिश शुरू हो गई।

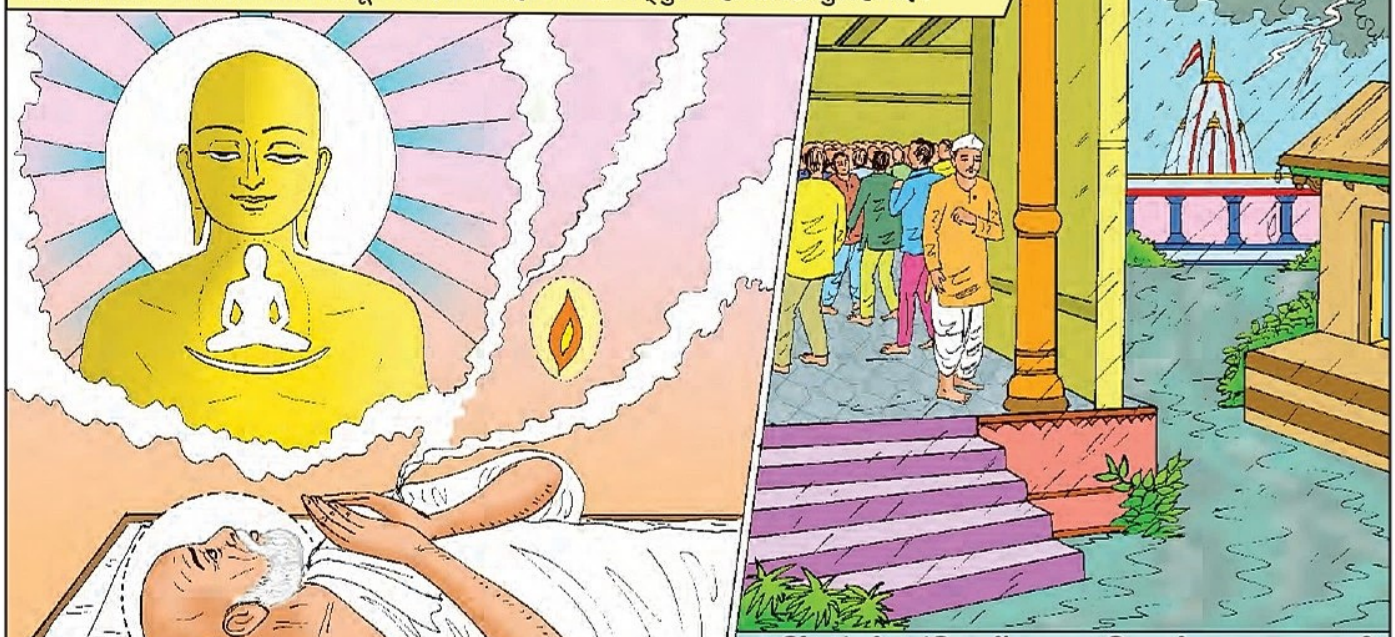

चतुर्विध संघ के सांनिध्य में नवकार की धुन के साथ पूज्यपादश्री का समाधिपूर्ण कालधर्म हुआ।

ऐसा प्रतीत हो रहा था मानो जिस करुणावतार ने खिचड़ी घर, हजारों व्याख्यान, सैंकड़ों शिविरों, भव आलोचनाएँ, तपोवन आदि के द्वारा जीवन के अंत तक तो अनेकों को शाता और सच्चा सुख प्रदान किया ही है। मृत्यु के बाद भी उस आत्मा ने देवलोक में जाकर एक महीने से गरमी से त्रस्त इस गुजरात की प्रजा को 21 दिन तक बारिश बरसाकर शाता दी है।

दसमी हुई वसमी पूज्यपादश्री के कालधर्म की प्राप्ति के समाचार वायुगति से समग्र विश्व में फैल गये। चारों ओर शोकार्त्त-भाव फैल गया। कालधर्म से सिर्फ आकाश नहीं रो रहा था, किन्तु लाखों आँखें भी रो रही थीं। शिष्यगण निराधार हो जाने की कल्पना से टूट गया था। कालधर्म के बाद मध्याह्न वेला में पूज्यपादश्री के पवित्र देह को दर्शनार्थ रखा गया। चींटियाँ जब घर बदलें तब जैसे चींटियों का ढेर नजर आता है, वैसे ही भारतभर से भक्तगणों का समन्दर दर्शनार्थ उमड़ पड़ा। पार्थिव देह के दर्शन के लिए तत्कालीन गुजरात के मुख्यमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी (भारत के वर्तमान प्रधानमंत्री) आदि राजनेता आए थे।

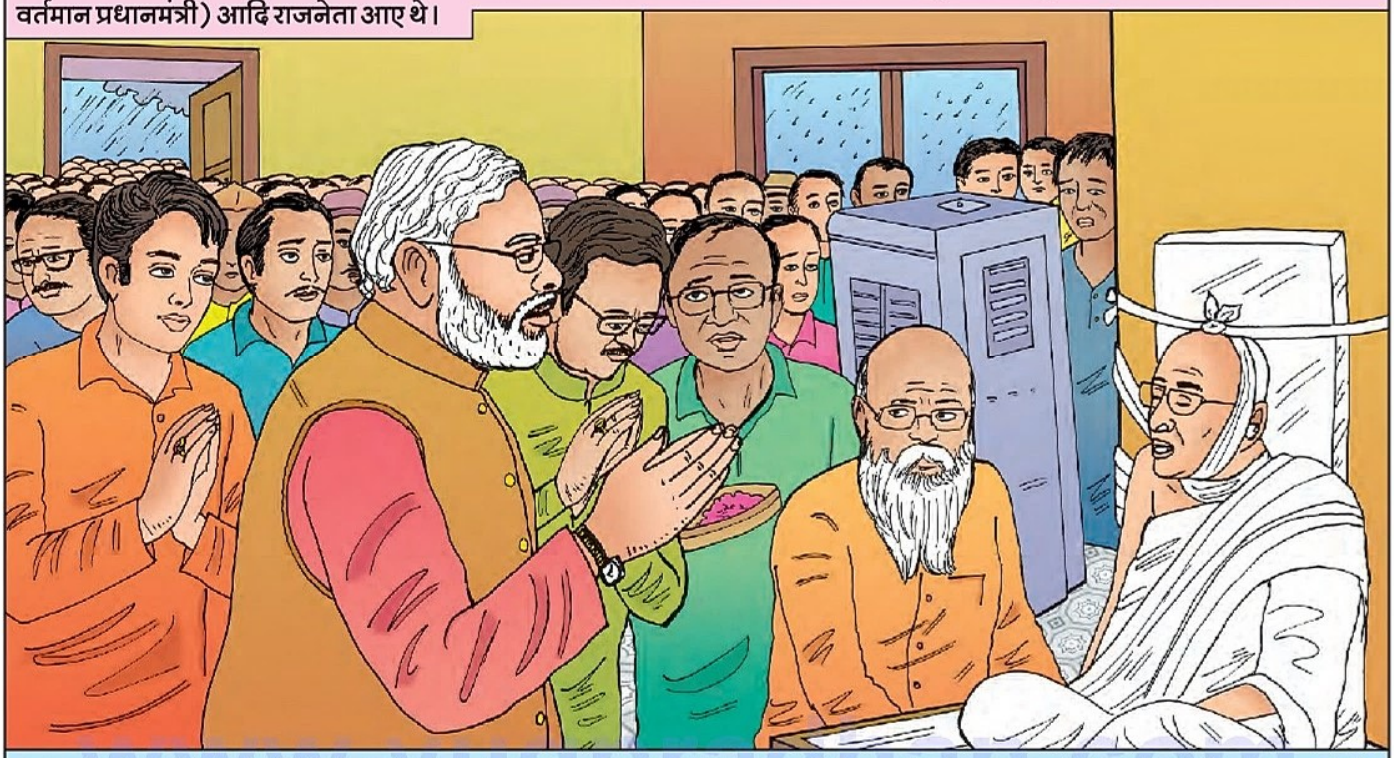

सम्पूर्ण भारतवर्ष से दर्शनार्थियों के आने का क्रम चलता रहा। लगभग चार लाख भक्तों ने एक दिन में पूज्यपादश्री के दर्शन किये। जीवदया प्रेमी पूज्यपादश्री को श्रद्धांजलि अर्पण करने हेतु नरेन्द्र मोदी ने पालखी के दिन गुजरात के सभी कत्लखाने बंद रखवाए।

भव्य पालखी यात्रा श्रावण शुक्ला, एकादशी, प्रात: 9.00 बजे, पूज्यपादश्री के पावन देह की नौ शिखरी पालखी में पधरावनी की गई। ठीक 9.30 बजे पालखी यात्रा शुरू हुई। बारिश रुकने का नाम नहीं ले रही थी। हजारों भक्तों की भीड़ आम्बावाड़ी उपाश्रय से ही पालखी के साथ थी। युवाशक्ति घोष कर रही थी।

लगातार वर्षा हो रही थी, फिर भी ज्यादातर युवावर्ग और आबाल-वृद्ध भक्तो के साथ पालखी यात्रा 25 किलोमीटर तक चली।

देरी होने से तय किया हुआ केशवनगर का रूट रद्द करके पालखी चीमनभाई पटेल ब्रिज से साबरमती की ओर जा रही थी। घण्टों से पवित्र देह के दर्शनाभिलाषी केशवनगर संघ के सदस्य अपने संघ से ले जाने के लिए चालु बारिश में पालखी के आगे सड़क पर लेट गए।

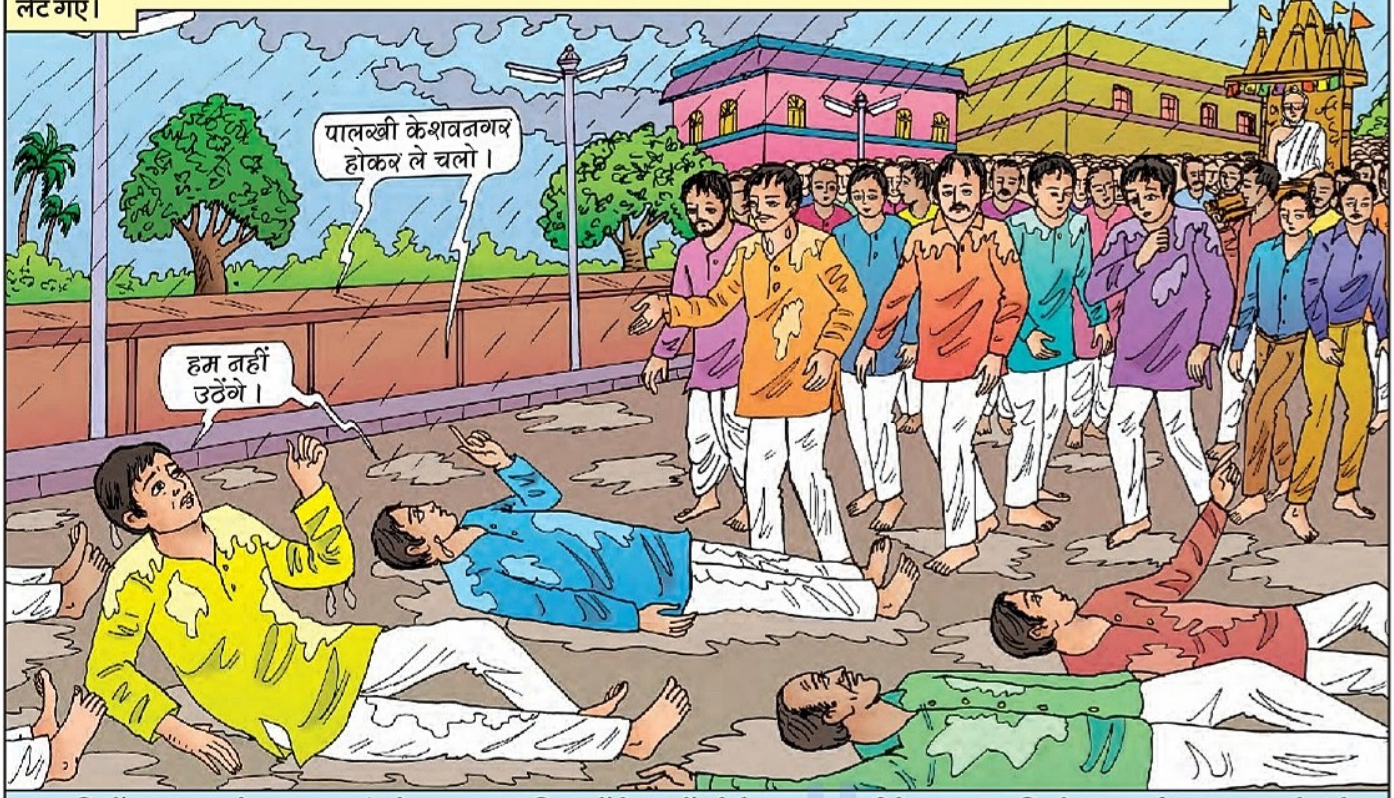

गुरुभक्ति में पागल हुए केशवनगर संघ के श्रावक-श्राविकाओं के भावों को देखकर पालखी केशवनगर की ओर मुड़ गई। सब प्रसन्न हो गये।

केशवनगर होती हुई पालखी यात्रा तपोवन पहुँची। 36 बीघा जमीन में फैला तपोवन संस्कार पीठ आज भाविकों की भीड़ के कारण छोटा लग रहा था। विरह व्यथित हृदय से पालखी चंदन की चिता पर स्थापित की गई। सभी भाविकों ने अश्रुपूरित नयनों से पूज्य गुरुदेव के अंतिम दर्शन किये। अंतिम दर्शन के लिये जैन-अजैन, साधु, संन्यासी, नेता और समाजसेवी उपस्थित थे। लौकिक रिवाज के अनुसार बेटा ही अपने पिता को अग्निदाह देता है। यही बात पूज्यपादश्री में चरितार्थ हुई। तपोवनी बालक महावीर और संदिप भाई ने गुरुमा के अग्निदाह का लाभ लिया।

अग्नि की ज्वालाओं से लिपटे जा रहे पूज्यपादश्री के पार्थिव शरीर के दर्शन से उपस्थित सबके हृदय भी विरहाग्नि की ज्वालाओं में लिपटने लगे। श्रावण शुक्ला एकादशी के सूर्यास्त के साथ-साथ एक शासनसूर्य भी सदैव के लिए अस्त हुआ। मात्र स्मरण रह गया उनके उपकारों का !! पता कहाँ खोजें !!!

युगप्रधान आचार्य सम पदवी प्रदान वि.सं. 2068, पूज्य गच्छाधिपति आचार्य श्री जयघोष सूरि जी म. साहेब ने सूरत में पूज्यपादश्री की गुरु-पादुका की प्रतिष्ठा के अवसर पर गुण सम्राट् पूज्यपादश्री के गुण वैभव का निरूपण करते हुए कहा-

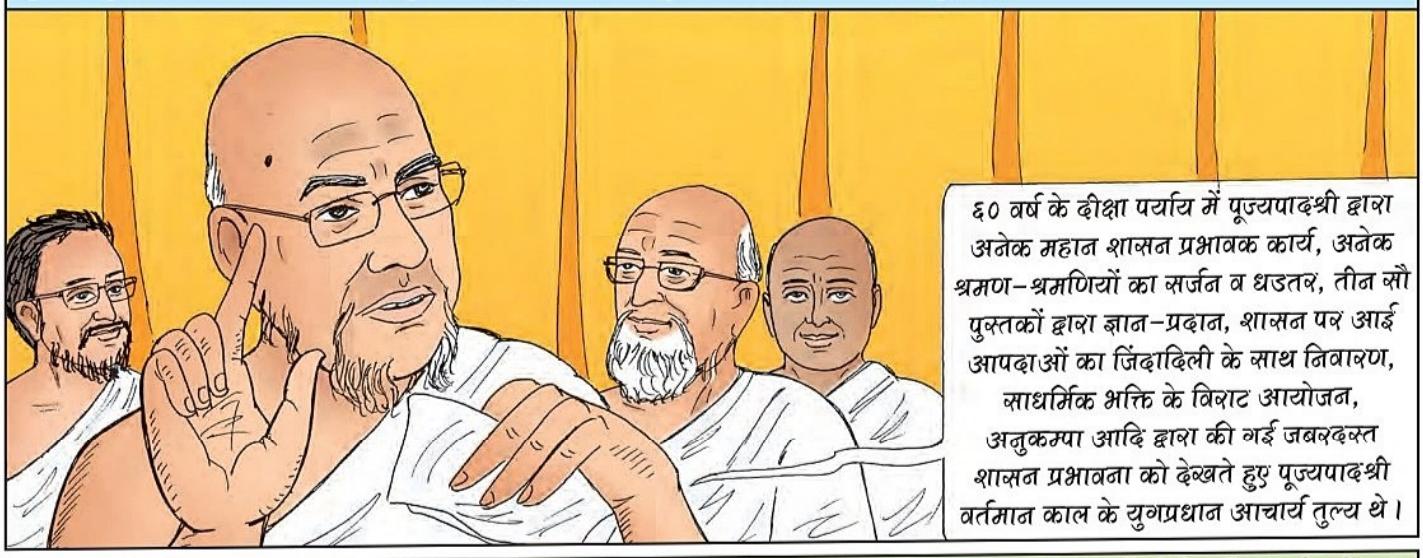

गुणानुवाद के बाद पूज्य गच्छाधिपति ने सकल संघ के समक्ष पूज्यपादश्री को युगप्रधान आचार्य तुल्य के रूप में घोषित किया और घोषणा की-

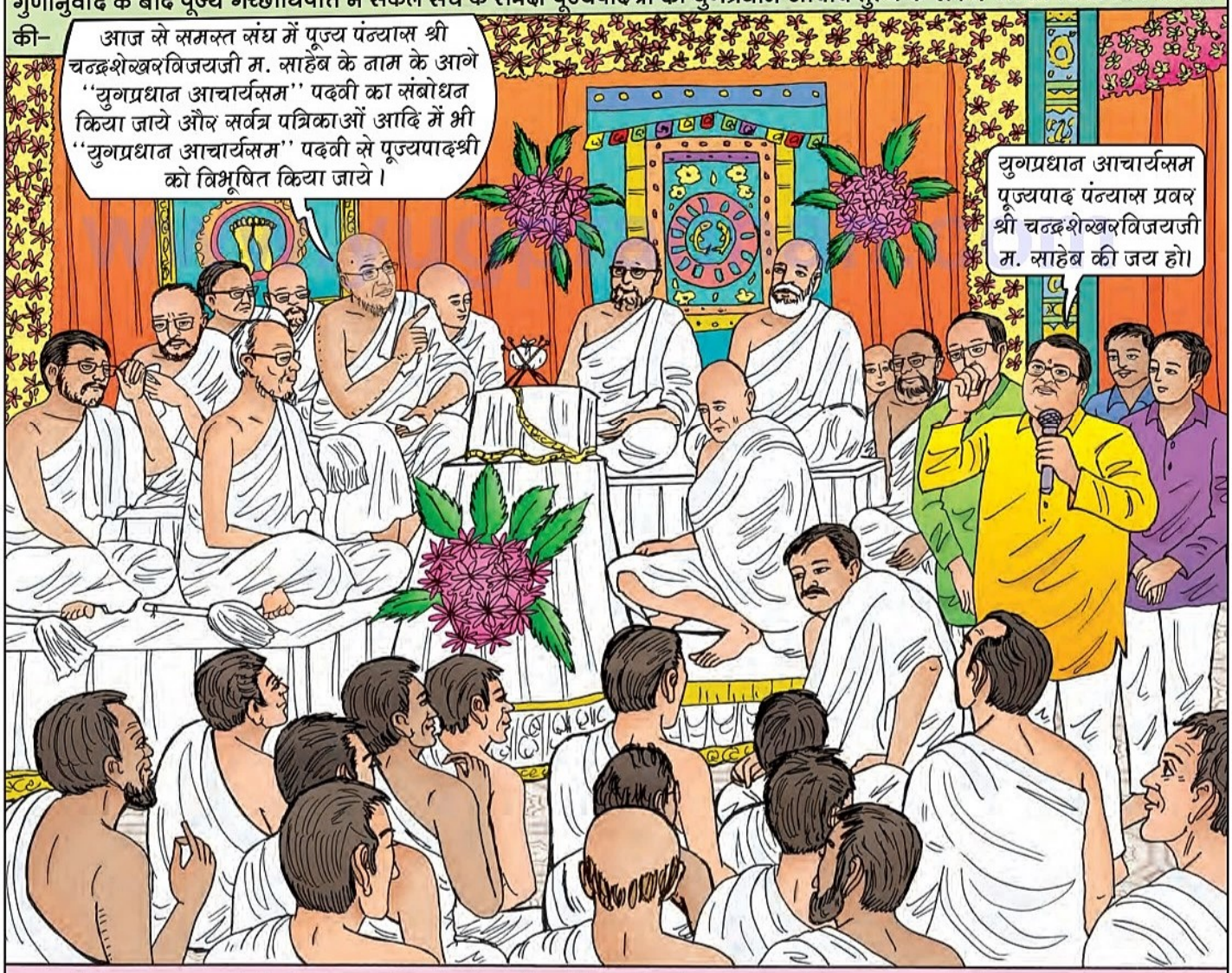

गगनभेदी जय-जयारव ने गोपीपुरा-सूरत के नभोमण्डल को भर दिया। जिसने शासन का गौरव बढ़ाकर अपने अंत समय तक आचार्य पदवी को स्वीकार नहीं किया, उनके देवलोक गमन के बाद सकल संघ ने उन्हें युगप्रधान आचार्यसम पदवी प्रदान कर आभार प्रकट किया।

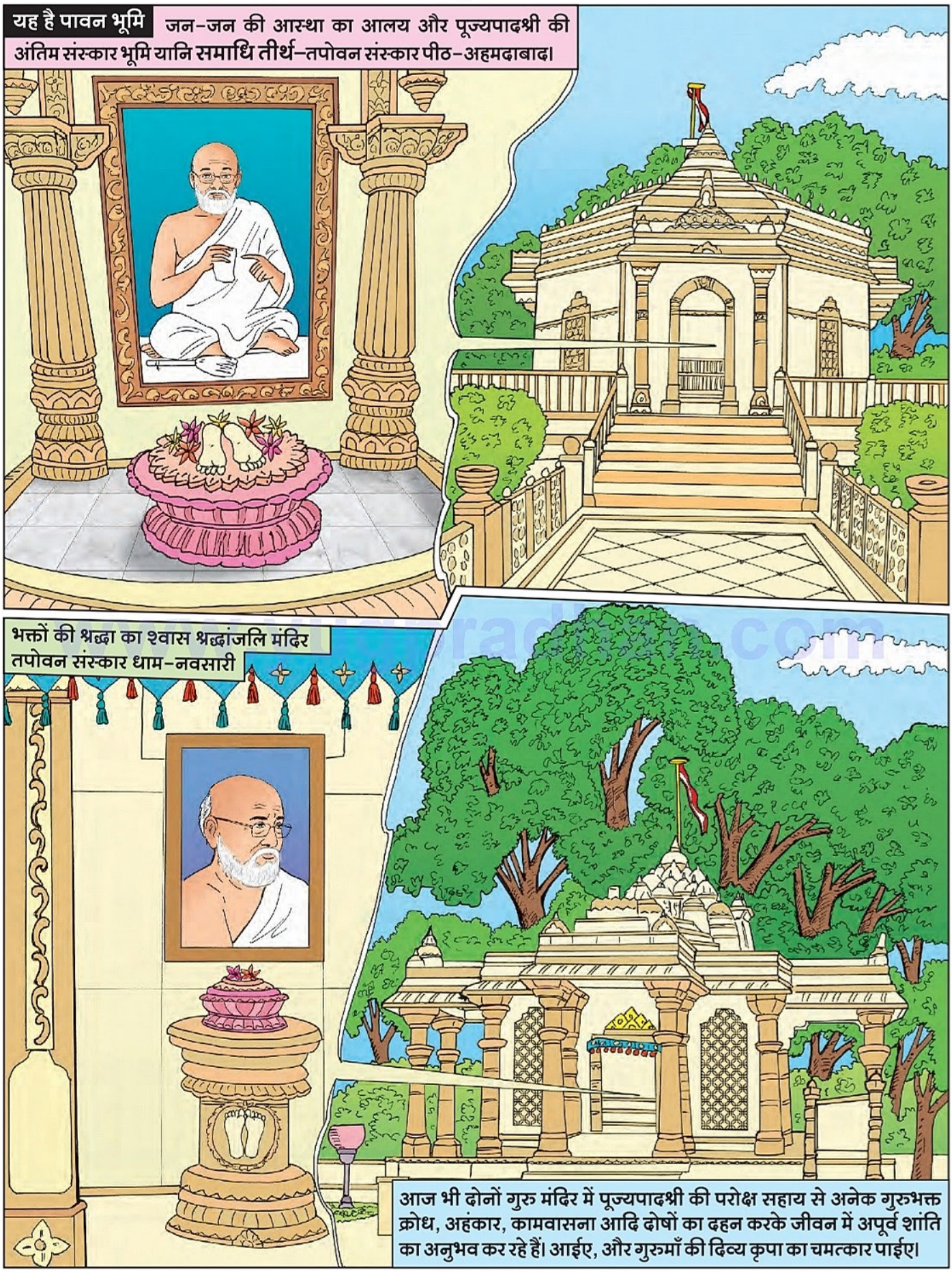
यह है पावन भूमि
जन-जन की आस्था का आलय और पूज्यपादश्री की अंतिम संस्कार भूमि यानि समाधि तीर्थ-तपोवन संस्कार पीठ-अहमदाबाद।
भक्तों की श्रद्धा का श्वास श्रद्धांजलि मंदिर तपोवन संस्कार धाम-नवसारी
आज भी दोनों गुरु मंदिर में पूज्यपादश्री की परोक्ष सहाय से अनेक गुरुभक्त क्रोध, अहंकार, कामवासना आदि दोषों का दहन करके जीवन में अपूर्व शांति का अनुभव कर रहे हैं। आईए, और गुरुमाँ की दिव्य कृपा का चमत्कार पाईए।

युगप्रधान आचार्यसम पूज्यपाद **पं. श्री चन्द्रशेखर विजयजी म. सा.** की अनुपम शासन सेवा यानि

TAPOVAN

Educating mind, body and soul

शेठ श्री कांतिलाल लल्लुभाई जवेरी
SANSKARDHAM

NAVSARI
Contact : Bhavin Shah : 9377770006
Manager : 9328381988
CBSE Board (Std. 5th to 10th)
Email : tapovan_navsari@yahoo.com
Website : www.navsaritapovan.org

शेठ श्री महेन्द्रभाई त्रिकमलाल शाह
SANSKARPITH

AHMEDABAD
Contact : 7433802178, 9723887255
Std. 6th to 12th (Guj. Medium) GSEB Board
Std. 5th to 12th (Eng. Medium) GSEB Board
Day School : KG to Std. 10th
Website : www.tapovansanskarpith.org

Cultural Programme

E-Learning Classrooms

Skating

Vocal

Bhojanshala

Daily Samayik Vachna & Sutra Gatha

Cricket

Karate

Dholak

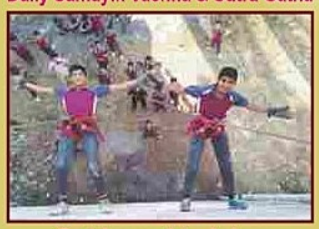
Out bound training

Mid Brain Activation

Prabhu Puja

सुविधाएँ

- 30 एकड़ का **Campus**
- उचित हवा तथा प्रकाशयुक्त **Rooms**
- प्रत्येक विद्यार्थी का अलग **Cupboard** एवं **Desk**
- स्वादिष्ट एवं पौष्टिक भोजन
- तपोवन की ही गौशाला की गीर गाय का दूध
- सर्व सुविधायुक्त चिकित्सालय :
- **Daily Doctor's Visit**
- **Intranet Facility**
- **Medical Camp** का **Regular** आयोजन
- ज्ञानपूर्ण चुनिंदा **TV Program Show**

विशेषताएँ

- Central Board of Education (CBSE)
- 'Pearson' e-learning Board
- 'Computer Masti' Language Board
- School Library having 2000+ Books
- Separate Labs for Physics, Biology and Chemistry
- Sports Coaching for Cricket, Football, Volley-ball, Karate and Sketing
- Music Learning - Vocal, Tabla, Drum, Dholak, Harmonium and Flute
- Out-bound Training
- Mid-brain Activation
- DMIT Report
- Intranet Facility at School and Gurukul
- Training of Stage Programmes
- Extra Activities - Table Tennis, Carrom, Chess, Cycling, Art & Craft, Exercises and lot more...

गुरुभक्त परिवार

हमारे परिवार के परम उपकारी युगप्रधान आचार्यसम परम पूज्य पंन्यास प्रवर

श्री चन्द्रशेखरविजय जी म. साहेब

तथा परम पूज्य साध्वी **श्री महानंदाश्रीजी** की हमारे परिवार पर सदा कृपा बरसती रहे।

स्व. शेठश्री जीवतलाल प्रतापसीभाई-जासुदबेन जीवतलालभाई
हस्ते:-धारीणी करणभाई चोपरा, धीमंत नलीनकांत, हितेन नलीनकांत दलाल-मुंबई

स्व. शेठश्री कांतिलाल प्रतापसीभाई-सुभद्राबेन कांतिलाल
स्व. प्रफुलभाई कांतिलाल दलाल, स्व. नीरूबेन आर. शाह
हस्ते-वर्षाबेन प्रफुलभाई दलाल-मुंबई

वर्धमान संस्कार धाम,
संघाणी केन्द्र, घाटकोपर, मुंबई

स्व. प्रेमीलाबेन हर्षदभाई शाह हर्षदभाई मगनलाल शाह
हस्ते-समीर हर्षदभाई, सोनाली समीरभाई
मणीनगर, अमदाबाद

स्व. कंचनबेन बाबुलाल मोतीलाल शाह,
हस्ते-विक्रमभाई बाबुभाई शाह-अमदाबाद

वर्धमान संस्कार धाम, मुंबई

स्व. सुशीलाबेन सूर्यकांतभाई रतीलाल महेता
सूर्यकांतभाई महेता I.A.S. निवृत्त कलेक्टर-गांधीनगर

केसरबेन मूलचंद मालाणी
हस्ते-लीलावतीबेन चीनुभाई-नवसारी

स्व. पद्माबेन महेन्द्रभाई त्रिकमलाल शाह परिवार
हस्ते-अजयभाई-कोकिलाबेन-अमदाबाद

श्री जैनम् युवा ग्रुप - मुलुन्ड
श्री जैनम् युवा ग्रुप - नवजीवन
श्री जैनम् युवा ग्रुप - पूना

मगनलाल कपूरचन्द्र जी
रोशनलाल, पीयूष कुमार , मन कुमार
धार परमार परिवार, बरलुट-बल्लारि

पूज्य पंन्यास राजरक्षितविजय जी तथा
मुनि नयरक्षितविजय जी की प्रेरणा से

www.yugpradhan.com